कामायनी

छन्दानुवाद

विजयनाथ झा

कामायनी

महाकाव्य–जय शंकर प्रसाद

मैथिली छंदानुवाद

विजयनाथ झा

Kamayanee Mahakavya

Translated by

Vijaynath Jha

© विजयनाथ झा

विक्रम प्रकाशन : कृष्ण नगर दिल्ली द्वारा प्रकाशित कामायनी से अनूदित।

अनुवादक : **विजयनाथ झा**
3MF 3/42
बहादुरपुर हाउसिंग कॉलनी
भूतनाथ रोड, पटना-26
मो. 9308430870

प्रकाशन वर्ष : 2020

मूल्य : 250/- (दू सय पचास टाका)

अक्षरांकन : शिव कुमार ठाकुर

मुद्रक : विशाल प्रिन्ट केयर
लंगर टोली, पटना-4

प्राप्ति स्थान : 1. **विजयनाथ झा**
3MF 3/42
बहादुरपुर हाउसिंग कॉलनी
भूतनाथ रोड, पटना-26
मो. 9308430870
2. शिव कुमार ठाकुर
पटना मो. 9905281145, 9262215128

सम्मति

महाकवि विजयनाथ झा हिन्दी आ मैथिली साहित्यक एकटा प्रमुख हस्ताक्षर छथि। ओ अपन कृतित्वक मादे कतौ अपन परिचयक आकांक्षी नहि छथि। एकांत साहित्य साधनाक पर्याय बनल ओ मैथिली महाकाव्य 'कन्दर्प काननक' सृजनक पश्चात जय शंकर प्रसाद कृत हिन्दी महाकाव्य 'कामायनीक' मैथिली छन्दानुवाद कय अनुवाद जगत मे एकटा पैघ रेखा खिंचलनि अछि। मैथिली साहित्य लेल ई महत्वपूर्ण अवदान सब तरहें प्रशंसा पात्र अछि। अनुवाद कार्य स्वतः दुष्कर आ जटिल काज होइछ, मुदा ओ अपन गहन अध्ययनशीलता, सुकोमल कल्पनाशीलता, भाव प्रवणता आ विषम वस्तुक समीचीन आख्या-व्याख्यामे निपुणता भरैत अपनाकेँ सफल साहित्य सर्जक सिद्ध करैत छथि। भाव पक्षक संगे कला पक्ष पर सेहो अपन ठोस पकड़ बनौने ई एहि महाकाव्यक अनुवादकेँ कुशलतापूर्वक सम्पन्न कय अपन साहित्यिक गांभीर्य आ पटुता केँ पुनः पुनः प्रमाणित कयलनि अछि।

कामायनीक प्रतिपाद्य विषय महाप्रलयक बाद नव सृष्टि सृजनक मूलाधार कथावस्तु केँ क्रमशः आगू बढ़बैत अछि। श्रद्धा (कामायनी) आ मनु महाकाव्यक प्रधान नायक-नायिका छथि। एहिमे शैव दर्शनक मीमांसा पूर्ण प्रतिष्ठा, आनन्दवाहक विश्लेषणात्मक प्रगति कामायनीमे आद्यांत गंभीरता सँ कूटि-कूटिकऽ भरल अछि। एहिमे यत्र-तत्र बौद्ध-दर्शनक प्रभाव सेहो परलक्षित भेल अछि। एहि अनुवादकार्यक समायोजनामे विजयनाथ जी सर्गबद्ध काव्य वैभवक जाहि कुशलता सँ प्रतिपादन कयने छथि ओ प्रशंसनीय अछि आ ताहि मादे अनुकरणीय सेहो। ई कहब कथमपि अनुचित नहि जे हिनकर मैथिली साहित्यशालामे विपुल शब्द भण्डार अछि जकर प्रमाण ई अपन काज सबमे दैत रहैत छथि। मैथिली शब्द संपदा संगे ई स्वाभाविक रूप सँ खेलाइत रहैत छथि जे हिनक प्रतिभाकेँ फराक सन परिचय दैत अछि। एहन सत् आ सुखद प्रयासकेँ सफलताक संगे पूरा करबाक लेल हम हृदय सँ हिनका धन्यवाद ज्ञापित करैत छी। हिनका सँ एखन बहुत किछु आशा अछि साहित्य जगतकेँ जेकरा ई यथा समय पूरा करैत रहताह से विश्वास अछि। हम पुनः पुनः हिनकर उज्ज्वल भविष्यक कामना करैत छी।

डा. सत्येन्द्र सुमन
हिन्दी डी. लिट्.
बी.डी. कालेज, पटना।

अपन उद्‌गार

साहित्य संसारक विशाद क्षेत्रमे अनुवादक परंपरा जानल-मानल विषय अछि। एकर मूल अभिप्राय संबद्ध ग्रन्थक मौलिकताकेँ आनो भाषा सबमे रूपांतरित करब अछि, जै सँ ओकर लाभ दोसरो भाषाक अध्येता वर्ग लेल सुलभ भऽ सकए। मुंशी प्रेमचन्द, शरद बाबू वा चंदा झा सन प्राणवान साहित्यसेवी सभक ढ़ेरो पोथीक अनुवाद संस्करण सँ सब क्यो परिचित छीहे। अही क्रममे आधुनिक हिन्दी साहित्यक भूर्धन्य कवि स्व. जय शंकर प्रसाद विरचित 'कामायनी' महाकाव्यक हमर ई मैथिली अनुवाद थिक। एहि अनुवाद कार्यमे हम सम्बद्ध पोथीक विविध विषय वस्तुकेँ यथाक्त भाषिक परिवर्तन करैत ओकर साहित्यिक सौष्ठवकेँ मैथिलीक सरस स्वर (लिपि) मात्र देअबाक प्रयास कयल अछि।

'कामायनी' महाकाव्यक कालजयी महीयताक मादे दू शब्द लिखैत हमरा प्रसन्नताक अनुभव भऽ रहल अछि। ज्ञातव्य अछि जे कामायनीक कथा-विन्यास पन्द्रह सर्गमे अपन यात्रा पूरा करैत अछि। चिन्ता सर्ग सँ शुरू भऽ आनन्द सर्ग धरिक विन्यस्त आख्या-व्याख्यामे जीवन तत्वक प्रबल सूचक यथा आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, निर्वेद आदि महाकाव्यक कथा विन्यास संग एकर रोचकता आ प्रांजलताकेँ क्रमशः आगां बढ़बैत अपन गांभीर्य प्रदर्शन करैत रहल अछि। तहिना जीवन चतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम आ मोक्षक प्रतिपादनमे कवि अपन विराट ज्ञान परिचय सँ पाठककेँ आद्यान्त बान्हवामे समर्थ सिद्ध भेलाह अछि।

आब कनी विषयान्तर होइत ई कहए चाहैत छी जे साहित्य अकादमी, दिल्ली बहुत पहिने एहि पोथीक अनुवाद कार्यकेँ स्व. मार्कण्डेय प्रवासीसँ करबाक प्रस्ताव देने छल। मुदा ओ अस्वीकार कऽ देलनि। कालान्तरमे कएक वरिष्ठ साहित्यकार लोकनि हमरा एहि कार्य लए प्रोत्साहित करैत रहलाह। एहिमे स्वनाम धन्य प्रो. (डा.) बासुकीनाथ

झा, डॉ इन्द्रकान्त झा, नाट्य विधाक स्थापित विदुषी डॉ प्रेमलता मिश्र, बहुभाषाविद डॉ सत्येन्द्र कु. सिंह, नवारम्भक प्रकाशक श्री अजित आदिक नाम प्रमुख छथि। हम एहि काजकेँ पूराकऽ 2012मे मैथिली एकादमी, पटनाकेँ प्रकाशनार्थ पांडुलिपि सौंपि देल। सुदीर्घ कालांतर बाद अकादमी एकरा छापबाक स्वीकृति दैत एहि पांडुलिपिकेँ वेडिंग लय डॉ बासुकीनाथ झाकेँ प्रेषित कऽ देल। ओ एकरा आद्यान्त देखि गेलाह, मुदा कोनो कारण सँ ई पोथी ओतय नहि छपि सकल आ हमरा पांडुलिपि घुरा देल गेल। वेडिंग कएल ई संग्रह हमरा लग सप्रमाण सुरक्षित अछि। उपेक्षाक दंश सँ पीड़ित ई पोथी (कामायनी अनुवाद) आब स्वतंत्र प्रकाशन सँ छपि रहल अछि। हम एतदर्थ ऋणी छी डॉ. बासुकीनाथ झाक जे एहि अनुवाद कार्यमे मार्गदर्शन दैत हमरा कृतार्थ केलनि अछि। ताहि लेल हम हुनक आभार व्यक्त करैत छी। संगे आरो शुभचिन्तक लोकनिकेँ उत्साहवर्धन धन्यवाद ज्ञापित करैत छी। हमर अनुवाद कार्यक सही मीमांसा पाठके लोकनिक हाथमे सुरक्षित अछि। हमरा विश्वास अछि एहि काजक सही मूल्यांकन होएत।

भवदीय

विजयनाथ झा

आमुख

आर्य-साहित्यमे मनुक्खक आदि पुरुष मनुक इतिहास वेद सँ लऽ पुराण आ इतिहासमे पसरल भेटैत अछि। श्रद्धा आ मनुक सहयोग सँ मानवीय विकासक कथा कें रूपकक आवरणमे, अथवा विगत कालमे मानि लेबाक तेहने प्रयत्न भेल हो जेना कि सब वैदिक इतिहासक संग निरुक्तक द्वारा कएल गेल, तथापि मन्वन्तरक अर्थात् मानवताक नवयुगीन प्रवर्त्तकक रूप मे मनुक कथा कें आर्षसभक अनुश्रुतिमे दृढ़ता सँ मानल गेल अछि। तें वैवस्वत मनु कें ऐतिहासिक पुरुषे मानब समीचीन अछि। प्राय: लोक गाथा आर इतिहासमे मिथ्या आ सत्यक व्यवधान मानल गेल अछि। परंच सत्य मिथ्या सँ बेसी विचित्र होइत अछि। आदित्य-युगीन मनुक्खक प्रत्येक समूहमे जे ज्ञानोन्मेषक अरुणोदयमे जे किछु भावपूर्ण इतिवृत्ति संगृहीत कएने छलाह, ओहि सब कें आइ गाथा किंवा पौराणिक उपाख्यान कहि कऽ फराक कऽ देल जाइत अछि—किएक तऽ ओहन चरित्र सभक संग भावनाक सेहो बीच-बीचमे संबंध सटल सन प्रतीत होइत अछि। घटनाक्रम कतौ अतिरंजित सन प्रतीत होइत अछि। तथ्य-संग्रहकारिणी तर्कबुद्धि कें एहन घटना सब मे रूपकक आरोप कऽ लेबाक सुविधा भऽ जाइत अछि। तथापि ओहू सबमे सँ किछु सत्यांश घटना सँ संबद्ध छै—से तऽ मानहि पड़त। आजुक समीप तऽ ओकर वर्तमान संस्कृति क्रमपूर्ण इतिहासे होइत अछि; तैयो ओकर इतिहासक सीमा जतए सँ प्रारम्भ होइत अछि ठीक तकरे पहिने सामूहिक चेतनाक स्थिर आ गहीर रंगक रेखा सँ बीतल आर पूर्ववर्ती गप्पक उल्लेख स्मृति-पट पर अमिट रहैत अछि, किन्तु किछु अतिरंजित सन ओ घटना सब आइ वैचित्र्य पूर्ण बुझना जाइत अछि। संभवत: अही लेल हमरा अपन प्राचीन श्रुतिसमूह कें निरुक्तक मादे अर्थ करए पड़ल जाहि सँ ओहि अर्थ सभक अपन वर्तमान रुचिक संगे सामंजस्य कयल जाय।

जौं श्रद्धा आ मनु अर्थात् मननक सहयोग सँ मानवताक विकास रूपक अछि, तैयो ओ बड़ भावपूर्ण आ श्लाघ्य छैक। ई मनुष्यताक

मनोवैज्ञानिक इतिहास बनबा मे समर्थ भऽ सकैत अछि। आइ हम एहि सत्यक अर्थ घटना सँ जोड़ि लैत छी। तथापि ओहि सभक तिथिक्रम मात्र सँ संतुष्ट नहि भऽ मनोवैज्ञानिक अन्वेषणक मादे इतिहासक घटनाक अंदर मे किछु देखय चाहैत छी। ओकर मूल मे की रहस्य छैक? आत्माक अनुभूति! हँ ओहि भावकेर रूप-ग्रहण करबाक चेष्टा सत्य वा घटना बनि कऽ प्रत्यक्ष होइत अछि। पुनः ओ सत्य घटना सब स्थूल आ क्षणिक भेल मिथ्या आ अभावमे बदलि जाइत अछि। परंच सूक्ष्म अनुभूति अथवा भाव, चिरंतन सत्यक रूप मे प्रतिष्ठित रहैत अछि, जकरा द्वारा युग-युगक पुरुषक संगे ओकर पुरुषार्थोकेर अभिव्यक्ति होइत रहैत अछि।

जल-प्लावन भारतीय इतिहासमे एकटा एहन प्राचीन घटना छैक, जे मनु कें देवता सब सँ विलक्षण मनुक्खक एकटा भिन्न संस्कृति स्थापित करबाक अवसर देलक। से इतिहासे छै। **'मानवे वै प्रातः'** इत्यादि सँ एहि घटनाक उल्लेख शतपथ ब्राह्मणक आठम अध्याय मे भेटैत अछि। देवता सभक उच्छृंखल स्वभाव, निर्बाध आत्मतुष्टिमे अंतिम अध्याय प्रतीत भेल आ मानवीय भाव अर्थात् श्रद्धा आ मननक समन्वय भऽ प्राणी लोकनि कें कयटा नव युगक सूचना प्राप्त भेल। एहि मन्वन्तरक प्रवर्तक भेलाह मनु। मनु भारतीय इतिहासक आदि पुरुष छथि। राम, कृष्ण आ बुद्ध हिनके वंशज थिकाह। शतपथ ब्राह्मणमे हुनका श्रद्धादेव कहल गेल अछि, **'श्रद्धादेवो वै मनुः'** (का.1 प्र.1) भागवत मे अही वैवस्वत मनु आ श्रद्धा सँ मानवीय सृष्टिक आरम्भ मानल गेल अछि।

'तरो मनुः श्रद्धादेवः संज्ञापामास भारत
श्रद्धायां जनयामास दश पुत्रान् स आत्मवान्।
(9-1-11)

छांदोग्य उपनिषद्मे मनु आ श्रद्धाकेर भाव मूलक व्याख्या सेहो भेटैत अछि। **'यादवै श्रद्धाति अथ मनुते नाऽश्रद्धन् मनुते'** ई सब निरुक्त सनक व्याख्या अछि। ऋग्वेदमे श्रद्धा आ मनु दुनूक नाम ऋषि

सनक भेटैत अछि। श्रद्धावाला सूक्तमे सायण श्रद्धाक परिचय, दैत लिखने छथि, **'कामगोत्रजा श्रद्धानामार्षिका'** श्रद्धा काम गोत्रक बालिका अछि। अही लेल श्रद्धा नामक संगे ओकरा कामायनी सेहो कहल जाइत अछि। मनु पहिल पथ-प्रदर्शक आ अग्निहोत्र प्रज्वलित करैवला आ अन्य कतेको वैदिक कथा सभक नायक छथि–**'मनुर्हवा अग्रे यज्ञेनेजे; यदनुकृत्मेमाः प्रजा जयन्ते'** (शतपथ 5-1)। हिनक संबंधमे वैदिक साहित्यमे बहुतो रास कथा यत्र-तत्र भेटैत अछि। परंच ओकर क्रम स्पष्ट नहि अछि। जल-प्लावनक वर्णन 'शतपथ ब्राह्मण'क प्रथम काण्डान्तर्गत आठम अध्याय सँ आरम्भ होइत अछि, जाहि मे हुनक नौकाक उत्तरगिरि हिमवान प्रदेशमे पहुँचबाक प्रसंग अछि। ओतय ओघ केर जलक अवतरण भेला पर मनु जाहि स्थान पर उतरला ओकरा मनोरवसर्पण कहल गेल अछि। **'अपीपरं वै त्वा, वृक्षे नावं प्रतिबध्नीष्व, तं तु त्वा मा गिरो सन्तुनुदकमन्तश्चैत्सीद् यावद् यावदुदकं समवायात्-तावत् तावदन्वव सर्पासि इति सह तावत् तावदेवान्ववससर्प। तदव्येतदुत्तरस्य गिरेर्मनोरवसर्पणमिति।'** (8-1)

श्रद्धाक संग मनुक मिलन भेलाक बाद ओहि निर्जन प्रदेशमे उजड़ल सृष्टि कें फेर सँ आरम्भ करबाक प्रयत्न भेल। मुदा असुर पुरोहित कें भेटि गेला सँ ई सब पशुबलि देलनि। **'किलाताकुली इति हासुरब्रह्मावासतुः। तौ होचतुः श्रद्धादेवो वै मनुः–आवं नु वेदावेति। तौ हागत्योचतुः मनो। बाजयाव त्वेति।'** एहि यज्ञक बाद मनु मे जे पूर्वपरिचित देव प्रवृत्ति जागि उठल, ओ इड़ाक सम्पर्क मे अयला पर ओकरा श्रद्धाक अतिरिक्त दोसर दीस प्रेरित केलक। इड़ाक संबंध मे शतपथ ब्राह्मण मे कहल गेल अछि ओकर उत्पत्ति वा पुष्टि पाक यज्ञ सँ भेल। ओ ओहि पूर्ण योषिता कें देखि पुछलनि, तों के छह? इड़ा बाजल, तोहर दुहिता छी।' मनु फेर पुछलनि, हमर दुहिता कोना? ओ बाजल, तोहर दही, घृत आदिक हवि सँ हमर पोषण भेल अछि।' 'तां ह मनुरुवाच–'का असि' इति। 'कथं भवति? मम दुहिता इति। (शतपथ ब्राह्मण 6 प्र. 3 ब्रा.)। मनु कें इड़ाक लेल अत्यधिक आकर्षण भेल आ

श्रद्धा सँ ओ अपना कें किछु खींचि लेलनि। ऋग्वेदमे इड़ाक अनेक स्थान पर उल्लेख भेटैत अछि ई प्रजापति मनुक पथ प्रदर्शिका मनुक्खक शासन करै वाली कहल गेल छथि। 'इड़ामकृण्वमनुष्यस्य शासनीम (ऋग्वेद 3-31-11)। इड़ाक संबंधमे ऋग्वेदमे अनेक मंत्र भेटैत अछि–**सरस्वती साधयन्ती धियं न इड़ा देवी भारती विश्वमूर्तिः तिस्रो देवीं : स्वधयावहिरिदं स्नोयं सरस्वती स्वपसः सदन्तु।**' (ऋग्वेद 10-10-8) एहि सब मंत्रमे मध्यमा, वैखरी, आ पश्यन्तीक प्रतिनिधि भारती, सरस्वतीक संग इड़ाक नाम आयल अछि। लौकिक संस्कृतिमे इड़ा शब्द पृथ्वी अर्थात् बुद्धि वाणी आदिक पर्यायवाची अछि। **'गो भू वाचस्त्विड़ा इला।'** (अमर) एहि इड़ा किंवा वाक्क संग मनु वा मनक एकटा आर विवाद (भेद)क सेहो शतपथ ब्राह्मणमे उल्लेख भेटैत अछि। जतय दुनू अपन महत्ताक लेल झगड़ा करैत छथि। **'अथातोमनसश्च'** इत्यादि (4 अध्यायक 5 ब्राह्मण)। ऋग्वेदमे इड़ा कें घृत, बुद्धिक साधन करैवाली मनुक्ख कें चेतना देनिहारि कहल गेल अछि। गतवर्ती कालमे संभवतः इड़ा कें पृथ्वी आदि सँ संबद्ध कऽ देल गेल होइ, परंच ऋग्वेद 5-5-8मे इड़ा आर सरस्वतीक संग महीक भिन्नहि उल्लेख स्पष्ट अछि।' **'इड़ा सरस्वती महीतिस्त्रो देवीर्मयोभुवः'** सँ बुझना जाइत अछि जे मही सँ इड़ा पृथक अछि। इड़ा कें मेघसवाहिनी नाड़ियो कहल गेल छै।

अनुमान कयल जा सकैत अछि जे बुद्धिक विकास, राज्य स्थापना इत्यादि इड़ाक प्रभावे सँ मनु कयलनि। फेर तऽ इड़ा पर सेहो अधिकार करबाक चेष्टाक कारणे मनु कें देवगणक कोपभाजन बनऽ पड़ल। **'तद्वै देवानां आग आस'** (शतपथ 7-4)। एहि अपराधक कारणो सँ हुनका दण्ड भोगए पड़ल। **'तंरुद्रोऽभ्यावत्स विव्याध'** (शतपथ 7-4)। इड़ा देवता सभक स्वसा छल। अही मादे यज्ञ सबमे इड़ा कर्म होइत अछि। इड़ाक ई बुद्धिवाद श्रद्धा आर मनुक बीच व्यवधान बनेबामे सहायक होइत अछि। फेर बुद्धिवादक विकासमे, बेसी सुखक खोजमे दुखक भेटनाइ स्वाभाविक अछि। ई आख्यान एतबा प्राचीन अछि जे इतिहासमे रूपकक सेहो अद्‌भुत मिश्रण भेल अछि। अही लेल मनु, श्रद्धा

आ इड़ा इत्यादि अपन ऐतिहासिक अस्तित्व रखैत जौँ सांकेतिक अर्थ सेहो अभिव्यक्त प्रस्तुत करथि तऽ हमरा कोनो आपत्ति नहि। मनु अर्थात् मनक दुनू पक्ष हृदय आर मस्तिष्कक संबंध क्रमशः श्रद्धा आ इड़ा सँ सरलतापूर्वक लागि जाइत अछि। **'श्रद्धां हृदय्य याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु'** (**ऋग्वेद १०-१५७-४**)। **अही सभक आधार पर कामायनीक कथाक** सृष्टि भेल अछि। हँ कामायनी'क कथा शृंखला मिलेबाक मादे कतौ-कतौ थोड़-बहुत कल्पना कें सेहो संलग्न करबाक अधिकार हम नहि छोड़ि सकल छी।

–जयशंकर प्रसाद

सर्गानुक्रम

1. चिंता..... 13
2. आशा..... 21
3. श्रद्धा..... 30
4. काम..... 37
5. वासना..... 43
6. लज्जा..... 54
7. कर्म..... 59
8. ईर्ष्या..... 72
9. इड़ा..... 80
10. स्वप्न..... 93
11. संघर्ष..... 105
12. निर्वेद..... 118
13. दर्शन..... 129
14. रहस्य..... 138
15. आनन्द..... 146

चिन्ता

हिमगिरिकेर उत्तुंग शिखर लग, पुरुष एकटा बैसल श्रांत,
छाँह छलै पाथरकेर शीतल, आँखि सजल लागै छल भ्रांत।
नीचा जल छल, ऊपर हिमकण, तरल एकटा आन सघन,
एक तत्वकेर छल प्रधानता–कहू भने जड़ वा चेतन।

दूर-दूर धरि पसरल हिम छल शांत पुरुषकेर हृदय समान,
सूनसानमे शिलाचरण कें छूबि रहल ओ छल पवमान।
तरुण तपस्वी सन बैसल से साधि रहल छल सुर श्मशान,
नीचा प्रलय सिन्धु लहरी केर करुणा भरल छलै अवसान।

तहीं तपस्वी सन नमहर किछु देवदारु दू-चारि तनल,
ठिठुरै छल पाथर हिमकण सन पसरल सौंसे शांत पड़ल।
हृष्ट-पुष्ट बलवान युवा सन ऊर्जस्वित छल वीर्य अपार,
रक्त वाहिनी नाड़ीमे छल समुचित जतए बनल संचार।

चिन्ता सँ कातर कायामे पौरुष सौंसे ओत-प्रोत,
ओम्हर उपेक्षामय यौवनकेर अंत: स्रावित छल मधु-स्रोत।
बान्हल छल तरणी बट लागल, सूखल धरती सँ आबद्ध,
उतरि गेल छल ओ जल-प्लावन, देखा रहल किछु अवनी मध्य।

बहराइत छल मर्म वेदना करुणा विकल कहानी सन,
असगर श्रोता प्रकृति हँसि रहल, देखि रहल सब ज्ञानी सन।
ओ चिन्ताकेर पहिल रेख, नागिन सन वनकेर लागै छल,
ज्वलामुखी-स्फोट कंपन ओ, भीषण थर-थर काँपै भल।

हे अभावकेर चपल बालिके, ओ ललाटकेर हत रेखा,
छल हरीतिमा रौद-छाँह कहि, प्रवहमान भू जल रेखा।
एहि ग्रह रक्षाकेर हलचल! तोँ तरल गरलकेर लघु लहरी,
तोँ जीवनकेर अजरा वैभव, लागि रहल हमरा बहिरी।

केहन व्याधि केर सूत्र धारिणी! तोँ चिंता, मधुमय अभिशाप,
हृदय गगनमे धूमकेतु सन, पुण्य सृष्टिमे सुन्दर पाप।
कतबा धरि तोँ मनन करेबह, कोन जातिकेर तोँ छह जीव,
अमर बनैलय तोँ लागल छऽ गहिर कतेक तोहर छै नींव।

आह भरल छह हृदय बीच बनि पाथर-घन खेतक ऊपर,
नुका रहल तोँ अन्तरतममे भेल निगूढ़ द्रव्य सन घर।
बुद्धि मनीषा, मति आशा सन चिन्ता तोहर कतबा नाम,
हमरा तऽ तोँ पाप लगै छह, भागह ई नहि तोहर गाम।

हम विसरए चाहै छी से सब-निकट आबि मन शांत करह,
ज्ञान-ध्यान सँ विमुख बनी हम आबह अंतस शून्य भरह।
चिन्तामग्न होइ हम जतबा ओहि अतीतकेर सुख सबमे,
ओतबे दुःख अनंत अबै छै लागल जीवनकेर क्रममे।

एहि सृष्टिक तोँ नायक असफल तोँ महाकालकेर गाल बनल,
भक्षक कहिऔ अथवा रक्षक पानि केहन जे मीन खेलक।
तोँ बिहाड़ि सन लागै हमरा बनल राति-दिन सन नर्तन,
तही वासनाकेर उपासना उएह तोहर छै प्रत्यावर्तन।

मणि-दीप सबक ई अन्हार सन केहन निराशापूर्ण भविष्य,
देव दंभकेर महायज्ञ मे लागि रहल सब बनल हविष्य।
नष्ट भेल अमरत्व हुनक कहि-कहाँ गेलौ तोहर जयनाद,
आ तोरे प्रतिध्वनि मे पीड़ा तोरे लय ओ भेल विषाद।

प्रकृति भेल दुर्जेय बिसरलहुँ हम सब बाजी की मदमे,
बनल सहज सब ऊब-डूबमे पड़ल विलासी ओहि नदमे।
डूबि गेल सब विभव हेरायल गीड़ि गेल जल पारावार,
देव-देव सब सुखासीन कहि दुःख जलधिकेँ भेल अपार।

कहाँ गेल ओ कहह विलासिता? स्वप्न केहन ओ छल मूलक,
देव सृष्टिकेर सुख विभावरी तारा रजनी सम्पूरक।
आँचर केर शोभा छल सुन्दर मधुपूरित हुँनकर मधु साँस,
कोलाहलकेर बीच सुशोभित देवजातिकेर सुख विश्वास।

मात्र सुखक संग्रह सँ सब सुख सघन समाहित भेल एना,
छाया पथ मे नव तुषारकेर घनगर मिलन हुअय जहिना।
सब किछु छल स्वायत्त विश्वकेर बल, वैभव, आनन्द अपार,
उद्वेलित स्वर लहरी धयने ओहि समृद्धकेर सुख संचार।

कीर्ति, दीप्ति, शोभा नाचै छल अरुण किरण सन चारू कात,
सप्त सिन्धुकेर तरल कणक्रम द्रुमदलमे आनन्दक लाथ।
शक्ति छलै हँ शक्ति; प्रकृति छल पदतलमे विनम्र विश्रान्त,
धरती कंपन पद पर लुंठित नित्य लगै छल से आक्रांत।

दंभ भरल छल देवत्वक तैँ भेलै सृष्टि एहि कारण नाश,
सहसा भेल अही सँ बाधा विपदा-वृष्टि बनल संत्रास।
बिला गेल सब किछु बाजी की सुरवालाकेर लुप्त सिंगार,
उषा ज्योत्सना सँ यौवन स्मित मधुप सदृश छल मुक्त विहार।

भरल वासना सरिताकेर ओ केहन कहू मदमत्त प्रवाह,
प्रलय जलधिमे संगम देखल हृदय भरै छल बैसल आह।
चिर किशोर वय, नित्य विलासी सुरभित सौँसे बाट-दिगंत,
आइ तिरोहित भेल कहाँ ओ मधुरित से ओ कहू वसंत।

कुसमित उपवनमे ओ पुलकित प्रेमालिंगन भेल विलीन,
मौन भेल ओ मूर्च्छित वाणी बिला गेल ध्वनि सौँसे बीन।
आब गाल पर छाया ओ नहि पसरै छल जे मुँह बनि भाफ,
ढील भेल परिधान बाँहिमे हेरा गेल लागल सब नाप।

कंकण क्वणित, रणित नूपुर छल डोलि रहल धरती पर हार,
मुखरित छल कलरव गायनकेर स्वरलहरी मधुता अभिसार।
सौरभ सँ दिगंत पूरित छल अंतरिक्ष आलोक-अधीर,
सब मे सहज चेतना गति छल जै सँ हारल छलै समीर।

नृत्य कुशलता देव कामिनी विविध रूप छल मुँह मुसकान,
मधुकरकेर मकरंदोत्सव सन आवर्तन मधु मदिर समान।
सुरा सुरभिमय देह अरुण आ नयन प्रमाद भरल अनुराग,
काल्हि गाल छलकैत जतए छल कल्पवृक्षकेर पीत पराग।

विकल वासनाकेर प्रतिनिधि सब मुरझायल भेलखिन ओ दूर,
किछु जरला अपनहि ज्वालामे पुनः गेल जल बीच सुदूर।
केहन उपेक्षा, केहन अमरता, की अतृप्ति निर्बाध विलास,
द्विविधा शून्य नेत्र ओ अपलक क्षुधा भरल दर्शन कहि आस।

भंग भेल सबटा आलिंगन प्रेम-स्पर्श सब भेलै विलीन,
मधुमय चुम्बनकेर कातरता भेल आइ मुख चुम्बनहीन।
रत्न गंध केर वातायन सँ मधुमिश्रित जे मदिर समीर,
थापड़ खा-खा सिन्धु मीन सँ भागि रहल ओ बनल अधीर।

देव कामिनीकेर दृगशोभा नीलकमल सन चारु अपार,
वृष्टि करै छल जे सुन्दरता आइ प्रलय छल ओतय हजार।
ओ नहि म्लान भेल कोनो क्षण बनलै प्रियगर मणिमाला,
बनल शृंखला बान्हल जहिमे विलासिनी सब सुरबाला।

पशुबलि सँ सम्पन्न यज्ञकेर पूर्णाहुति ज्वाला भारी,
बैसि देव सब देखै छथि ओ आइ सिन्धु लहरी कारी।
ई सब देखि रुदन के कयलक अंतरिक्षमे बैसि अधीर,
बरसय लागल नोर कठिनगर ई प्रालेय हलाहल नीर।

हाहाकार भेल क्रंदनमय कठिन कुलिश-भेलै सब चूर,
भेल दिगंत बधिर, भीषण रव बेर-बेर बनलै ओ क्रूर।
दिशा जरै सब, उठै धुआँ छल जलधर उठल क्षितिज तटकेर,
सघन गगनमे सेहो प्रकंपन झंझावातक क्रंदन नट फेर।

अंधकार मे मलिन मित्रकेर धुध्धुर आभा लीन भेलै,
वरुण व्यस्त, घनगर परतक तम एकत्रित जे पीन छलै।
पंचभूतकेर भैरव मिश्रण बिजुलीकेर होइ छलइ निपात,
उल्का संगे भेल शक्ति सब देखा रहल जहिना ओ प्रात।

बेर-बेर ओहि कोलाहल सँ काँपि रहल अवनी नि:शेष,
लागल नील व्योम उतरल हो आलिंगन लय हेतु विशेष।
गर्जन ओम्हर सिन्धु लहरीकेर कुटिल कालवत जाल बनल,
फेन उठै छल जलधि बीचमे लागि रहल ओ व्याल प्रबल।

अवनी धंसलै, धधकल ज्वाला ज्वालामुखी बनल नि:श्वास,
भेल संकुचित क्रमश: धरती निकट दूर धरि ओकरे ह्रास।
सबल हिलोरक गर्जन-तर्जन सिन्धु बनल छल पागल सन,
व्यग्र महाकच्छप सन धरणी ऊब-डूब रहि-रहि लागल सन।

वर्धमान छल वेग विलासक ओ अति मारक जल संघात,
तरल तिमिरमे प्रलय पवनकेर आलिंगन बान्हल प्रतिघात।
रहि-रहि कखनो निकट अबै छल क्षितिज क्षीण पुनि लीन जेना,
उदधि डुबौने अखिल धरा कें छल मर्यादाहीन तेना।

मेघ खसौने पाथर भारी नष्ट कऽ रहल सब किछु कें,
पंचभूतकेर तांडव जारी छल अबाध लागल जग कें।
लहरि उठल चूमै नभ सद्यः चपला बनल असंख्यक नृत्य,
गरल जलद केर सम्मोहनमे बिन्दु रचै सब संसृत कृत्य।

बिजुरी सब ओहि सागर जलमे स्वयं चमत्कृत होइत छलैक,
खण्ड-खण्ड ओ टूटि-टूटि कए ज्वाला बनि-बनि रुदन करैक।
जलनिधिकेर जलवासी जलचर विकल भेल उतराय रहल,
भेल विलोड़ित गृह सबहक छल सुख कोनो के पाबि रहल?

घनीभूत भऽ उठल पवन फेर सांसक गति होइत छल रुद्ध,
आर चेतना बिलखि रहल छल दृष्टि लगै छल पागल क्रुद्ध।
ओहि विराट मंथन समुद्रमे ग्रह-तारा बुदबुदा रहल,
प्रखर प्रलय पावसमे बिजुरी चम-चम शौर्य देखा रहल।

पहर दिवस कतबा की बीतल कहल कठिन सन ई इतिहास,
एहि सबकेर जे सूचक कारक चिन्ह बनल कालक उच्छ्वास।
कारी शासन चक्र मृत्युकेर चललै कतबा कहि नहि साँस,
महामत्स्यकेर एहन चपेटा दीन पोतकेर मरण निवास।

किन्तु थपेड़ा प्रलयक खयने नौका लागल गिरि सुभ्यस्त,
देव दृष्टिकेर ध्वंस भाग किछु साँस लेल फेर सँ मध्यस्थ।
आइ अमरता जीवित हम की शेष कहू की बाँचल दंभ,
आह सर्ग नव प्रथम अंककेर अधरपात्र मदिरा विष्कंभ।

ओ जीवनकेर मरु मरीचिका कायरता, आलस्य, विषाद,
केहन पुरातन अमृत! अगतिमय महोमुग्ध जर्जर अवसाद।
मौन, नाश, विध्वंस! तमाधिक शून्य बनल जे प्रगट अभाव,
सयह सत्य अछि, सुनू अमरते एतय शेष नहि कोनो ठाँव।

मृत्यु सुनह तोँ हे चिरनिद्रे! तोहर अंक हिम सन शीतल,
तो अनंतमे लहरि बनोने काल जलधिकेर छह हलचल।
सम आ विषम रूप तोहर अछि, छै असीम जीवनकेर माप,
तोरे टा विभूति सदिखन कहि सृष्टि सतत बनलै अभिशाप।

अंधकारकेर अट्टहास सन मुखरित सतत चिरंतन सत्य,
तोँ विलुप्त सृष्टिक सब कणमे तोँ सुन्दर रहस्य छऽ नित्य।
जीवन छुद्र अंश अछि तोहर व्यक्त नील घन माला सन,
सौदामिनी-संधि सन सुन्दर क्षण भरि लय सुखशाला सन।

पवन पी रहल छल ओ सब निर्जनताकेर उखरड़ल साँस,
घूरि रहल छल दीन प्रतिध्वनि बनल मध्य हिम पाथर पास:
धू-धू केने नाचि रहल छल अनस्तित्वकेर तांडव नृत्य,
आकर्षण विहीन विद्युतकण बहिया छलै बनल ओ भृत्य।

मृत्यु सदृश शीतल निराश सन आलिंगन पावै छल दृष्टि,
परम व्योमकेर भौतिक कण सन होइत रहय तुषारक वृष्टि।
भाफ बनल उड़ि रहल ओतय छल किंवा भीषण जल संघात,
सौर चक्रमे आवर्तन छल प्रणय निशाकेर जहिना प्रात।

卐

आशा

स्वर्णिम तीर बरसिते उषा जय लक्ष्मी सन उदित भेली,
ओम्हर पराजित कालरात्रि ओ जल मे अंत: मार्ग धेली।
ओ विवर्ण मुँह त्रस्त प्रकृतिकेर पुन: हँसि रहल आइ नवल,
वर्षा बीतल भेलै सृष्टिमे शरद ऋतुक विस्तार धवल।

नव कोमल आलोक पसारय हिम संसृत धेने अनुराग,
सित सरोज पर खेलि रहल छल मधुमय सन ओ पीत पराग।
मंद-मंद क्रम हिम आच्छादन भेल सुदूर धरातल सँ
जागि गेल हरिअरी चहू दिस मुँह धोबइते शीतल जल सँ।

नुका-छिपी कऽ रहल आँखि छल प्रकृति प्रबुद्ध होअय लागल,
जलधि लहरि सब लैत अंगैठी बेर-बेर सूतल-जागल।
सिन्धु सेज पर धरा बधू सन भेल संकुचित बैसल छल,
प्रलय निशाकेर कंपित स्मृतिमे मान केने ओ ऐंठल भल।

मनु देखल ओ अतिरंजित विजन विश्वकेर नव एकांत,
जहिना हो कोलाहल सूतल हिम शीतल जड़ता सन श्रांत।
इन्द्रनील मणि महाचषक छल सोमरहित उन्टे लटकल,
आइ पवन मृदु हास लऽ रहल बीतल दुख लागल घसकल।

ओ विराट छल हेम मिलौने नूतन रंग भरय लय आइ,
कहू कुतूहल कारण की ई? जेना अचक्कहि आयल आइ।
विश्व देव, सविता वा पूषा, सोम मरुत चंचल पवमान,
वरुण आदि सब घूमि रहल छथि ककरा शासनमे अम्लान।

किनकर छल भ्रूभंग प्रलय सन जेहिमे सब आकुल रहला,
प्रकृति केर ई शक्ति चेन्ह छल! तैँ की बहुतो अबल छला।
विकल भेल ओ काँपि रहल छल सकल भूत चेतन समुदाय,
केहन दशा चौपट छल हुनकर बनल विवशता जे निरुपाय।

देव रही नहि हम कि आर ई सब परिवर्तन सँ भऽ असहाय,
हँ कि गर्व रथमे तुरंग सन जतबा चाही जोतल जाय।
महानील एहि परम व्योममे अंतरिक्षमे ज्योतिर्मान,
ग्रह, नक्षत्र आ विद्युत कण सन जकर करैत रहय संधान।

नुका जाइत अछि पुनः समक्षहि आकर्षणमे बान्हल सन,
तृण वीरुध लहलहा रहल छै ककरा रस सँ सिंचित कण।
माथ खसौने किनकर सत्ता सब कयने स्वीकार एतय–
मौन सतत प्रवचन करैत जेहिकेर ओ अस्तित्व कतय?

हे अनंत रमणीय अहाँ के? कहि सकबै हम कोन तरह,
अहाँ कहू के? रूप केहन अछि? ज्ञान सहज नहि गूढ़ सतह।
हे विराट! हे विश्व देव! किछु तेहने सन आभास भान–
मंद शांत दृढ़ स्वरमे संयुत गाबि रहल छै सागर गान।

ई की जे छल मधुर स्वप्न सन झिलमिल अंतस सतत अधीर,
व्याकुलता सन व्यक्त भऽ रहल आशा बनि बनि प्राण समीर।
से केतबा स्पृहणीय बनल छै मधुर जागरण सन छविमान,
स्मित लहरी सन जे उठैत अछि नाचि रहल मधुमय हो तान।

जीवन! जीवनकेर पुकार अछि खेलि रहल छै शीतल दाह,
ककरा पदमे नत बैसल अछि नव प्रभातकेर नव उत्साह।
हम छी, ई वरदान सदृश संचरित भेल ओ कानक मध्य,
हमहू-तऽ कहि रहल सएह 'हम रही' बनल नभ गीत सख्य।

ई संकेत भरल सत्ताकेर किनकर सरल विकासमयी,
किए आइ जीवाक लालसा बनल प्रखर छै विलासमयी?
जीवी किए हम आर कहू-छै मरण सत्य जीवन प्रभाग?
देव कहू, धय अमर वेदना भेटत कहिया मृत्यु अभाग?

परदा एकटा हटल पवन सँ प्रेरित माया-पट जहिना,
आर आवरण मुक्त प्रकृति छल हरिअर मिश्रित ओ तहिना।
स्वर्णिम रोपल धान सोहावन दूर-दूर धरि पसरि रहल,
शरद इंदिराकेर मंदिरकेर रस्ता-पैड़ा बनल सरल।

विश्व कल्पना सन विशाल ओ सुख शीतल संतोष निदान,
प्रलय मुक्त जे रहय हिमालय अवलंबन मणिरत्न निधान।
अचल हिमालय राज सुशोभित लता कलित शुचि सानु शरीर,
निद्रामे सुख-स्वप्न दृश्य छल लागल पुलकित भेल अधीर।

उमड़ि रहल छल जकर चरणमे नीरवताकेर विमल विभूति,
झर-झर शीतल निर्झर धारा पसरि गेलै जीवन अनुभूति।
ओहि असीम आकाश नीलमे ककरो देखि मृदुल मुस्कान,
मानल हँसी हिमालयकेर ई फूटि चलल कलरव सन गान।

शिलाखण्ड केँ मारि थपेड़ा पवन पसारै छल गुंजार,
ओहि दुर्भेद्य अचल दृढ़ताकेर चारणकृत लागल विस्तार।
संध्या घनमालाकेर सुन्दर ओढ़ने-बेढ़ने रांगल छींट,
गगन चुम्बनी शैल पंक्ति सब लागल पहिरय शुभ्र किरीट।

विश्व मौन, गौरव महत्वकेर प्रतिनिधि पूरल दिव्य विभा,
एहि अनंत प्रांगणमे लागल जोड़ि रहल छल मौन सभा।
ओ अनंत नीलाभ व्योमकेर जड़ता लागल शांत एना,
दूर-दूर धरि ऊँच सँ उच्चा शून्य भावमे भ्रांत जेना।

देखि रहल जगती सुख ओ सब हँसी आर उल्लास अजान,
तुंग तुरंग विश्वकेर हिमगिरि तहिना उन्नत छलै उठान।
छल अनन्तकेर कोरा सन जे विस्तृत ओतय गुहा रमणीय,
ओहिमे मनु प्रिय जगह बनाओल साफ छलै ओ छल वरणीय।

लग मे पुंजित अग्नि जरै छल मलिन किरन सन ओ रविकेर,
शक्ति आर जागरण चेन्ह सन धधकि उठल ओ कतबा बेर।
लागल जरय निरंतर हुनकर अग्निहोत्र सागरकेर तीर,
केलनि समर्पण मनु जीवन निज बनल तपस्वी बैसल धीर।

सजग पुनः भेलै सुर संस्कृति-देव यजनकेर वर माया,
ओहि पर छोड़य लागल ओ सब निज कर्मक शीतल छाया।
उठला मनु दिनकर सन लागल क्षितिज बीच अरुणोदय कांत,
देखय लगला लुब्ध नयन सँ प्रकृति विभूति मनोहर, शांत।

पाक कर्मकृत केने सुनिश्चित तंडुल पुनः कयल एकत्र,
ओम्हर अग्निकेर धुआं उठल नभ पटमे पसरल जे सर्वत्र।
डारि-पात किछु शुष्क गाछकेर–भेलै अग्नि ओ फेर समिद्ध,
आहुतिकेर नब धूम-गंध सँ नभ कानन भऽ गेल समृद्ध।

आर सोचि कऽ अपन हृदयमे जहिना हम सब छी अवशेष,
आश्चर्य की जीवन लीला बाचि गेल हो किछु निःशेष।
अग्निहोत्र अवशिष्ट अन्न किछु कतौ दूर धेने अयलहुँ,
होयत एहि सँ तृप्त अपरिचित बूझि सुखक अनुभव कयलहुँ।

दुखक गहन पाठ पढ़ने हम सहानुभूति सब बूझि रहल,
नीरवताकेर गहन सिन्धुमे मग्न असगरे छलहुँ पड़ल।
मननशील ओ छला विराजित ज्वलित अग्नि कें लग धेने,
छल सजीव तप बैसल ठामहिं पतझरमे आसन लेने।

तैयो कम्पन कखनहुँ मनमे चिन्ता कखनहुँ भेल नवीन,
बीति रहल छल अही तरह सँ अस्थिर तैयो दिन ओ दीन।
प्रश्न उपस्थित नित्य नवल छल अंधकारकेर मायामे,
बदलि रहल छल रंग क्रमिक ओ ओहि विराटकेर छायामे।

अर्ध प्रस्फुटित उत्तर भेटल प्रकृति सकर्मक छलै समस्त,
निज अस्तित्व बना रखबामे जीवन आइ भेल छल व्यस्त।
तप मे निरत भेल मनु, कयलनि नियमित कर्मारम्भ,
विश्व रंगमे कर्म जालकेर घनगर सूत्र बनल प्रारम्भ।

ओहि एकान्त नियति-शासनमे ओ बिवश भेल चलला धीरे,
जहिना शांत कोनो जल लहरी बढ़ल जाइ सागर तीरे।
शून्य जगत तंद्रामे लेने-धेने मनमे किछु सपना,
ग्रह पथकेर आलोक वृत्त सँ काल-जाल तानल तहिना।

पहर दिवस रजनी आबै छल घूरै छल संदेश विहीन,
ओ विरागपूर्ण संसृतिमे जहिना निष्फल आदि नवीन।
धवल मनोहर चन्द्रविम्ब सँ अंकित सुन्दर स्वच्छ निशीथ,
जैमे शीतल पवन गा रहल पुलकित हो पावन उद्‌गीथ।

नीचाँ दूर-दूर धरि विस्तृत उर्मिल सागर व्यथित अधीर,
अंतरिक्षमे व्यस्त ओही सन छलै चन्द्रिका निधि गंभीर।
खुजल तही रमणीय दृश्यमे अलसायल चेतन लोचन,
हृदय कुसुम खुजि रहल स्वत: मधु सँ भीजल पंख सुमन।

व्यक्त नीलमे किरन प्रकाशक चंचलता कंपन सुख देने,
भेल अतीन्द्रिय स्वप्न लोककेर मधुर रहस्यक ग्रन्थि धेने।
नव-नव जागल सुचिर वासना मधुर प्राकृतिक भूख समान,
चिर परिचित सन से चाहै छल द्वन्द्व सुखद कय अनुमान।

दिवा-रात्रि वा मित्र वरुणकेर चन्द्रमुखी अक्षय शृंगार,
मिलन जेना संभव जीवनकेर उर्मिला सागरकेर ओहि पार।
तप सँ संयमकेर संचित बल तृषित आर व्याकुल छल आइ,
अट्टहास भऽ उठल रिक्तकेर ओ अधीर तम सूनक खाइ।

धीर समीर स्पर्श सँ हर्षित विकल भेल ओ श्रांत शरीर,
आशाकेर ओझरायल दृग सँ उठल लहरि मधु गंध अधीर।
मनुकेर मन किछु विकल भेल छल संवेदन सँ खयने चोट,
संवेदन! जीवन-जगती कें कटुता दुखक पिआबै घोंट।

आह कल्पनाकेर सुन्दर सन सृष्टि कतेक सुन्दर अछि ई,
सुख स्वप्नक समूह छायामे पुलकित भय सूतै-जागै ई।
संवेदन कें आर हृदयकेर ई संघर्ष ने संभव अछि,
फेर अभावक असफल गाथा एहिना के बाजू सुनबै अछि।

कहह हमर जीवन तों हमरा हम कतबा रहिऔ असगर?
ककरा कही कथा अंतर केर-नहि खोलह निज निधि भरिगर।
तमकेर सुन्दरतम रहस्य हे! कांति किरन रंजित तारा,
व्यथित विश्वकेर सात्विक शीतल बिंदु बनय नव रस धारा।

आतप तापित जीवन सुखकेर शांतिमयी छायाकेर देश,
तों अनन्त केर कथा कहैमे कतबा देबह मधु संदेश।
अहा शून्यते! चुप रहबामे किए भेल तों एते चतुर,
इन्द्रजाल जननी! रजनी तों कोन कारणे एहन मधुर?

जखन कामना तीर सिन्धु तट लऽ आनल संध्याकेर दीप,
वस्त्र फाड़ने ओकर कहह तोँ किए हँसै छह भेल प्रतीप?
एहि अनंतकारी शासनकेर छलै जखन अस्थिर इतिहास,
अश्रुतमक मसि सँ लिखैत तोँ कयने किछु ओक्कर मृदुहास।

विश्व कमलकेर मृदुल मधुकरी रजनी तोँ केहि कोना सँ,
अबैत-जाइत की चूमि लैत छह पढ़ि ओकरा तोँ टोना सँ।
केहि दिगंत रेखामे एतबा संचित कयने सिसकी साँस,
पवनक मादे हाँफि रहल ओ चलल जा रहल ककरा पास।

विकल भेल तोँ हँसै किए छह–नहि एतबा तोँ हँसी पसार,
तुहिन बिन्दु, फेनिल लहरी मे भऽ जायत फेर तमक प्रसार।
आँचर उठा देखिते हँसिते कोना ठिठकते आबय तोँ?
विजन गगनमे कोनो चूक सन स्मृतिमे ककरा लाबय ओ?

रजत कुसुमकेर नव पराग सन उड़ा ने तोँ एतबा सन धूरि,
नहि तऽ एहिमे स्वयं हेड़ेबह एहि इजोतमे भेल मदिर।
ऐ पगली तोँ सम्हरह एखनो कोना खसल तोहर आँचर,
देख पसरि गेल मणिमाला सब उठा धरह जल्दी तोँ कर।

फाटल छल की नील वसन अथवा छल ओ यौवन उन्मत,
लूटि रहल संसार देखि कऽ छवि तोहर निश्च्छल सन व्यक्त।
एहन अतुल अनंत विभवमे जागल कियै तीव्र वैराग?
अथवा ओ विस्मृत ताकै छै जीवनकेर छातीमे दाग।

हमहूँ बिसरि गेलौं ओ सब, ध्यान ने की कहिओ की छल,
प्रेम, वेदना, भ्राँति कहू की अथवा सुख जैमे सूते छल।
मिलत कतौ ओ पड़ल अचक्कहि नहि प्रमाद सँ हेरा दिहऽ।
हमहूँ देबै तोहर भाग प्रिय नहि ओकरा विस्मृत करिहऽ।

卐

श्रद्धा

के अहाँ? जीवन जलनिधि तीर लहरि सँ फेंकल मणिसन,
लागल की अभिषेक करैमे प्रभापुंज निर्जनमे चुपसन?
सुमधुर, श्रांत आर एकान्त संसारक ओझरा रहल रहस्य,
से करुणामय सुघर मौन आ चंचल मनकेर ई आलस्य।

सुनलनि मनु ई गुंजार मधुकरी सनक छलै आनन्द,
कयने मुँह निच्चाँ उत्पल सन प्रथम कविक जहिना हो छंद।
मन रोमांचित भेल सहर्ष टुकटुक देखि रहल लट के,
गाबि रहल सुन्दर संगीत मौन कुतूहल रहल ने से।

आर देखल ओ सुन्दर दृश्य नयनक इन्द्रजाल अभिराम,
कुसुम वैभवमे लता सदृश चन्द्रबदन धयने घनश्याम।
हृदयक अनुकृति बाह्य उदार पैघ सनक काया उन्मुक्त,
पवन वसंतक खेलि रहल शाल सुशोभित सौरभ युक्त।

नीलवर्णकेर मेष चर्म अति कोमल गांधार देशकेर,
झाँपल छल वपु श्रद्धा केर–शोभनीय सुकुमार अभेर।
नील वस्त्र सँ आवृत बाला छलै सुशोभित सुन्दर अंग,
खिलल जेना विद्युत कुसुम हो बनि अरुणिम मेघक ओ रंग।

आह! दिव्य मुँह! नभ पश्चिम जे बीच घेरायल हो घनश्याम,
अरुण रविक आभा मंडल सन भेदि रहल छल रूप ललाम।
किंवा नूतन इन्द्रनील लघु शृंग फोड़ि धधकल सन कांत,
लघु सन ज्वालामुखी अचेतन वासंतिक रजनी अश्रांत।

पसरल एँठल केश छलै किछु खसल कान्ह पर किछु मुँह पास,
नील मेघ शावक सुकुमारे अमृत भरै लय ओ विधु खास।
आर मुँहक ओ मधुर हास विश्राम लैत किसलय सुठाम,
मिहिरकेर नव किरण धवल अलसायल लागल अभिराम।

नित यौवन छवि सँ दीप्त भेल विश्वक करुण कामना मूर्ति,
स्पर्शक आकर्षण पूरक छल जहिना जड़मे रोचक स्फूर्ति।
भोरक पहिलुका धवल किरण बनलै मिश्रित माधुर्य मोद,
भोरुका तारा बनल सलज्ज मदमय छवि आभा प्रमोद।

कुसुम काननक मधु आँचरमे गंध-पवन सौरभ साकार,
कण पराग आधार बनौने दैहिक मधुताकेर व्यापार।
आर जेना पड़ि रहल ताहि पर मधु राकाक मनोहर साध,
हँसीकेर मद विह्वल छाया खेल मधुरता बनल अबाध।

मनु कहलनि, अम्बर भू बीचहिं जीव-रहस्य जटिल निरुपाय,
उल्का सन जरि रहल भ्रांत ओ नाचि रहल नीरव असहाय।
भेल ने निर्झर शैल दुखद ई नहि गलि सकलै ओ हिमखंड,
दौड़ि-दौड़ि कऽ मिलल ने जलनिधि अंक ने लागल ई पाखंड।

बनल पहेली ई जीवन अछि सोझरबाकेर अछि अभिमान,
बतबै छै विस्मृत पथ जहिमे आवागमन बनल अनजान।
बिसरब मानब धर्म पुरातन अभिलाषा दिन-राति व्यतीत,
बढ़ल जा रहल तिमिर गर्भमे दीन जीवनक ई संगीत।

लक्ष्य भ्रष्ट हम भेल आइ की? नील गगनकेर विवर बीच धऽ,
दिशाहीन पवनक तरंग सन उजड़ल सन सूनक रहस्य धऽ।
केहन विस्मरण स्तूप सून सन बनल अचेत इजोतक बिम्ब,
आ जड़ताकेर जीवन राशि सफलताक संकलित विलम्ब।

के छी अहाँ वसंतक दूत नीरस पतझरमे सुकुमार,
सघन तिमिरमे विद्युत रेख ग्रीष्म कालकेर शांत बयार।
नखतक आशा किरण समान कोमल कवि हृदयक कांत,
कल्पनाक लघु लहरी प्रिय अस्थिर मनकेँ करैछ शांत:

उत्कंठा केँ शांत करै अछि आगंतुक ई विषय विशेष,
लागल कोइली बांटि रहल हो फूल बीच मधुमय संदेश।
मन पूरित छल नव उत्साह सीखी ललित कलाकेर ज्ञान,
एम्हर छलै गंधर्वक देश, आ हम दुलारि बापक संतान।

घुमबाकेर अभ्यास बढ़ल छल मुक्त गगन तलमे कहि नित्य,
ताकि रहल मन हेतु कुतूहल सत्ता सत्यक छवि वैचित्र्य।
पड़ै दृष्टि जखने हिमगिरि पर प्रश्न केलक मन भेल अधीर,
पृथ्वीकेर संकुचन भयानक आह केहन सन अंतस पीर।

मधुरिमामे अपनहि भऽ मौन सुतल कोनो संदेश महान,
सजग भेल संकेत करै छल उमड़ि गेल चेतन अनजान।
बढ़ल मनक आवेग चलल पग शैल खंडकेर बनि शृंगार,
आँखिक भूख मेटल ई देखने कहू कतेक सुन्दर सम्भार।

सहसा कहिओ सिन्धु अपार मारल टक्कर नगतल क्षुब्ध,
असगर ई जीवन निरुपाय घूमि रहल एखनहुँ विश्रब्ध।
देखल बलिकेर एतय किछु अन्न ककर भूत-हित-रत ई दान,
एखनो इम्हर क्यो छैक सजीव-मनमे भेल एहन अनुमान।

तपस्वी किअय छह एतबा क्लांत? वेदनाकेर केहन ई वेग,
आह किअय तोँ एतेक हताश, केहन बताबह ई उद्वेग।
हृदय बीच नहि दृश्य अधीर, लालसा जीवनकेर नि:शेष,
त्याग तोहर वंचित कयने की मनमे धेने सुन्दर वेश?

दुखक भय सँ तोँ अज्ञात कयने कठिन जटिल अनुमान,
किए अवज्ञा आइ काज सँ बनल काल्हि सँ तोँ अनजान।
करइछ लीलामय आनन्द महाशक्ति साकांक्ष सुव्यक्त,
सृष्टिक उन्मीलन अभिराम सब क्यो एहिमे छै अनुरक्त।

काज नींक ओ मंडित श्रेय, सृष्टि बनल इच्छा परिणाम,
तिरस्कार नहि उचित, मूल ओ कारण असफल भवधाम।
दुख केर बीतल रजनी बीच विकसित सुखक नवल प्रभात,
अछि अधीन ओट नभ श्यामल नुका रहल जैमे सुख गात।

तोँ जकरा अभिशाप कहै छह ओ जग ज्वालाकेर छै मूल,
ओ रहस्य प्रभुकेर वरदान उचित न विसरब ई थिक भूल।
जतय विषमता पीड़ा भारी व्यथित भेल संसार सुजान,
सुख-दुखकेर विकास गाथा अछि सत्यक विश्व मनोहर दान।

समरसता केर नित अधिकार उमड़य कारण जलधि समान,
बीच लहरिमे व्यथा भने किछु पसरल सुख मणिमय द्युतिमान।
मनु कहि उठला भरल विषाद मधुर पवन सन ई उच्छ्वास,
जतय स्पृहा उत्साह तरंगित ओ अबाध मनमे सविलास।

किन्तु बहुत जीवन निरुपाय देखि लेल किछु नहि संदेह,
ई परिणाम निराशा जानल आर सफलता कल्पित गेह।
आगंतुक कहली सस्नेह कहू किए छी बनल अधीर,
हारि गेल की दांव स्वयंकेर जकरा जीवय मरिकऽ वीर।

तपटा नहि जीवनक सांच करुणा क्षणिक दीन अवसाद,
आकांक्षा सँ ई आवृत की आशा पूरित अछि आह्लाद।
प्रकृतिकेर यौवन शृंगार नहि चाही तकरा बासी फूल,
उन्मीलन अति शीघ्र मनोहर जतय स्पृहा अनुराग समूल।

प्रकृति रुढ़िकेर नहि छै पोषक एकरा नहि अछि ई मंजूर,
परिवर्तनमे सुख नूतनता चिर नवीन बसिया सँ दूर।
युगक शिला पर सृष्टि बनौने छाप छोड़ने ई गंभीर,
देव आर गंधर्व असुर मिलि करय अनुसरण बनल अधीर।

अहाँ एकटा, पसरल भूखंड चिरता प्रकृतिक वैभव छंद,
कर्मक योग-भोग कर्म थिक सयह जड़क चेतन आनन्द।
असगर संभव यज्ञ ने तोहर ई अनुचित अछि तुच्छ विचार,
तपस्वी! आकर्षण सँ हीन-करत कोना आत्मिक विस्तार।

दबल जा रहल अपन बोझ सँ ताकि रहल नहि तोँ अवलंब,
हम सहचर बनि किए ने तोहर बनी उऋण हम बिना विलंब।
ललक समर्पण सेवा सार सजल संसृतिक ई पतवार,
आइ सँ ई जीवन उत्सर्ग एहि पद तलमे विगत विचार।

माया, दया, स्नेह लऽ आइ संगहि मधुरिम दृढ़ विश्वास,
हमर हृदयकेर मणि निधि स्वच्छ ग्रहण करू जे छै लग पास।
जीवनकेर ई मूल रहस्य तोरे सँ पसरत एक्कर बेल,
विश्व भरय सौरभ सँ सबतरि हृदय कुसुमकेर सुन्दर खेल।

किए सुनैने छह तोँ ई सब ई विधानकेर शुभ वरदान,
बनह शक्ति सम्पन्न विजय हो, विश्व बीच गूँजय जयगान।
तोँ अमृत सन्तान निडर बनि अगुआयल मंगलमय वृद्धि,
जीवन अछि आकर्षण केन्द्र क्षमता खींचल सकल समृद्धि।

ध्वस्त भेल दैविक असफलता पसरल प्रचुर उपकरण आइ,
छितरायल जगक लौकिक निधि पूर्ण काम हो ई पथ पाइ।
चेतनकेर सुन्दर इतिहास अखिल लोककेर भावक सत्य,
हृदय पटल संसार लिखल जे स्वर्णाक्षर सँ नूतन नित्य।

विधिना निर्मित कल्याणी ई सृष्टि सफल हो भू पर पूर्ण,
सिन्धु-घटय हो गृह रचना बहु प्रलय मिटय जग सँ सम्पूर्ण।
प्रलयक पसरल चिनगारी कें दर्प तोड़ि जन हो सानन्द,
मानवताकेर अमर कीर्ति नभमे जलमे होय न बंद।

जलधिक फूटय कतबो उत्स कछुआ द्वीप डुबय उतराय,
मानवता केर मूर्ति सुदृढ़ बनि करय अभ्युदय केर उपाय।
दुर्बलता बलशाली होबय मिटय पराजय केर व्यापार,
शक्ति समन्वित पुरुष हँसै बनि शक्तिक क्रीड़ामय संसार।

शक्तिक विद्युतकण, व्यस्त विकल जे पसरल, हो निरुपाय,
बन्हय समन्वय सूत्र विजयिनी मानवता ई भऽ जाय।

卐

काम

मधुमय वसंत जीवन वनकेर बहलै आकाशक खेलामे,
आयल चुपचुप से कखन कहऽ रजनीकेर भोरुका बेलामे।
की तोरा अबैत एना देखल मदमस्त भेल पिक बाजल छल,
ओहि नीरवतामे अलसायल मृदु कली आँखिकेँ खोलै छल।

ओहि लीला सँ की सीखि रहल तो नुका-छिपी कलिकाक मध्य,
की भेल ने छल ससरब सुखगर ओहि मंद सुरभि सँ कहह सत्य।
हँसलै रसगर सब पुष्प कली फूलक वितानमे मुँह खोलने,
तोँ मिला रहल कलकंठ अपन कलरव निनाद मधुता घोरने।

निश्चित कतबा उल्लास छलै बाजह कोइलीकेर स्वरमे,
आनन्द प्रतिध्वनि गूंजि रहल जीवन दिगंतकेर अंबरमे।
शिशु चित्रकार चंचलतामे कतबा आशा चित्रित कयने,
अस्पष्ट भने लिपि ज्योतिमयी जीवनकेर लोचनमे भरने।

लतिका घोघट चितवनकेर ओ छल कुसुम दग्ध मधु धारा टा,
प्लावित केने मन अजिर छलै छल तुच्छ विश्व वैभव सबटा।
ओ फूल आर-ओ हँसी छलै ओ सौरभ ओ विश्वास भरल,
ओ कलरव, ओ संगीत केहन, ओ कोलाहल एकान्त बनल।

से सब कहैत किछु सोचि रहल लेने निश्वास निराशाकेर,
रोकल मनु मनकेर गप्प भने नहि प्रगति रुकल अभिलाषाकेर।
ओ नील आवरण जगतीकेर, दुर्बोध ने टा तोँ छऽ एतबा,
अवगुंठन होयत लोचनकेर आलोक रूप निर्मित जतबा।

चलचक्र वरुणकेर ज्योति भरल व्याकुलता डेरा डारै छल,
ताराकेर फूल पसारल सन असफलता तोहर गाबि रहल।
नव नील कुंज अछि झूमि रहल नहि कथा कुसुमकेर बंद भेलै,
छै अंतरिक्ष आमोद भरल–हिमकण सुनिऔ मकरंद छलै।

एहि इंदीवर सँ गंध लेने बनि रहल जाल मधुकेर धारा,
मन मधुपकेर अनुरागमयी बनि रहल मोहिनी सन कारा।
एहि कण सबमे विश्राम कहाँ ई कृतिमय वेग भरल कतबा,
अविराम नृत्य अछि कंपनकेर उल्लास सजीव भेल ततबा।

जे किछु हो, हम ने संभारि सकब एहि मधुर भारमय जीवन केँ,
आबय बाधा कतबो आबय दम साधब हम संयम बनि केँ।
नक्षत्र कहह तो देखबह की एहि उषाकेर लाली की छै?
संकल्प भरै छै ओकरामे संदेहक से जाली की छै?

कौशल ई कोमल कतबा छै सुषमा दुर्भेद्य बनत ई की?
चेतनता इन्द्रिय हम्मर हमर पराजय बनतै ई?
पीबै छी, हम पीबै छी ई स्पर्श, रूप, रस, गंध सकल,
मधुलहरीकेर की छै ध्वनिमे मधुरिम ई गुंजार भरल।

छिड़िआयल अछि किए तरेगन बनि स्वप्निल उन्माद अरे,
मादकता मातल आँघीमे सूती हम की सविषाद डरे।
भऽ रहल चेतना शिथिल जेना ओहि अंधकारकेर लहरीमे,
मनु डूबि गेला धीरे-धीरे रजनीकेर बीतल पहरीमे।

ओहि दूर क्षितिजमे सृष्टि बनल स्मृतिकेर संचित छाया सँ,
एहि मनमे अछि विश्राम कतय चंचल ई अपनहि माया सँ।
जागरण लोक सब बिसरि चलल स्वप्नक सुख संचार भेलै,
कौतुक सन बनि मनुकेर मनमे ओ सुन्दर क्रीड़ागार छलै।

अलसायल सन ओ सोचि रहल चेतना सजग रहलै दोबर,
साकांक्ष भेल ओ श्रवण केने सुनि रहल कान ध्वनि से सर-सर।
अछि कठिन पिपासा पियासल हम संतुष्ट ओघ सँ भेल न मन,
आयल तैयो ओ घूरि चलल तृष्णा कें कनिओ चैन ने क्षण।

सब देवक सृष्टि विलीन भेलै अनुशीलनमे अनुदिन हमरे,
अतिचार हमर नहि बंद भेल उन्मत्त घेरने ओ जग रे।
ओ छला उपासक हमर सुनू हमरे संकेत विधान बनल,
विस्मृत जे मोह हमर रहलै ओ देव विलास वितान तनल।

हम काम छलहुँ हुनकर सहचर, देवक विनोदकेर साधन हम,
हँसि-हँसि हम हास बनल हुनकर देवक कृतिमय ई जीवन क्रम।
जे आकर्षणकेर हँसी सरल ओ रति अनादि कामुकता छल,
अव्यक्त प्रकृति उन्मीलनकेर मनमे मायाकेर स्पृहा भरल।

हमरा दूनुक अस्तित्व छलै ओहि आरंभिक आवर्तन सन,
जै सँ जीवनकेर रचना छल आकार स्वरूपक नर्तन सन।
ओहि प्रकृतिलताकेर यौवनमे ओहि पुष्पवती ओहि माधवकेर,
मधुहास भेल छल पहिल सनक दू रूप मधुर बनलै मन केर।

ओ मूल शक्ति उठि ठाढ़ भेल आलस्य अपन ओ त्याग केने,
सब दौड़ि पड़ल अणु-अणु लागल लगमे सुन्दर अनुराग धेने:
कुंमकुमकेर चूर्ण उड़ौने सन मिलबाक ललक प्रगाढ़ करैत,
एहि अंतरिक्ष मधु उत्सवमे विद्युत कण सटल मिलाप भरैत।

ओ आकर्षण, ओ मिलन भेल प्रारम्भ माधुरी छायामे,
से सृष्टि नाम सँ ज्ञात भेल बनलै मदकेर निज मायामे।
संगहि विनाशकेर विश्लेषण सटलै से सब बनि सृष्टि रहल,
ऋतुपति घरमे छल कुसुमोत्सव मादक मरंदक वृष्टि झरल।

भुज लता नदीकेर पैघ भेल आच्छादित कयने शैल खंड,
जलनिधिकेर आँचर विजन बनल संयोग युग्म भूकेर आकंठ।
नव पुष्पकली सन जन्म भेल हमरा सब कें ओ बिसरि चलल,
ओहि नूतन सर्गक काननमे मृदु मलायानिल सँ फूल खसल।

हम भूख-प्यास सँ जागि उठल, अभिलाषा तृप्ति समन्वयमे,
रति-काम बनल ओहि रचनामे जे रहय नित्य यौवन-वयमे।
सुरबाला सबहक सखी बनल हृदयक वीणा सुमधुर लय छल,
रति मन सबहक सोझराबै छल ओ राग भरल छल मधुमय भल।

हम तृष्णा अपन बढ़ाबि रहल ओ तृप्ति मार्ग दरसाबै छल,
आनन्द समन्वय लागल छल पथारूढ़ बनलौं से भल।
नहि रहल अमरता नहि विनोद बाचल चेतनता भऽ अनंग,
हम भटकि रहल अस्तित्व धेने संचितकेर जे छल प्रसंग।

ई नीड़ मनोहर कृतिमूलक ई विश्व कर्मकेर रंगस्थल,
ई परिपाटी लागल मानू ठहरल जकरा जतबा छल-बल।
ओ भेल कतेक एहन सन जे साधन मात्र निमित्त रहल,
आरम्भ आर फलमूलक जे संबंध सूत्रके बीनै छल।

ऊषाकेर सजल लालिमा जे पसरै छै ओ नीलांबरमे,
ओ की छै? जे तोँ देखि रहल शुभ वर्णक मेघाडंबरमे।
अन्तर एतबे रजनी दिनकेर साधना कर्मकारक पसार,
मायाकेर नील गगन लागल आलोक विन्दु निर्झर हजार।

आरम्भिक बिहाड़िकेर हम उद्‌गम ओ आब प्रगति छै जीवनकेर,
मानवकेर शीतल छायामे ऋणशोध करब हम कृति निजकेर।
समुचित दुहूक ओ प्रतिवर्तन जीवनमे शुद्ध विकास बनल,
बनि गेल प्रेरणा फड़िछायल जल विप्लव धयने संयत छल।

जड़ चेतनाकेर ग्रन्थि सएह सोझरायल मूल सुधार बनल,
ओ शीतलता अछि शांतिमयी जीवनमे ऊष्ण विचार भरल।
जौँ स्पृहा होय भेटै से छै बनि जाउ योग्य कहि रहल सुनू,
सहसा ध्वनि मौन भेल तहिना स्वर वंशी जहिना शांत सून।

मनु आँखि खोलि ई पूछि रहल पथ कोन ओतय पहुँचावै छै?
ओहि ज्योतिमयी कें देव कहू की विविध रूप नर पावै छै?
एहि प्रश्नक उत्तर के कहतै ओ स्वप्न विलक्षण भंग भेल,
देखल सुन्दर सन प्राचीमे अरुणोदय सुखगर रंग देल।

ओहि लताकुंजकेर झिलमिल सँ स्वर्णिम आभा खेलि रहल,
सुरलोकक सोम सुधा रस ओ मनुकेर हाथक छल बेलि बनल।

卐

वासना

चलि पड़ल कहिया सँ हृदय दू, पथिक मन अश्रांत,
मिलबा लय एतय व्यग्र, भटकि रहल छल भ्रांत।
एक छल गृहपति दोसर पाहुन विगत विकार,
प्रश्न एक यदि तऽ दोसर छल उत्तर पूर्ण उदार।

एक जीवन सिन्धु छल तऽ अन्य लहरिक लोल सन,
एक नवल प्रभात तऽ ओ स्वर्ण किरण अमोल सन।
एक छल आकाश बरखा आन जल उद्दाम प्रिय,
से छलै रंजित किरण सँ श्री भरल घनश्याम हिय।

नदी तटकेर क्षितिजमे नव मेघ सायं काल,
खेला रहल दू रश्मि रम्य सुन्दर जाल।
लड़ि रहल अविरत युगल चेतना आबद्ध,
बान्हबामे पूर्ण क्यो नहि छल भने प्रतिबद्ध।

छल समर्पणमे ग्रहणकेर गुप्त अंतर भाव,
प्रगति छल मध्यस्थ तैयो बीच लाज स्वभाव।
चलि रहल छल शून्य पथ पर मधुर जीवन खेल,
दू अपरिचित सन नियति आब चाहल मेल।

नित्य परिचित भऽ रहल तैयो रहल किछु शेष,
गूढ़ अन्तरकेर नुकायल छल रहस्य विशेष।
दूर जहिना सघन वन-पथ अंतकेर आलोक,
आँखि सँ दूरस्थ तैयो आँखिकेर की दोख।

गिरि रहल निस्तेज गोलक जलधिमे असहाय,
घन पटलमे डूबि रहलै किरणकेर समुदाय।
कर्मकेर अवसाद दिन सँ कऽ रहल छल-छंद,
मधुकरी मकरंद संचय आब लागल बंद।

उठि रहल छल कालिमा धूसर क्षितिज सँ दीन,
मिलि रहल अंतिम अरुण आलोक वैभव हीन।
ई दरिद्र मिलन रचेलक शोक करुणा लोक,
दु:ख भरि निर्जन निलय जनु बिछुड़लै कोक।

मनु एखन धरि मनन करिते छलथि लगौने ध्यान,
कामकेर संदेश हुनकर भरि रहल छल कान।
एम्हर घरमे छल समाहित उपकरण अधिकार,
शस्य, पशु वा धान्यकेर छल आगमन संचार।

नवाकर्षण खीचि आनल अतिथिकेर संकेत–
चलि रहल छल सरल शासन कहि सुरुचि समेत।
देखलनि ओ अग्निशाला एवं कुतूहल युक्त,
मनु चमत्कृत निज नियतिकेर खेल बंधन मुक्त।

एकटा माया! अबै छल पशु अतिथिक साथ,
भऽ रहल छल मोह करुणा सँ सजीव सनाथ।
सोहराबै छलीह श्रद्धा पशुकेर कोमल अंग,
नांगड़ि घेंट उठेने ओ छल लागल संग।

आर ओ पुचकारबाकेर स्नेह शिवलित चाव,
मंजु ममता सँ मिलल बनि हृदय सद्भाव।
देखिते-देखिते आबि कखनो ओ दुनू लग पास,
करय लागल सरल सुन्दर मधुर मुग्ध विलास।

ओ विराग विभूति ईर्ष्या पवन सँ भऽ व्यस्त,
पसरि गेल; खुजतहि आगिक कण ओ अस्त।
किन्तु ई की? तीत घोंटकेर हिचकी आह,
दऽ रहल के बीच मनमे वेदनामय डाह?

आर पशु ई आर एतबा सरल सुन्दर नेह,
पोषित जे हमर अन्न सँ बीच हमर एहि गेह।
हम? कहाँ हम? ग्रहण करै सब निज भाग,
आर फेकि रहल हमर प्राप्य तुच्छ विराग।

तोँ केहन छह क्षुद्र कृतघ्न पिच्छड़ शैल संलग्न,
पिच्छड़ बनि करबह हृदय आर कतबा भग्न?
हृदयकेर राजस्व चोरायब ई अधम अपराध,
दस्यु हमरा सँ स्पृहित सुख सतत निर्बाध।

विश्व मे जे सरल सुन्दर हो विभूति महान,
सब हमर छथि, यदि करथि ओ सतत प्रतिदान।
इएह तऽ हम ज्वलित वाडव-बन्हि नित्य अशांत,
सिन्धु लहरी सन करय शीतल मनकेँ शांत।

आबि गेलै फेर क्रीड़ारत अतिथि उदार,
चपल शैशव सन मनोहर बिसरि बारंबार।
कहलक, किए तोँ एखनहुँ बैसल धय ध्यान,
आँखि देखत आर किछु, सुनि रहल किछु कान।

मन कतौ, ई भेल की? केहन आजुक रंग?
नत भेलै फन ठाढ़ ईष्याकेर विलीन उमंग,
आर सोहराबै सटल कर-कमल कोमल कांत,
देखि लेल अनूप सुषमा-मनु भेला किछु शांत।

कहल अतिथि! कतय छलह तोँ बनल अज्ञात,
आर ई सहचर तोहर कऽ रहल किछु बात।
कोन सुलभ भविष्य लय, आइ किए एतबा अधीर?
भेटि रहल तोरा सँ सदिखन स्नेह सुख गंभीर?

के अहाँ खींचल एना हमरा अपन लग दीस,
आर ललचौने स्वयं हटि गेल दोसर दीस।
ज्योत्सना निर्झर! ठहरलै किन्तु नहि दृग वास,
चीन्हबामे तोरा लागल लुप्त सन विश्वास।

कोन करुण छै रहस्य छै गुप्त तोरामे छविमान?
लता-कुंज सब दैत रहै जकरा छाया-दान।
हो कि पाथर पशु किओ नृत्यक सबमे नव छंद,
दिव्य आलिंगन बजाबय सब के ओ सानन्द।

राशि-राशि छीटल-फेंकल शांत संचित प्यार,
उघै छै राखै छै ओकरा दीन विश्व उधार।
देखि हम चकित जहिना लतिक लतिका-लास,
अरुण घनकेर सजल छायामे दिनांत निवास–

आर ओकरामे जेना छै सहज सहवास,
मदिर माधव यामिनीकेर धीर पद-विन्यास।
आर ई जे छै पड़ल सून सन ओ दीन,
ध्वस्त मंदिरमे जेना वस्तु कोनो हीन।

तहीमे विश्राम मायाकेर अचल आवास,
ई केहन सुख-शयन जे भऽ रहल हिम-हास!
वासनाकेर मधुर छाया! स्वास्थ्य बल विश्राम!
हृदयकेर सौन्दर्य प्रतिमा! के अहाँ छवि धाम!

कामनाकेर किरणमूलक जेहिमे मिलल हो ओज,
कहह तोँ के छह, एहि बिसरल हृदयक चिर खोज!
कुंद मंदिर सन हँसी जे दऽ रहल सुषमा खुजल,
कोन कारण खुजल नहि ई रुद्ध हृदयक पट मिलल?

कहल हँसि, 'अतिथि छी हम' आर परिचय व्यर्थ,
नहि रही उद्विग्न एतबः अहाँ से की अर्थ।
चलू देखू आबि रहल ओ बजबै लय आइ-
सरल हँसमुख बिधु जदलि लघुखण्ड वाहन साजि।

कालिमा लागल छंटय मुखरित भेलै आलोक,
अही शून्य अनन्त बीचे आबि बसलै लोक।
निशा मनोहर पूरित सन सुधामय मुस्कान,
देखिते ई सब बिसरलै दुखक नहि अनुमान।

देखह उंचगर शिखरक व्योम चुम्बनमे व्यस्त,
घूरि आयब किरण अंतिम आर होयब अस्त।
चलू तऽ एहि कौमुदीमे देखि आबी आइ,
प्राकृतिक ई स्वप्न शासन साधना भऽ जाइ।

सृष्टि लागल हँसय विकसल आँखिमे अनुराग,
राग-रंजित चंद्रिका छल, उड़ल सुमन पराग।
आर हँसै छल अतिथि मनुकेर पकड़ने हाथ,
चलल दुनू स्वप्न पथमे स्नेह संबल लाथ।

देवदारु निकुंज गह्वर सब सुधामे स्नात,
मानल सब उत्सव सन जागरण केर राति।
आबै छलै मधुर गमगम माधुरीकेर गंध
पवनक बीच मेघ घेरने छल व्योम मध्य मधु-अंध।

शिथिल अलसायल पड़ल प्रतिबिम्ब रजनी-कांत,
सूतै छल शिशिर कण लागल शैया पर विश्रांत।
ओही झाड़क बीचमे छल भाव हृदयक भ्रांत,
छाया जतय सृजनमे लागल कौतूहल प्रिय कांत।

मनु कहल, अतिथि तोरा देखलहुँ कतेक बेर,
मुदा कहाँ छल तोहर रूप-छवि एतेक घनेर।
पूर्वजन्मक ई कही वा स्पृहरणीय मधुर अतीत,
गूंजल जखने मदिर घनमे वासनाकेर गीत।

हम बिसरि जे दृश्य आइ छी बनल अचेत,
भाव ओ किछु क्षीण सस्मित करैछ संकेत।
'हम तोहर भऽ' रहल छी सएह सुदृढ़ विचार,
चेतनाकेर परिधि निर्मित घूमि चक्राकार।

बरसि रहलै मधु किरण ओ प्रकंपित सुकुमारि,
पवनमे अछि पुलक, मंथर चलि रहल मधुर-भार।
लय एतेक अधीर एतबा किए आइ छै प्राण?
पी रहल अछि केहि सुरभि सँ तृप्तिश: ई घ्राण?

आइ किए संदेह भऽ रहल रुसबा लय व्यर्थ,
अछि मनायब लालसा तैयो बनल असमर्थ।
भरि रहल नस वेदनाकेर रक्तमे संचार,
थरथरी पैसल हृदयमे बनि जेना लघुभार।

चेतना रमणीय ज्वाला परिधिमे सानन्द,
दिव्य सन सुख मान होयत गाबि रहलै छंद।
आगि-कीट जरै बरोबरि दुहू भरल उत्साह,
आर जीवित छै, ने फोंका नहि कोनो छै दाह।

के भला तोँ विश्व माया कुहुक सन साकार,
प्राणसत्ताकेर मनोहर भेद सन सुकुमार।
हृदय जकरा कांत छायामे लेने निश्वास,
पथिक थाकल व्यजन लेने लऽ रहल सुख साँस।

श्याम नभमे मधु किरन सन फेर ओ मृदु हास,
सिन्धुकेर हिलोर दक्षिण सँ पवन-विलास।
कुंजमे गूंजै जेना केओ मुकुल सन अव्यक्त,
कहय लागल अतिथि, सुनल मनु अनुरक्त।

ई अतृप्त अधीर मनकेर क्षोभयुत उन्माद,
मित्र, तुमुल तरंग सन उच्छ्वासमय संवाद।
नहि कहू पूछु ने किछु, नहि देखू केहन ई मौन,
विमल राका मूर्ति बनि कऽ स्तब्ध बैसल कोन!

विमल मातल सन प्रकृतिकेर आवरण ओ नील,
शिथिल अछि, जै पर पसरलै प्रचुर मंगल खील।
राशि-राशि नक्षत्र कुसमक अर्चना अश्रांत,
पसरि रहलै ताम रस सुन्दर चरणकेर प्रांत।

देखय लगला जेना-जेना मनु रातिक सुन्दर रूप,
ओ अनन्त प्रगाढ़ छाया पसरलै अनुरूप।
बरसै छल मदिर कण सन स्वच्छ सतत अनन्त,
मिलनकेर संगीत प्रतिपल भऽ रहल श्रीमंत।

चिनगियो छूटै छलै जे उत्तेजक उद्‌भ्रांत,
धधकि रहल छल आगि वक्ष विकल अश्रांत।
वातचक्र समान किछु बान्है छलै आवेश,
धैर्यकेर किछुओ ने मनु कें हृदयमे छल लेश।

हाथ धय उन्मुक्त सन ओ कहय लगला आइ,
आइ देखी भिन्न किछु माधुर्य रस लग जाइ।
ओहने छवि! हँ ओहने सन! किन्तु की ई भूल,
रहल विस्मृति सिन्धुमे स्मृति नाव विकल अकूल।

जन्म सँ संगिनि रहै जे कामबाला नाम,
मधुर श्रद्धा ओ छलै मम प्राणकेर विश्राम।
सतत भेटै छल ओही सँ, अरे जकरा फूल,
दय रहलि ओ अर्घमे मकरंद, सुषमा मूल।

प्रलयोमे जँ बचल रहि गेलौं तऽ मिलनकेर मोद,
शेष बाचल छल जेना किछु विश्वकेर आमोद।
ज्योत्सना सन निकसि आयल, पार करय नीहार,
प्रणय विधु छै ठाढ़ नभमे लेने तारक हार।

कुटिल कुंतल सँ बनेने काल माया जाल,
नीलिमा सँ नयनकेर रचने अन्हारक नाल।
औंघीसन दुर्भेध अन्हारक, फेंकने ई दृष्टि,
स्वप्नवत ई पसरि जायत हँसीकेर चल सृष्टि।

भेल केन्द्रीभूत सन छै साधनाकेर स्फूर्ति,
दृढ़ सकल सुकमारितामे रम्य नारी मूर्ति।
थाकल दिनमे रवि बौएने वा श्रम सँ विकल विश्रांत,
हम पुरुष शिशु सन भटकि आइयो छी भ्रांत।

चन्द्रकेर विश्राम राका बालिका सन कांत,
विजयिनी सल लागि रहलै माधुरी सन शांत।
पद्दलित सन श्रांत पथसन सतत आक्रांत,
शस्य श्यामल भूमिमे जनु हेड़ा गेल अशांत।

आह! तेहने सन हृदयकेर बनि रहल परिणाम,
पाबि रहलहुँ आइ देने तोरे सँ निज काम।
आइ लऽ ले चेतनाकेर ई समर्पण दान,
विश्वनारी! नारि सुन्दर जड़ जगतकेर मान।

धूम लतिका सन गगन तरु पर नहि चढ़ै छै दीन,
दबल शिशिर, निशीथमे ओस जहिना नित नवीन।
झुकि चलल संकोचमे ओ सुकुमारताकेर भार,
लदि रहल से पाबि पुरुषक नरम नत उपचार।

आर ओ नारीत्वकेर जे मूल मधु अनुभाव,
आइ लागल हँसि रहल आंतरिक सुख स्राव।
मधुर ब्रीड़ा मिश्र चिन्ता संग धय उल्लास,
हृदयकेर आनन्द कुहकल करय लागल रास।

खसि रहल छल पपनी निच्चाँ खसल नासिका नोंक,
भ्रू लता छल कान्ह समायल नहि कोनो छल रोक।
स्पर्श लज्जा करय लागल ललित कर्ण कपोल,
फुजल पुलक कदंब सन जनु भरल गदगद बोल।

किन्तु बाजल, की समर्पण आइकेर हे देव,
बनत की चिरबंध नारिक हृदय हेतु सदैव।
आह हम दुर्बल, कहू की लऽ सकब हम दान,
ओ जकर उपभोग करबामे विकल हो प्राण।

卐

लज्जा

कोमल नव पल्लव आँचरमे नव कलिकाकेर नहि दृष्टि जेना,
गोधूलिक मद्धिम बेरामे आभास दग्ध नहि होइ तेना।
सुन्दर स्वप्नक बिसरल छविमे उन्माद मनक दपदप जहिना,
जलधार बीच फूटै बुल्ला बनि नव-नव रूप धरल तहिना।

तहिना ओ माया सँ आवृत आंगुर मधु ठोरक बीच लेने,
माधवकेर सरस कुतूहलमे लोचन जल पूरित प्रीति धेने।
बाजू के छी लतिका नूतन बढ़ि आबि रहल छी लग लागल?
भुजपाश प्रयास मिलन सत्वर आलिंगनकेर जादू तागल।

कोहि इंद्रजालकेर फूल सनक कुमकुम सुहाग अनुराग भरय,
हो माथ खसेने तागि रहल माला लागल मधु धार ढरय?
पुलकित कदंबकेर मालासन पहिराय रहल छी अंतरमे,
झुकि गेल डारि मनकेर लागल अपने फल भरबाकेर डरमे।

वरदान सदृश मंडित शोभित आँचर बीनल श्यामल सुन्दर,
ओ आँचर कतबा हल्लुकसन आकर्षण प्रियगर हो अंबर।
सब अंग मोम निर्मित कोमल कोमलता लचपच डोलि रहल,
हम भेलहुँ संकुचित अपनहिमे परिहास सरस स्वर हास भरल।

मधुता मुँहकेर बनि मंद हँसी बनि रहल दृगक कोणाकर्षण,
प्रत्यक्ष दृश्य जे किछु सद्यः बनि जाइत अछि स्वप्नक दर्पण।
स्वप्निल कलरवकेर मंद हास निःसृत आँखिक शोभा भावन,
अनुराग राग गतिमान पवन लागल देखै ओ ऋतु सावन।

अभिलाशा अपनहि यौवनमे उत्थित ओहि सुखकेर स्वागत लय,
जीवन भरिकेर बल वैभव सँ सत्कृत कयने दूरागत धय!
आधार बनेने रज्जु किरण ससरैलय साधन हेतु प्रबल,
आनंद शिखर प्रतिगामी हम रसमे डूबि रहल पल-पल।

छूबामे द्वन्द्व देखबामे संकोच पलक दृग झाँपि रहल,
कलरव परिहास भरल गुंजन ठोरक सीमा धरि आबि रुकल।
रोमावलि दृगकेर चंचलता कहि रहल कथा अंतस प्रियगर,
भौंहक कारी-कारी पाँती प्रेमांकन अछि रुचिगर-हियगर।

के अहाँ? हृदयकेर परवशता? सबटा स्वतंत्रता छीनि रहल,
स्वच्छंद सुमन ओ खिलल रहय जीवन वन सँ जे बीछ रहल।
साँझक लालीमे हँसि-हँसि ओकरे अवलम्बन लेने सन,
छाया प्रतिमा गुनगुना उठल श्रद्धाकेर उत्तर देने सन।

एतबा ने चमत्कृत हो बाले! नोँ अपन मनक उपकार करह,
नहि कथा हमर टारैवाला ठहरह किछु सोच विचार करह!
अंबर-चुंबी हिमकण निर्झर कोलाहल मधुता डेग धेने,
विद्युत केर प्राणमयी धारा बहि रहल मदक जे वेग लेने!

जे गूँजि रहल पुनि नस-नसमे मूर्च्छा समान कंपन रुचिगर,
आँखिक साँचा सँ बहरावै रमणीय रूप निःसृत हियगर।
नयनक श्यामल खद्धामे जे रस घन लागल पसरि गेल,
ओ किरण प्रभा ओहि अंतरमे शीतलता सौंसे बरसि गेल।

ऋतुपतिकेर भरल हिलोर हुअय गोधूलिक हो ममता सुन्दर,
जागरण भोरकेर हँसी बनल मध्याह्नक ओज यथा अम्बर।
जे चकित भेल सहसा निकलल अपने प्राचीकेर आँगन सन,
ओहि नवल चन्द्रिकाकेर आभा छछलै तरंग मन भावन सन।

जकरा अभिनन्दनमे पसरल नव पुष्पक सुन्दर दल कोमल,
मकरंद अपन कुंकुम देने स्वागतमे चन्दनयुत अछि जल।
कोमल किसलय मर्मर ध्वनि सँ जयघोष जकर छै गाबि रहल,
मनक सुख-दुख मिलि जकरामे उत्सव आनन्द मनाय रहल।

उज्ज्वल वरदान चेतनाकेर सौन्दर्य बोध सँ सब जानल,
एहिमे अनन्त अभिलाषाकेर सब स्वप्न रहल लागल जागल।
प्रतिपालक हम ओहि यौवनकेर गरिमामय महिमा सिखा रहल,
ठोकर जे लागय वाला अछि ओकरा धीरे सँ बुझा रहल।

हम देव सृष्टिकेर रतिरानी अपनहि अनंग सँ वंचित भय,
परित्यक्त सनक हम मूर्ति बनल दीना अतृप्त दुख संचित कय।
अवशेष बनल छी अनुभवमे असफलताकेर प्रतिरूप बनल,
लीला विनाश केर खेदमयी अवसाद भरल श्रम दलिता छल।

हम रतिकेर प्रतिकृति लज्जा छी-हम शीलक कथा पढ़ाबै छी,
मद भरल सुघर पग नूपुर सन हम लोटि लपेटि मनाबै छी।
लाली बनि सरस कपोलक हम आँखिक काजर सन छी प्रियगर,
जागै छी मनक मरोड़ बनल बनि कुंचित लटकेर छवि सुन्दर।

चंचल किशोर सुन्दरताकेर रखवारीमे हम लागल छी,
हम ओ हल्लुक घर्षण छी जे कानक लाली बनि जागल छी।
हँ ठीक! मुदा तोँ कह एतबा हमरा जीवनकेर पथ अछि की?
एहि निविड़ निशामे जीवनकेर आलोकमयी रेखा अछि की?

ई भान भऽ रहल आइ सुनू हम दुर्बलतामे नारी छी,
देहक सुन्दर कोमलता धय हम सब सँ सुनिऔ हारल छी।
तैयो मन ई शिथिल किए-ई स्वतः एना की होइत अछि,
घनश्याम खंड सन लोचनमे किए अश्रु चलि आयत अछि।

सर्वस्व समर्पण करबाकेर विश्वास महातरु छायामे,
चुपचाप परड़ रहलो पर की ममता जागै छै मायामे?
छायापथमे तारक द्युतिसन झिलमिल करबाकेर मधु लीला,
अभिनयमे लागल मन तैयो कोमल स्वभावतः श्रम शीला?

बलहीन भेल छी डोलि रहल पैसल मानसकेर अंतरमे,
हम जागय नहि चाही कखनहुँ स्वप्नक सुन्दरसन उपवनमे।
नारी जीवनकेर रूप केहन वैकल्य हृदयमे भरने जे,
अस्फुट रेखाकेर सीमामे आकार कलाकृति रखने से।

हम रुकि-रुकि क्रमशः ठहरै छी तैयो नहि सोचल होय कहाँ,
पागल सन कोनो अंतरमे बक-बक अनुदिन अछि रोग जकाँ।
हम तौलेकेर आयास करी आ स्वयं तुलापर वैसि रहल,
आलिंगनमे तरुलता सदृश हम झूलै छी लाचार बनल।

एहि अर्पणमे किछु आर ने छै उत्सर्ग मात्र झलझल करैत,
दऽ दऽ सबटा किछु ली नहि से, मनमे विचार ई छै बहैत।
की कहल अहाँ ठहरू नारी! संकल्प अश्रुजल मंत्र जेना,
तोँ दान कऽ चुकल छेँ पहिनहि जीवनकेर सब स्वर्णिम सपना।

तोँ नारी छह बस श्रद्धाटा-विश्वास रजत नग पगतलमे,
पीयूष स्रोत सन बहल करह जीवनकेर सुन्दर समतलमे।
विजय देवकेर, हार दानवक समर होइत रहलै एहिना,
संघर्ष सतत उर अंतरमे से छलै विरुद्ध नित्य तहिना।

नोरक भीजल आँचर पर ई सब किछु तोरा राखय पड़तह;
तोरा निज स्मित रेखा सँ ई संधि पत्र लिखहे पड़तह।'

卐

कर्म

कर्मसूत्र संकेत सदृश छल सोम लता तखन मनु कें,
डोरि चढ़ल सन खींचल तहिना फेरो ओ जीवन धनु कें।
भेल अग्रसर ओही मार्गमे छुटल तीर सन फेरो ओ,
यज्ञ-यज्ञकेर कटु पुकार सँ रहि सकला नहि थिर ओ।

भरल कानमे कथा कामकेर मनमे नव अभिलाषा,
सोचय लगला मनु अनुरंजित उमड़ि रहल छल आशा।
ललक छलै कहि ललित लालसा सोमपानकेर प्यासल,
जीवनकेर ओहि दीन विभवमे ओ छल जेना उदासल।

जीवनकेर अविराम साधना धय उत्साह ठाढ़ छल,
जहिना उन्टा पवनमे नौका गहिर पानिमे पहुँचल।
श्रद्धाकेर उत्साह वचन, फेर काम प्रेरणा मिलि कऽ,
भ्रांत अर्थ बनि आगाँ आयल बनल ताड़ छल तिलकऽ।

छै सिद्धांत बनैत प्रथमतः पुनः पुष्टिकारक होयत,
बुद्धि ओही ऋण कें सब सँ लय सदिखन ताहि भरैत।
मन जखने निश्चय करैत अछि ग्रहण करै छै मत अप्पन,
बुद्धि दैव-बल सँ प्रमाणकेर फड़िछाबै छै स्वप्न सुमन।

पवन सएह हिलकोर उठाबय सएह तरलता जलमे,
प्रतिध्वनि सएह अंतरतमकेर पसरि जाइत नभ तलमे।
करय समर्थन ओहिकेर सदखनि खंडन-मंडन धय पीढ़ी,
ठीक सएह अछि सत्य! सही से उन्नति सुखकेर सीढ़ी।

आर सत्य ई! शब्द एकटा कतबा गहन बनल ई?
मेधाकेर क्रीड़ा-पंजरकेर पोषित कीर रहय ई!
बात-बातमे तोहर खोजकेर रटसन की लागल छै,
किन्तु स्पर्श सँ तर्क हाथमे रुकल ने की भागल ई छै।

असुर पुरोहित ओहि विप्लव सँ बाँचल ओ भटकैत,
ओ किलात आकुलि छलाह जे पीड़ा बहुत सहैत।
देखि-देखि मनुकेर पशु, जे व्याकुल-व्यग्र छलीह,
हुनकर आमिष लोलुप दृग सँ किछु किछु कहै छलीह।

किए किलात! खा-खा तृण कतबा आर कहू हम जीवी,
कहू कहाँ धरि देखी हम जीवित पशुक शोणित पीबी।
की कोनो उपाय नहि-एकरा हम नहि आरो खाबी?
बहुत दिनक बादो तऽ कखनहुँ चैनक बीन बजाबी।

आकुलि तखन कहल ई, नहि देखै छी, संग ओकर,
सरल मृदुलताकेर, ममतामय छाया हँसै जकर।
अंधकार कें दूर भगाबय ओ आलोक किरन सन,
माया हमर हेरा जाइत अछि जै सँ हल्लुक घन सन।

तैयो चलू आइ किछु करबै तखन स्वस्थ हम रहबै,
अथवा जे सुख-दुख आओत से सहज भेल सब सहबै।
अही भाँति दुनू विचार कय कुंज द्वार पर आयल,
बैसल जतय सोचमे मनु छथि मनमे ध्यान लगायल।

कर्म यज्ञ सँ जीवनकेर भेटत सपना सबहक स्वर्ग,
अही विपिनमे लोकक खिलतै आशा-कुसुम सवर्ग।
मुदा कहू के बनत पुरोहित? आब प्रश्न ई नव जागल,
कोन रूप सँ यज्ञ करी ई कहू किम्हर ई पथ भागल!

श्रद्धा! पुण्य प्राप्य अछि हम्मर ओ अनंत अभिलाषा,
एहन बेरमे एहि निर्जनमे ककरा अछि हम्मर आशा।
कहल असुर मित्रादि बनौने मुँह अप्पन गढ़ुएने,
जकरा मादे यज्ञ होएत ई हम प्रेषित छी हुनके।

करब अहाँ की यज्ञ? फेर ई ककरा ताकि रहल छी,
कहू पुरोहितकेर आशामे कतबा कष्ट सहल छी।
एहि जगतीकेर प्रतिनिधि जेहि सँ प्रगट राति आ भोर,
'मित्र वरुण' जिनकर छाया छै ई आलोक अन्हार ने थोर।

ओ सब पथ-दर्शक होअथु पूरत सबटा विधि हम्मर,
चलू आइ फेरो वेदी पर फेरो ली अग्निक परिकर।
परंपरागत कर्मकेर ओ कतबा सुन्दर क्रम लागल,
जीवन-साधन ओझरायल अछि जैमे बेर सुखक बान्हल।

जेहिमे प्रेरणामयी सदृश संचित कतबा छै कृति सब,
पुलक भरल सुखदायक बनि कऽ मादक छै ओ स्मृति सब।
साधारण सँ किछु अतिरंजित गतिमे मधुर त्वरा सन,
उत्सव लीला, निर्जनताकेर कहय उदासी बनल स्पृहा मन।

किछु विशेष तरहक कौतूहल होयत श्रद्धो कें निश्चित,
प्रसन्नता सँ नाचि गेल मन नूतनताकेर लोभ स्वगत।
यज्ञ भेल सम्पन्न तैयो धधकि रहल छल ज्वाला,
दारुण दृश्य! खूनक छिटकी अस्थि खंडकेर माला।

वेदीकेर निर्मम प्रसन्नता, पशुक छलै कातर वाणी,
बनल घिनाओन भूमि भाग मिलि कुत्सित कोनो प्राणी।
सोम पात्र छल भरल, पुरोडाश सेहो छल लग राखल,
श्रद्धा छली ने ओहि ठाँ, तखने सुप्तभाव मनुकेर जागल।

जकरे छल उल्लास बढैलय सएह विमुख भऽ बैसल,
ई सब किए फेर? दीप्त वासना लागल गरजय ऐंठल।
जैमे जीवनकेर संचित सुख सुन्दर साकार बनल छै,
हृदय खोलि से कोना कही-ओटा अप्पन संबल छै।

सएह प्रसन्न ने छै? रहस्य एहिमे किछुओ हित होयत,
आइ सएह पशु मरिओ कऽ की सुखमे बाधक होयत?
श्रद्धा रूसि गेल तऽ की फेरो ओकरा मनबय पड़तै,
अथवा मानि स्वयं ओ कहतै मार्ग कोन चलय पड़तै।

पुरोडाशकेर संग सोम रस पीबै रहथिन मनु बैसल,
प्राणक रिक्त अंश भरबामे मादकता हियमे पैसल।
संध्याकेर मद्धिम छायामे शैल शृंगकेर छल रेखा,
अंकित छल दिगंत अंबरमे लेने धूसर शशि-लेखा।

श्रद्धा अपन शयन गुहामे दुखी भेल घूरल आयल,
मनमे धयने भार विरक्तिक अंतर मन सँ खौँझायल।
सूखल काष्ठ संधिमे पातर अनल शिखा उद्दीप्त बनल,
ओहि धुध्धुर गृहमे आभा सँ तामस कें ओ खाय रहल।

किन्तु कोनो क्षण मिझा जाइत पाबि शीत समीरक वेग,
कखनो फेर जरै लागै छल कठिन अग्निकेर आवेग।
कामायनी पड़ल छलै निज कोमल चर्म बिछौने,
लागल श्रम विश्राम कऽ रहल मृदु आलस्यक अयने।

निकरि रहल तरेगन क्रमशः हरिनक हर बिधु रथमे,
मन्थर गति सँ जगत चलै छल अपने ओहि ऋजु पथमे।
आँचर रात्रि खसौने अप्पन आभा किरन पसारि,
छायामे जकरा सुख सबटा दैत वेदना पीड़ा मारि।

उच्च शैल श्रेणी पर हँसैत प्रकृति चंचला बाला,
धवल हँसी पसारने सबतरि निज इजोतकेर मधुमाला।
जीवनकेर उद्दाम लालसा ओझरायल जेहिमे क्रीड़ा,
भरिगर सन उन्माद एकटा मन मथनी लागल पीड़ा।

मधुर विराग भरल आकुलता, घेरल हृदय गगनमे,
अन्तर्दाह स्नेहकेर तैयो होइत छल ओहि मनमे।
ओ असहाय आँखि खुजय आ बंद होइ भीषणतामे,
आइ स्नेहकेर पात्र ठाढ़ छल स्पष्ट कुटिल कटुतामे।

केतबा दुख जे हम चाही ओ किछु आर बनल हो,
मानस-चित्र हमर से खींचब सपना सन हो सुन्दर ओ।
जागि गेल अछि दारुण ज्वाला एहि अनंत मधुबनमे,
कोना मिझेतै कहत भला के एहि नीरव निर्जनमे?

ओ अनंत अवकाश नीड़ सन दुखगर जेहिकेर हो आवास,
सएह वेदना सजग पलकमे भरने आलस बीच प्रकाश।
काँपि रहल छै चरण पवन केर-पसरल नीरवता सन,
घुलल जा रहल दिशा-दिशाकेर नभमे श्यामलता सन।

अंतरतमकेर बढ़ल पिपासा, संग विकलता बढ़ि जाइत अछि,
ई युगीन असफलताकेर अवलंब लेने चढ़ि जाइत अछि।
विश्व विपुल आतंक त्रस्त छै अपनहि ताप विषम सँ,
पसरि रहल अछि घोर नीलिमा अन्तर्दाह परम सँ।

उद्वेलित छै उदधि, लहरि सब लोटि रहल व्याकुल सन,
चक्रवालकेर धुध्धुर रेखा अपने आगि सँ पाकल सन।
सघन धुआँ मंडलमे केहि विधि नाचि रहल ई ज्वाला,
तिमिर काढ़ने फन हो पहिरल व्याल स्वयं ओ माला।

भूतलकेर समस्त क्रंदन ई विषमय आर विषमतामय,
पीड़ादायक कपट आंतरिक अति दारुण निर्ममता भय।
जीवनमे एहि गहन चोट सँ आर बढ़ै छै ई पीड़ा,
कलुष चक्र सन जे नाचै छै बनल आँखिकेर ओ क्रीड़ा।

स्खलन चेतना कारक कहबै त्रुटि भारी मानल सन,
आर ताहि सँ बढ़ि जाइत अछि नव-विषाद जानल सन।
आर सएह अपराध जगतकेर, दुर्बलता कहि माया,
धरणीकेर वर्जित मादकता संचित तमकेर छाया।

नील गरल सँ भरल जेना ई चन्द्र-कपाल धेने हो,
अही निलीमित तारागणमे कतबा शांति पिबय ओ।
अविरल विश्वक विष पिबैत की सृष्टि जिअत ई फेरो सँ,
कहू अमर शीतलता एतबा भेटै ई तोरा कोम्हर सँ।

अचल अनंत नील लहरी पर बैसल आसन द्वारे,
देव! अहाँके निर्झर श्रम कण टपटप देहक मादे।
एहि पदमे की कर्म कुसुमकेर ओ अंजलि दान करत की,
चलल आबि रहल छाया पथमे लोक पथिक थाकल ई।

किन्तु कहाँ ओ दुर्लभ हुनकाँ स्वीकृति मिलल अहाँकेर,
घुरबै लय कहि विवश छला जहिना पयर भिखारी केर।
प्रखर विनाशशील नर्तनमे विपुल विश्वकेर माया सन,
रहि रहि प्रकट भेल ओ बनल नवीना काया सन।

सतत पूर्णता पाबै खातिर चूक करै मे सब लागल की?
जीवनमे यौवन अनबालय जीवि-जीवि की मृत लय ई?
ई व्यापार महागतिशाली रोकने कहाँ रुकल ई छै?
महाविनाशक एहि झंझामे मंगल मौन हँसै की छै?

ई विराग संबंध हृदयकेर केहन कहू मानवता!
प्राणी कें प्राणी के प्रति बस रहै शेष निर्ममता!
जीवनकेर संतोष अन्यकेर बनि रोदन किए हँसै छै?
गोट-गोट विश्राम प्रगतिकेर परिकर सन किए कसै छै?

दुर्व्यवहार एककेर केहि विधि दोसर कहू बिसरि पायत,
कहू उपाय! करत की ओ जे गरल अमृत भऽ जायत।
जागि गेल छल तरल वासना मिश्रित छल मादकता,
मनु कें आब ओतय अयबा सँ यौवन भला कोना रोकितय।

खुजल सुकोमल बाँहि कान्ह सँ भेटै छल आमंत्रण प्रिय,
उन्नत वक्ष भरल आलिंगन बाटै छल स्वर लहरी हिय।
नींचा भेल उठै छल रहि-रहि पूरि रहल छल साँस भरल,
जीवनकेर बनि ज्वार उठल कहि चन्द्रमुखीकेर हास ढ़रल।

जागृत छल सौन्दर्य भने कहि सूतै छल ओ सुकुमारी,
रूपचन्द्रिकामे उज्ज्वल छल आइ निशा सन नारी।
ओ मांसल परमाणु किरण सन आभा छलै पसारैत,
अलकक डोरीमे जीवनकण ओझरायल नींक लगैत।

विगत विचार सभक श्रम सीकर बनल छलै सुन्दर मोती,
मुखमण्डल पर करुण कल्पना अवगुंठन मुँहक प्रमोदी।
छूबै छला मनु आर कंटकित होमय लागल ओ बेली,
स्वस्थ व्यथाकेर लहरि सदृश छल अंग लता हठ खेली।

ओ बताह सुख एहि धरतीकेर आइ विराट बनल छल,
अंधकार मिश्रित प्रकाशकेर ओ विस्तार तनल छल।
जागल छली कामायनी बिसरल सुधि-बुधि चेतनता,
मनोभाव आकार बनाबय बिगड़ि जाइ ओ पुनः तथा।

जकरे हृदय समीप रहल से दूर ततेक भऽ जाइत अछि,
तामस ओकरे पर होइत अछि जे संबंध कहाइत अछि।
प्रिय कें तैयो गौण केने ओ मनकेर मायामे ओझरायल,
प्रणय शिला प्रत्यावर्त्तनमे घुरा देत ओकरा लागल।

बरखामे मारुति कम्पित पल्लव सन कोमल कर कें
हाथ पकड़लनि श्रद्धाकेर ओ, लग सँ ओ धीरे सँ।
वाणीमे अनुनय, लोचलमे छल उपालंभकेर छाया,
बजला केहन कहू ई माननि अद्‌भुत छै मानव-माया!

स्वर्ग बनौने जे छी हम–ओकरा ने एना विफल करहक,
सुनह अप्सरे! ओहि अतीतकेर गीत मधुरमय कहहक।
एहि निर्जनमे ज्योति भरल अछि विधुयुत नभकेर निच्चाँ,
मात्र अहाँ-हम आर एतय के? करू नयन किछु ई उच्चा।

आकर्षण सँ भरल विश्व ई खाली भोग्य हमर अधिकार,
जीवनकेर दुनू किनारमे बहय वासनामय प्रिय धार।
भ्रमक, अभावक एहि जगतीमे ओकरे छै सब आकुलता,
जहि क्षण बिसरि सकी हम अप्पन बलगर ई चेतनता।

सएह स्वर्गकेर बनि अनंतता भेल निमग्न हँसै छै,
टूटा बून धेने जीवन रस बरबस प्रेम बहै छै।
देव लोकनि कें अर्पित मधु ई एहि मदिरा कें अधर धरू,
मादकता झूला पर प्रेयसि! अबिऔ मिलि कऽ पेंग भरू।

श्रद्धा जागि रहल छल तैयो पसरल छल मादकता,
मधुर भाव ओकरा तन-मनमे भरने निज रस प्रियता।
बाजल सहज बनौने मुद्रा–ई सब की जे अहाँ कहल?
आइ एखन ई कोन भाव धय आवेशक छी धार बनल!

काल्हि भेल यदि परिवर्तन तऽ कहू भलाके बाचत,
पता ने क्यो संगी बनि नूतन आहुति यज्ञ कराओत।
आर फेर बलि होयत ककरो कोनो देवक खातिर,
कतबा धोखा! ओहि सँ बढ़िया सुखक अपन ई चादरि।

ई प्राणी जे बाचि गेल सब एहि अचला धरतीकेर,
कहू ने किछु अधिकार हुनक की हल्लुक कण ओ परतीकेर।
मन की होयत प्रतिफल तोहर उज्ज्वल नव मानवता?
जैमे सब किछु लेब जरूरी बचल हाथ की शवता।

तुच्छ ने छै अपनो सुख श्रद्धे! ओकरो किछु निश्चित अस्तित्व,
दू दिनकेर एहि लघु जीवनमे ओही चरम सुख सभक प्रभुत्व।
इन्द्रियकेर अभिलाषा जतबा सतत सफलता सँ आबय,
जतय हृदयकेर तृप्ति विलासिनि मधुर-मधुर किछु गाबय।

रोम हर्ष हो ओहि प्रकाशमे मृदुमय हँसी खिलय तऽ,
आशा पर ई सांस निछाओर से ओ हृदय मिलय तऽ।
विश्व माधुरी जकरा सम्मुख मुकुर बनल राजित हो,
ओ अपन सुख स्वर्ग ने कथमपि! कथ्य अहाँकेर की भासित ओ?

जकरा ताकैमे हम लागल एहि हिमगिरिकेर अंचलमे,
सएह कमी हँसि रहल स्वर्ग बनि एहि जीवन चंचलमे।
वर्तमान जीवनकेर सुख योग जतय होइत अछि,
वंचक भाव अभाव किया से प्रकट ततय होइत अछि।

किन्तु सकल कृतिकेर निज सीमा हमरे सँ परिपूर्ण बनल,
पूर्ण कामना होय, होय प्रयास ने ई असफल।
बनल सचेतन सन किछु श्रद्धा सविनय सन किछु बाजल,
बचल जानि ई भाव, सृष्टिकेर आँखि फेर सँ जागल।

भेद बुद्धि निर्मम ममता केर, सोच बनल ई होयत,
प्रलय पयोनिधिकेर लहरी सब घूरल निश्चित होयत।
अपनेमे भरने सब किछु कोनाक व्यक्ति करैत विकास,
ई एकान्त स्वार्थ भीषण अछि करतै अपने ओ नाश।

अनकर हँसी देखि हँसिऔ मनु आर सुखक किछु मान करू,
अपने सुख कें विस्तृत कयने दुनिया कें सुखमान करू।
रचना मूलक सृष्टि यज्ञ ई यज्ञ-पुरुषकेर जे सब छै,
जीवन सेवा भाग हमर ओ वर्धमान जकरा लय छै।

सुख कें अपनामे सीमित कय क्लेश आन लय छोड़ब,
इतर जीवकेर पीड़ा बुझने मुँह अप्पन हम मोड़ब।
ई मुद्रित नव पुष्प पंखुड़ी सौरभ रस अपनहि भरने,
सरस ने हो मकरंद विन्दु सँ–सार्थकता की रहने।

सूखब, झड़ब तखन कुचायब तखने सौरभ सब पाओत,
फेर गंध आमोद कतय सँ बसुधा पर आओत।
सुख तँ छै संतोष मात्र लय संग्रह मूल ने ई छै,
एहिमे दिव्य प्रदर्शन जकरा दोसर देखै से छै।

निर्जनमे एकाकी भेने मिलत प्रमोद तोरा की?
नहि एहि सँ आन हृदयकेर कोनो सुमन खिलत ई।
सुख समीर पौने ओ–किए ने हो एकान्त तोहर,
वर्धित तखने सीमा संसृति, मानवताकेर रूप मुखर।

हृदय भेल छल उत्तेजित सन, कथा-व्यथा सब कहने,
श्रद्धाकेर छल ठोर सुखायल मनक आगि कें सहने।
ओम्हर सोमरस पात्र धेने मनु देखि समय ओ बजला,
श्रद्धे! पिबिऔ एकरा सुनिऔ खुजत बंध बुद्धिक पिअला।

करब सयह जे अहाँ कहै छी असगर सत्यक सुख की,
ई मनुहार! रुकत नहि प्याला पिअबा सँ कहि मुख की?
आँखि प्रियक दृगमे छल डूमल अरुण अधर छल रसमे,
हृदय काल्पनिक सुखी विजयमे चेतनता नस नसमे।

छल वाणीकेर ओ प्रवंचना हृदय सभक शिशुता कें,
खेल खेलाबय, बिसराबय जे ओहि निर्मल विभुता कें।
जीवनमे उद्देश्य लक्ष्यकेर प्रगति दिशाकेर ओहि पलमे,
बदलि सकैछ संकेत मात्र सँ लक्ष्य मार्ग जे छलमे।

उएह शक्ति अवलंब मनोहर निजता मनु कें दैत रहल,
जे अपनहि अभिनय सँ मन कें सुखमे ओझराबैत चलल।
श्रद्धे होयत चन्द्रशालिनी ई भव रजनीकेर भीमा,
अहाँ बनू एहि जीवनकेर सुखक हमर सुन्दर सीमा।

लज्जाकेर आवरण प्राण कें झाँपि लेत ओ तम सँ,
केने अकिंचन ओकरा अलग करै ओ 'अपन-आन' नियमन सँ।
चोटिल छल आनंद, इएह बाधा छै, एकरा दूर भगावह,
सानुकूल सुख हुअय अपन लय मिलय दहक मिलि जाहक।

आर पुनः व्याकुल ओ चुम्बन खौले छल शोणित ओहि सँ,
शीतल प्राण लेसि जाइत अछि तृषा तृप्तिकेर कारण जेहि सँ।
ओहि एकान्त खोहमे लागल जरै छलै दू काठ सटल,
मिझा गेल रहि अग्निशिखा से, जगला पर सुख स्वप्न बनल।

卐

ईर्ष्या

पल मात्रकेर ओ चंचलता हेरा देल हृदयक स्वाधिकार,
श्रद्धा केर सम्प्रति मधुर निशा पसराबै निष्फल अंधकार।
मनु कें मृगया छोड़ि बचल नहि आब कोनो बाँचल सन काज,
लागल छल शोणित ओहि मुँहमे हिंसा सुख साधन निर्व्याज।

हिंसेटा नहि आरो किछुओ ताकि रहल छल मन अधीर,
अपन प्रभुत्वक सुख सीमा बढ़ि रहल जेना अवसाद चीरि।
जे किछु मनु कें करतल गत छल ओहिमे शेष ने किछु नवीन,
अरुचिगर बनल विनोद श्रद्धाकेर ओ लागै छल आब दीन।

उठि रहल छलै मन सँ सदैव दुर्ललित लालसा जे कि कांत,
ओ इन्द्रचाप सन झिलमिल बनि दबि जाय स्वतः भऽ स्वयं शांत।
निज उद्गमकेर मुँह बंद केने कतबा धरि सूतल शिथिल प्राण,
जीवनकेर चिर चंचल पुकार कानय कतबा कहि कतय त्राण।

श्रद्धाकेर प्रणय आर ओहिकेर छल आरम्भिक सहज अभिव्यक्ति,
जैमे व्याकुल आलिंगनकेर अस्तित्व कोनो नहि कुशल सूक्ति।
भावना भरल ओ स्फूर्ति ने छल नव-नव स्मित रेखामे विलीन,
अनुरोध ने छल, उल्लास ने से कुसुमोद्गम सन किछुओ नवीन।

आवै वाणीमे नहि कखनो ओ आकर्षण लीला हिलोर,
जैमे नूतनता नृत्यमयी इतराइत छल चंचल मरोड़।
देखल जखने ओ बीनि रहल बाली धानक नहि छलै श्रांत,
अथवा अन्नक संग्रह कयने ओ लागय कखनो कहाँ क्लांत।

बीजक संग्रह संग ओम्हर चलि रहल छलै टकुरीक गीत,
सब किछु लेने बैसल अछि, सोचल अस्तित्व भेल हमर अतीत।
घूरल छल मृगया थाकल सन देखबामे आयल गुफा द्वार,
आगाँ आर ने बढबाकेर, इच्छा नहि-मन कयलक विचार।

मृग छोड़ि ओतय फेंकल पिनाक मनु बैसि रहल धए मन शरीर,
सब अस्त्र-शस्त्र छिड़िआयल छल, धनु, प्रत्यंचा ओ शृंग तीर।
पसरल श्यामलता साँझ लेने पश्चिममे लागल घनीभूत,
मनु एखनहुँ धरि नहि घुरला चलि गेला कतय आखेट हेतु।

किछु सोचि रहल छल ओ एहिना करतलमे टकुरी घूमि रहल,
श्रद्धा किछु छली अचेतन सन छल केश ठेहुन कें चूमि रहल।
केतकी गर्म सन पीअर मुँह दृगमे आलस्यक भरल रेख,
किछु कृशता नवल लजायल छल कंपित लतिका सन सटल देह।

मातृत्व बोझ सँ अधोमुखी भऽ पीन पयोधर बान्हल आइ,
कोमल कारी ऊनक पट्टी सुन्दर रुचिगर आँखि सोहाइ।
स्वर्ण बालुका कण सन बहलै यमुनाकेर कहि धार हुलास,
स्वर्गगंगामे इन्दीवरकेर पाँति कोनो कऽ रहल हास।

कटिमे लपटायल वस्त्र नवल हल्लुक सन बीनल वर्ण नील,
असहज छल गर्भ मधुर पीड़ा सहने जकरा जननी सलील।
श्रम बिन्दु बनल सन झलकि रहल भावी जननीकेर सरस गर्व,
बनि कुसुम खसै छल धरती पर आयल समीप छल महापर्व।

मनु देखल जखनहि श्रद्धाकेर ओ सहज खेद सँ भरल रूप,
अपने इच्छाकेर दृढ़ विरोध जैमे ओ भाव ने छल अनूप।
ओ किछुओ नहि बजला, चुप मुँह देखय लगला साधिकार,
श्रद्धा किंचित हँसै छली बूझि जेना हुनकर विचार।

दिन भरि बौआइत रही अहाँ, श्रद्धा बजली भरि मधुर स्नेह,
ई हिंसा एतबा रुचिगर छै–जे बिसरावै छै देह-गेह।
हम एतय असगरे पथ देखल सुनलहुँ दूरक पदध्वनि नितांत,
मृगकेर पाछा भागल-भागल वनमे रहलहुँ अहाँ अशांत।

ढरि गेल दिवस पीअर-पीअर तोँ रक्तारुण बनि रहल घूमि,
देखह खोतामे विहग युगल बच्चा सब केँ छै रहल चूमि।
ओहि सभक गेहमे कोलाहल-अछि सून हमर ई गुहा द्वार,
तोरा की एहन अभाव कहह भागै छऽ जै लय अन्य द्वार?

'श्रद्धे तोरा किछु कमी ने छै–तैयो हम देखै छी अभाव,
बिसरल सन कोनो मधुर वस्तु जहिना करैत वैकल्य घाव।
चिरमुक्त पुरुष ओ आब केहन अवरुद्ध सास लेतै निरीह!
गतिहीन पंगुसन पड़ल-पड़ल खसि-खसि जहिना बनि गेल डीह!

जखने जड़ बंधन बनल मोह कसि लेत प्राणकेर मृदु शरीर,
आकुलता आर जकड़बाकेर तोड़य तखने ग्रन्थि अधीर।
हँसि बजला ओ, निकलल ओहि सँ मधु निर्झर सन ललित गान,
हो गान भरल उल्लास सनक जे झुमादिय बनि मधुर प्राण।

आब कहाँ ओ आकुलता छल, जहिमे सब किछु बिसरि जाय,
आशाकेर कोमल तन्तु सदृश तोँ नाचि रहल टकुरी कहाय।
से किए की भेटहि नहि तोरा शावककेर सुन्दर मृदुल चर्म?
तोँ बीज चुनै छल किय कहह? नहि शिथिल हमर आखेट कर्म।

ओहि पर ई पीअर रंग केहन केहि लेल बुनब ई श्रम सखेद,
ई ककरा लेल बताबह तोँ–की एहिमे कोनो गुप्त भेद?
अपने रक्षा करबामे चलि जाय तोहर यदि अपन अस्त्र,
से सब किछु तऽ हम जानि सकल हिंसक सँ रक्षा करय शस्त्र।

ओ द्रोह ने करबाकेर विषय जे पालन-पोषण लेल सहेतु,
पशु सँ यदि हम किछु पैघ सुनू तऽ भवजल निधिमे बनी सेतु।
हम ई कथमपि नहि मानब सुख सहज लब्ध छूटै एहिना,
जीवनकेर एहि युद्ध बीच हम ठकल जाइ बनि विफल जेना।

कारी लोचनकेर तारामे, हम देखी अप्पन बिम्ब धन्य,
हमरो मानसकेर मुकुर रहय प्रतिबिम्बत तोरे सँ अनन्य।
श्रद्धे! ई नव संकल्प ने छै–जीवन ई गति सँ लघु अमोल,
हम ओकरा निश्चित भोगि चली जे सुख चंचल सन डोलि रहल।

देखलहुँ कखनो ई अहाँ ने की सब स्वर्ग-सुखक ओ प्रलय नृत्य?
फेर नाश आर चिरनिद्रा छै तैयो एतबा विश्वास सत्य?
ई चिर प्रशांत कल्याणक फेर किए अभीप्सा रहल जागि?
भऽ रहल किए संचित सनेह केहि पर एतबा अनुराग-लागि?

एहि जीवनकेर वरदान, दिऔक रानी हमरा अप्पन दुलार,
मन करय तोहर हमरे चिन्ता राखय ओहिमे प्रियता पुकार।
बनतै सुन्दर विश्राम हमर बनि रहल जेना मधु विश्व कोनो,
बहि रहल जतय हो मधुधारा नव लहरि बनल उठैत सन ओ।

हम तऽ निर्मित कयने छी से अबिऔ देखू ओ हमर कुटीर,
एतबा कहि श्रद्धा हाथ धेने मनुकेर चललीं किछु भऽ अधीर।
ओहि खोहक लग पुआर घेरल छल छोट सनक ओ शांति पुंज,
कोमल ललिताकेर डारि-पात जकरा बनबै छल सघन कुंज।

छल वातायन सब कटल जेना प्राचीर पर्णमय रचित शुभ्र,
अयला पर क्षण भरि रुकय ततय-लगले घूरै छल वायु, अभ्र।
ओहिमे झलुआ छल पड़ल सुनू बेंतक लत्तीकेर सुरुचि पूर्ण,
पसरै छल जेना धरातल पर कोमल सुमनक प्रिय सुरभि चूर्ण।

कतबा रसगर अभिलाषा सब ओहिमे चुपचाप भ्रमण कयने,
कतबा मंगलकेर मधुर गीत ओकरा कान सभक चुमने।
मनु देखै छला छगुंता भय नव गृह लक्ष्मीकेर गृह विधान,
लागल तैयो नहि नींक बहुत-से किए? ककर सुख साभिमान?

मनु चुप रहला, श्रद्धा बजली देखिओ बनलै ई सुघर नीड़,
तैयो एहिमे किलकारी नहि ने आकुल भऽ रहल एखन भीड़।
दूरस्थ अहाँ जखनहि भेलहुँ हम टकुरी धेने एतय बैसि,
हम ओकरे बैसि नचावै छी एहि निर्जनताकेर बीच पैसि।

हम बैसल टकुरी गीत गाबि प्रतिवर्तनमे भए स्वर विभोर–
'चल रे टकुरी धीरे-धीरे' प्रिय गेल एखन खेलय अहेर।
जीवनकेर कोमल तंतु बढ़ल लागल मंजुल तोरे समान,
चिर नग्न प्राण ओहि सँ बान्हल सुन्दरताकेर बढ़ि रहल भान।

तोँ किरण सदृश सुन्दर बीनह-हो धवल हमर जीवन प्रभात,
जैमे निर्वसना प्रकृति सरल झाँपै प्रकाश सँ नवल गात।
वासना भरल ओहि लोचन पर आवरण बिछौने कांतिमान,
जै सँ सौन्दर्य प्रकाशित हो लतिकामे सौरभ पुष्प समान।

आगंतुक एहि खोह बीच पशु सन ने ओ निर्वसन नग्न,
अपन अभावक जड़तामे रहि सकत ने ओ कखनहुँ निमग्न।
रहत सून नहि विश्व छोट मम जखन अहाँ नहि हम रहबै,
हम ओकरा लय करब ओछावन पुष्प फेन रस सँ भरबै।

ओकरा झलुआ बीच झुलेबै, दुलरेबै लेबै मुँह चूमि,
छाती सँ लागल ओ हमरा एहि निर्जनमे लेतै घूमि।
ओ आओत मृदु मलयज सन लग लहरेने कोमल केश,
पसरत ठोरक बीच मधुरमय चिर नवीन उल्लासक देश।

अपने मधु रसना सँ बाजल ओ सुमधुर प्रियगर सन बोल,
पीड़ा पर हमर पसारत ओ कुसुम धूरि मकरंद घोल।
हमरा आँखिक पानि सबटा बनि जायत सद्यः अमृत स्निग्ध,
ओहि निर्विकार लोचन जखनहि देखब हम अपन चित्रमुग्ध।

खिलि उठब अहाँ लतिका सदृश कंपित कयने सुखगर तरंग,
हम सुरभि ताकबामे लागब वन-वन बनि कस्तूरी कुरंग।
ई पीड़ा सहि नहि पायब हम हमरा चाही अप्पन ममत्व,
एहि पंचभूतकेर रचनामे हम करी रमण बनि एक तत्व।

ई द्वैत जेना ई द्विविधा अछि कहि प्रेम बाटबाकेर प्रकार,
हम भिक्षुक नहि, नहि घुरा सकब कखनहुँ अप्पन सोच विचार।
तोँ दानशीलता सँ अप्पन बनि सजल जलद बाटह ने बिन्दु,
एहि मुख नभमे बिचरब हम बनि सकल कलाधर शरद इन्दु।

तोँ भने बिसरि कखनहुँ देखबह कयने आकर्षण ह्रास सुनह,
मायाविनि! हम लेब ने ओ वरदान जानि ई टेक सएह।
एहि दीन अनुग्रहकेर हमरा तो बोझ लादबामे समर्थ,
अपना कें से नहि जानह श्रद्धे! हेतै प्रयास सतत ई व्यर्थ।

तोँ अपन सुख सँ सुखी रहह, दुख पयबा लय कय हमरा स्वतंत्र,
मनकेर परवशता महादुःख-हम एकरे जपबै महामंत्र।
हम छोड़ि चलल से आइ एतए संचित संवेदन भार पुंज,
हम रहबै सुखी कांट धेने-भेटय तोरे ई कुसुम कुंज।

कहि, ज्वलनशील अंतर लेने मनु विदा भेल, छल शून्य प्रान्त,
'रुकिऔ, सुनिऔ हे निर्मोही।' ओ कहि-कहि भेल अधीर श्रांत।

卐

इड़ा

'केहि गहन गुफा सँ अति अधीर
झंझा प्रवाह सन निकलल ई जीवन विक्षुब्ध महासमीर-
लय संग विकल परमाणु पुंज नभ, अनिल, अनल क्षिति आर नीर
भयभीत देत छै भय सब कें भयकेर पूजामे भय विलीन
प्राणी कटुता अछि बाँटि रहल जगती कें कयने आर दीन
निर्माण आर प्रतिपद विनाशमे देखा रहल निजकेर क्षमता
सघर्ष जेना केने सबसँ सबसँ विराग सबलय ममता
अस्तित्व चिरंतन मधु सँ ई केहि क्षण छूटल ओ विषम तीर
केहि लक्ष्य भेद कें शून्य चीर?'

देखल हम ओ शैल श्रृंग
ओ अचल बरफ सँ भय रंजित उन्मुक्त, उपेक्षित धेने तुंग
निज जड़ताकेर गौरव प्रतीक वसुधाक केने अभियान भंग
अपने समाधिमे सुखी भेल बहि जाइत अछि सरिता अबोध
किछु स्वेद बिन्दु ओहिकेर लेने ओ शांत नयन गत शोक क्रोध
थिर मुक्त, प्रतिष्ठा हम ओहि सन नहि चाहि रहल एहि जीवनकेर
हम तऽ अबाध गति मरुत सदृश छी चाहि रहल अपने मनकेर
जे चूमि चलत एहि अग-जग कें प्रति पगमे कंपनकेर तरंग
ओ ज्वलनशील गतिमय पतंग।

अपनहि ज्वाला सँ कय प्रकाश
सब छोड़ि जखन अयलहुँ सुन्दर प्रारंभिक ओ जीवन-निवास
वन, गुफा, कुंज मरु अंचलमे ताकि रहल हम निज विकास
पागल हम, केहि पर सदय भेल? की हम ममता नहि तोड़ि लेल?
केहि पर उदारता सँ रीझल? कहिओ हमरा के छोड़ि देल?
एहि विजन प्रांतमे बिलखि रहल हम्मर पुकार उत्तर ने मिलल
कटु रौद बनल हम डाहि रहल की फूल कोनो हमरा सँ खिलल?
हम सपना देखि रहल उजड़ल कल्पना लोक मे कय निवास
हम देखल कखन कुसुम ह्रास!

एहि सुखमय जीवनकेर प्रकाश
नभ नील लताकेर डारि बीच ओझरायल निज सुख सँ हताश
जकरा हम पुष्प कली जानल ओ कांट छलै पसरल लग पास
कतबा निर्जन पथ सँ चललौं पड़ि रहल कतौ थाकल नितान्त
हमरा पर हँसलै शिखर मुक्त हम कानल निर्वासित अशांत
एहि नियम नटीकेर अतिभीषण अभिनयकेर छाया नाचि रहल
निर्वस्तु शून्यतामे प्रतिपद असफलता आगू आबि चलल
जुगनू कें पकड़ै लय पावसमे हम भागि रहल बनि कऽ निराश
ओहि ज्योतिकणक केने विनाश!

जीवन निशीथकेर अन्धकार!
तों नील तुहिन जलनिधि बनि कऽ पसरल छै कतबा आर-पार
सब किरण कतेक चेतनताकेर छै डूबि रहल ई निर्विकार
कतबा मादक तम, निखिल भुवन भरि रहल भूमिकामे अभंग

तों मूर्तिमान भय नुका गेलह भय पल-पलकेर परिवर्तन अनंत
ममताकेर क्षीण अरुण रेखा खिलि रहल तोरामे ज्योति कला
जहिना सुहागिनीकेर उर्मिल लट मध्य पड़ल कुंकुम अचल
ई चिर-निवास विश्राम प्राणकेर मोह जलद छाया उदार
माया रानीकेर केश भार।

जीवन निशीथकेर अन्धकार!
तों धूमि रहल अभिलाषाकेर नव दाह धूम सन दुर्निवार
जैमे अपूर्ण लालसा सब टीसै छै बनि चिनगी हजार
यौवन मधुवनकेर कालिंदी बहि रहल चूमि साँसे दिगंत
मन शिशुकेर क्रीड़ा नैया सन जे दौड़ि रहल भागल अनंत
मायाविनिकेर अपलक लोचनमे अंजन कारी सुन्दर जहिना
धूमिल पाँती सँ भऽ सजीव चंचल चित्रक नव-नव रचना
एहि चिर प्रवास श्यामल पथमे पसरल कोकिल प्राणक पुकार
ध्वनि नील प्रतिध्वनि नभ अपार।

ई उजड़ल सून नगर प्रांत
जहिमे सुख दुखकेर परिभाषा विध्वस्त शिल्प सन हो नितांत
निज विकृत वक्र पाँतीसन ओ बनल भाग्य लोकक अशांत
कतबो सुखमय ओ स्मृति हो सब, बनि रुचि अपूर्ण नाचय विकीर्ण
भू-भाग बीच दुख भरल कुरुचि दबि रहल एखन बनि पत्र जीर्ण
आबै दुलारकेर हिचकी सन सब शून्य कोन सँ टीस भरल
एहि सूखल तरु पर मनोवृत्ति आकाश बेलि सन हरियर भल
जीवन समाधिकेर भग्न भूमि पर जरि उठै जेना दीपक अशांत
फेर मिझा जाय ओ भेल शांत।

एहि भाँति पड़ल मनु सोचि श्रांत
श्रद्धाकेर सुख साधन निवास छोड़ल तखने भेटल प्रशांत
रस्ता-पैड़ामे अटकि-भटकि ओ आबि गेला एहि ध्वंस प्रांत
सरस्वती बहि रहल वेग धेने सून सनक छल निशा श्याम
नक्षत्र निरंतर देखि रहल वसुधाकेर पीड़ा विकल वाम
वृत्रघ्नीकेर ओ जनाकीर्ण उपकूल आइ कतबा ई सून
देवेश इन्द्रकेर विजय कथा ओ स्मरण भऽ रहल दुःख दून
ओ पावन सारस्वत प्रदेश दुःस्वप्न देखि छल पड़ल क्लांत
पसरल चारू कात ध्वांत।

जीवनकेर लय नव विचार
जखन चलल छल द्वन्द्व असुरमे प्राणक पूजाकेर प्रचार
ओहि कात आत्म विश्वास भरल सुर वर्ग कहै छल ओ पुकारि
'हम स्वयं सतत आराध्य आत्म मंगल उपासनामे विभोर
उल्लासशील हम शक्ति केन्द्र, किनकर ताकी फेर शरण ठौर
आनन्द प्रस्फुटित शक्ति स्रोत जीवन विकास वैचित्र भरल
अप्पन नव-नव निर्माण केने राखै जग पक्ष सदैव सबल
प्राणक सुख साधनटामे बस संलग्न असुर करैत सुधार
नियमक बंधन छल दुर्निवार।

क्यो पूजि रहल छल देह दीन
दोसर अपूर्ण अहंतामे अपना के बूझल ओ प्रवीण
हठ दुनूकेर छल दुर्निवार ओ दुनू छल विश्वास हीन
फेर किए ने तर्क-अस्त्र सँ ओ सिद्ध करय किए होय नहि युद्ध

संघर्ष हुनक चललै, अशांत ओ भाव एखन धरि छल विरुद्ध
हमरामे ममतामय आत्ममोह स्वातंत्र्यपूर्ण छल उच्छृंखलता
बनि प्रलयक भय देहक रक्षामे पूजा करबाकेर व्याकुलता
सत्ये हम छी श्रद्धा विहीन।

मनु तोँ बिसरल श्रद्धा केँ समूल
ओहि पूर्ण आत्मविश्वासमयी केँ उड़ा देलह कहि, बूझि तूल
तोँ बूझल जकरा असत विश्व जीवन-डोरीमे छलै झूलि
जे क्षण बीतल सुख साधनमे ओकरे तोँ सत्यक कयल मान
वासना तृप्तिटा स्वर्ग बनल, ई उन्टा मतिकेर व्यर्थ ज्ञान
तोँ बिसरि गेलह पुरुषत्व मोहमे किछु तऽ सत्ता छै नारीकेर
समरसता अछि संबंध बनल अधिकार आर अधिकारीकेर
पसरल जखनहि स्वर तीक्ष्ण सनक कंपित करैत अंबर अकूल
मनु केँ लागल धसि गेल शूल।

'ई के? कहिओ फेर सयह काम!
जे एहि भ्रममे देलक आर लेलक जीवनकेर लागल सुख विराम?
प्रत्यक्ष हुअय लागल अतीत ओहि बेरक जे छै शेष नाम
वरदान आइ ओहि गत युगकेर कपकपा देल दै अंतरंग
अभिशाप तापकेर ज्वाला सँ जरि रहल आइ मन आर अंग'
मनु बजला 'की हम भ्रांत साधनामे एखन धरि लागल रहलहुँ?
की श्रद्धा केँ पयबाक हेतु सस्नेह कथा अहाँ नहि कहलहुँ?
भेटल तऽ, ओहो दऽ देल घुरा हृदयक अप्पन अमृत धाम
तखन किए ने भेलहुँ हम पूर्णकाम?

मनु! ओ तऽ कऽ देल दान
ओ हृदय प्रणय सँ पूर्ण सरल जेहिमे जीवनकेर भरल मान
जैमे चेतनता बस खाली निज शांति प्रभा सँ ज्योतिमान
तैयो भेटल सदिखन तोरा ओहिकेर सुन्दर जड़ देह मात्र
सौन्दर्य जलधि सँ भरि आनल खाली तोँ अप्पन गरल पात्र
तोँ अति अबोध, नहि जानि सकल अपनहि अपूर्णताकेर ओ पल
परिणय जकरा सम्पूर्ण करय ओहि सँ तो अपने स्वयं रुकल
'किछु हमर होय' ई रागभाव संकुचित पूर्णता छै अजान
मानस जलनिधिकेर क्षुद्रयान।

हँ! तोँ आब बनबालय स्वतंत्र
सब कलुष खसेने अनका पर राखै छह अपन भिन्न तंत्र
द्वन्द्वक उद्‌गम तऽ सतत सत्य जे रहैत अछि बनल मंत्र
शाखामे कांटक संग कुसुम खिलि रहल मिलै छै नित नवीन
अप्पन रुचि सँ तोँ बान्हल छह -जे चाहै छह से लेत बीनि
तोँ तऽ प्राणमयी ज्वालाकेर प्रणय प्रकाश ने ग्रहण कयलह
हँ जलन वासना केँ जीवन भ्रमतममे पहिल जगह देलह
आब विकल प्रवर्तन हो तहिने नियति चक्रकेर बनय यंत्र
होइ शाप भरल कहि प्रजातंत्र।

ई अभिनव मानव प्रजा सृष्टि
द्वयतामे सटल निरंतर सन वर्णक होबैत रहय वृष्टि
अज्ञात समस्या गढ़ि रचि कऽ जे पूर्ण करय अपन विनष्टि
कोलाहल कहल अनंत चलय, एकत्व मिटय बढ़य भेद

अभिलषित वस्तु सब दूर रहय, हँ भेटय अनचाहल दुःख खेद
हृदयक होय आवरण सदिखन अपने वक्षस्थलकेर जड़ता
पहिचानल नहि अपना कें संगहि अग-जगकेर आकुलता
सब किछु कतबो लग लागल हो दूरे रहतै सदैव तुष्टि
दुखदायक ई संकुचित दृष्टि।

अनवरत उठय कतबा उमंग
भए चुम्बित अश्रु जलद सँ कहि बनि अभिलाषाकेर शैल शृंग
जीवन नद हाहाकार भरल, हो पीड़ाप्रद ई उठय तरंग
लालसा भरय यौवनकेर दिन पतझड़ सन सूखल जाय बीति
संदेह नवल उत्पन्न रहय ओहि सँ संतप्त सतत सभीत
पसरतैक स्वजनक विरोध जहिना तम सघन अमाकेर हो पल
दारिद्र्य दलित पसरै जहिना एहि शस्य श्यामला प्रकृति सरल
दुख नीरदमे बनि इन्द्रधनुष बदलय कतेक नर विविध रंग
बनि तृष्णा ज्वालाकेर पतंग।

ओ प्रेम ने रहि जेतै पुनीत
अपनहि स्वार्थ सँ आवृत भए मंगल रहस्य सकुचल समीत
सौंसे जीवन हो विरह भरल, गबिते बीतय ओ करुण गीत
आकांक्षा जलनिधिकेर सीमा हो क्षितिज निराशा खसत रक्त
तों राग-विराग करह सब सँ अपना कें कय शतशः विभक्त
मस्तिष्क हृदयकेर बनि विरुद्ध, हो दुनूमे सद्भाव ने कहि
ओ चलबालय जखने कहय कतौ मन विकल पड़ायल अन्यत्रहि
कनिते बीतै सब वर्तमान क्षण सुन्दर सपना हो अतीत
हो झलुआ लागल हार-जीत।

संकुचित असीम अमोघ शक्ति
जीवन केँ बाधामय पथ पर लय चलय भेद सँ भरल भक्ति
का कखनहुँ अपूर्ण अहंतामे भय रागमयी सन महासक्ति
व्यापकता नियति प्रेरणा बनि अपनहि सीमामे रहय बंद
सर्वज्ञ ज्ञानकेर क्षुद्र अंश विद्या बनि रचना करय छंद
ओ कर्म सकल बनि कऽ आबय नश्वर छाया सन ललित कला
नित्यता विभाजित हो पल-पल बनि काल निरंतर ढ़ैवला
नहि बूझि सकय तोँ, अधलाह बीच शुभ इच्छाकेर छै पैघ शक्ति
भए जाय तर्क सँ विफल युक्ति।

जीवन सौंसे बनि जाय युद्ध
ओहि रक्त अग्निकेर वर्षामे बहि जाय सकल जे भाव शुद्ध
अपनहि शंका सँ व्याकुल भए तोँ अपनहि सँ भऽ कऽ विरुद्ध
अपना केँ आवृत केने रह दर्शाबह निज कृत्रिम स्वरूप
वसुधाकेर समतल पर उन्नत घूमै चंचल बनि दंभ स्तूप
श्रद्धा एहि जीवनकेर रहस्य व्यापक विशुद्ध विश्वासमयी
सब किछु देने नव निधि अप्पन जे गेल ठगायल अहीं सँ ई
भए वर्तमान सँ वंचित तोँ अपनहि भविष्यमे रहह रुद्ध
सौंसे प्रपंच ई छै अशुद्ध।

तोँ जरा मरणमे चिर अशांत
जकरा अद्यावधि जानल छल सब जीवनमे परिवर्तन अनंत
अमरत्व सयह आबो बिसरत तोँ व्याकुल ओकरा कहह अंत
दुखमय चिर चिंतनकेर प्रतीक! श्रद्धा वंचक बनि कऽ अधीर
मानव संतति ग्रह रश्मि रज्जु से भाग्य बान्हि पीटय लकीर

'कल्याण भूमि ओ लोक' इएह श्रद्धा रहस्य जानल ने प्रजा
अतिचारी मिथ्या जनने ई परलोक वंचना सँ भरि जा
आशा मे अपन निराशा निज बुद्धि विभव सँ रहय भ्रांत
ओ चलैत रहय सदैव श्रांत।'

अभिशाप प्रतिध्वनि भेल लीन
नभ सागरकेर अंतस्तलमे नुका रहल हो जाय महामीन
मृदु मरुत लहरिमे फेनमयी तरेगन झिलमिल बनल दीन
निस्तब्ध मौन छल अखिल लोक तंद्रा आलसमे विजन प्रांत
रजनीतम पुंजीभूत सदृश मनु साँस लैत बैसल अशांत
ओ सोचय लगला, 'उएह आइ बनि भाग्य हमर घूरल आयल
जे देने छल जीवन पर पहिने अप्पन कारी छाया लागल
लिखि देल आइ ओ से भविष्य! चलतैक यातना अंतहीन
आब बाचल अवशिष्ट उपाय क्षीण।'

सरस्वतीक छल मधुर नाद
छलै प्रवाह श्यामल खोह मध्य निर्लिप्त भाव सन अप्रमाद
सब हिमकण पड़ल उपेक्षित सन जहिना ओ निष्ठुर जड़ विषाद
छल प्रसन्नताकेर धार जतय जेहिमे छल खाली मधुर गान
बनि कर्म निरंतरता प्रतीक चलि रहल स्ववश अनंत ज्ञान
हिम शीतल लहरि रहि-रहि लागय तट के थपकी ओ मारि रहल
आलोक किरण अरुणिम ओहि पर अप्पन इजोत पसारल भल
अद्‌भुत छल! निज निर्मित पथ ओ पथिक चलि रहल निर्विवाद
चलि रहल कहैत किछु सुसंवाद।

प्राचीमे पसरल मधुर राग
जकरा मंडलमे कमल एकटा खिललै धय ओ पीत पराग
जकरा परिमल सँ व्याकुल भय श्यामल कलरव सब गेल जागि
आलोक रश्मि सँ बीनि रहल उषा ओहि ठाँ हलचल प्रगाढ़
कयने प्रभात कें मधुर पवन पसराबै मर्मर शब्द गाढ़
ओहि रम्य पटल पर नव चित्रित प्रकट भेल सुन्दर बाला
ओ नयन महोत्सवकेर प्रतीक अम्लान नलिन केर नव माला
सुषमाकेर मंडल सुस्मित सन पसरावै जीवन पर सुराग
सूतल जीवनकेर तम विराग।

पसरल लट लागै छल तर्कजाल
ओ विश्व मुकुट सन उज्ज्वलतम शशि खंड सदृश स्पष्ट भाल
दू कमल पत्र मधुपात्र नयन चूबय टपटप अनुराग लाल
गुंजायमान अलि सँ दैहिक सादृश्य छलै मुँह भरल गान
वक्षस्थल पर सब किछु रखने जीवनकेर सब विज्ञान ज्ञान
छल एक हाथमे कर्म कलश वसुधा जीवन रस सार लेने
दोसर वैचारिक नभ ओ छल मधुर अभय अवलंब देने
त्रिबली छल त्रिगुण तरंगमयी, आलोक वसन बान्हल अराल
पदमे लागल गति भरल ताल।

छल शांति भरल प्राणक पुकार
मूर्च्छित जीवन सर, लहरि हीन छल घेरि रहल नैराश्य अपार
ओ सूतल अलसायल सन जड़ भेल जेना चंचल बयार
मन पीने मुकुलित कमल स्वयं अपने मधु सँ ओ बनल शांत

छल शांत दिशा सन रुद्ध भेल सहसा मनु बजला 'के अहाँ भ्रांत
आलोकमयी स्मिति चेतनता आयल ई स्वर्णमयी छाया'
तंद्राकेर स्वप्न तिरोहित छल पसरल जे बनि उज्जर माया
ओ स्पर्श दुलार पुलक भरने सोचल अतीतकेर सुख सिंगार
नाचै विचार सब ई अपार।

प्रतिभा प्रसन्न मुँह सहज खोलि
ओ बजली, 'हम छी इड़ा अहाँ के एतय एना छी डोलि रहल।'
नासिका नोककेर पातर पुट फरकि रहल स्मित कहि अमोल।
'मनु नाम हमर सुनिऔ बाले! हम विश्व पथिक सहि रहल क्लेश।'
'स्वागत! तोँ देखै छह लेकिन उजड़ल ई सारस्वत प्रदेश
भौतिक कंपन सँ चंचल भय उठल छलै ई देश हमर
एहिमे एखनहुँ छी हम तहिना की आस घुरय ओ दिन सत्वर।'
हम तऽ आयल छी देवि कहू जीवनकेर की अछि सहज मोल
भवकेर भविष्यक द्वार खोलि।

एहि विश्व गुफामे इन्द्रजाल
जे रचने ई पसारने छै ग्रह तारा विद्युत नक्षत्र माल
सागरकेर भीषणतम तरंग सन खोलि रहल ओ महाकाल
की तखन एहि वसुधाकेर लघु-लघु जन केँ करबा लय भयभीत
ओहि निष्ठुरकेर रचना कठोर खाली विनाशकेर बनल जीत
सब मूर्ख किए जानल एतबे की सृष्टि सएह जे नाशमयी
ओहिकेर स्वामी होयत क्यो कहि, नहि पहुँचल जकरा धरि दुख ई
सुख नीड़ सभक जे घेरि रहल अविरत विषादकेर चक्रवाल
के पट पसारने ई विशाल।

शनिकेर सुदूर ओ नील लोक
जकर छाया सन पसरल छै ऊपर-नींचा ई गगन शोक
ओकरे सँ भिन्न सुनल ई हम छै कोनो प्रकाशक महाओक
ओ किरण अपन एकटा देने हमर स्वतंत्रतामे सहाय
बनि सकत कहू? नियति जाल से मुक्ति दानकेर कय उपाय।'
ओ क्यो हो? की बाजत? ओ पागल बनि नर निर्भर ने करय
अप्पन दुर्बलता बल सम्हारि गन्तव्य मार्ग पर पएर धरय
नहि करू पसार, निज पएर चलू चलबा लय जकरा रहय झोंक
ओकरा की क्यो सकए रोकि?

'हँ तोहीटा छह अपन सहाय
जे बुद्धि कहय ओकरा ने मानि नर फेर ककर ई शरण जाय
सब सोच-विचार सुसंस्कृत यदि नहि भिन्न कोनो दोसर उपाय
ई प्रकृति परम रमणीय अखिल ऐश्वर्य भरल शोधक विहीन।
तोँ पटल खोलबामे ओहिकेर परिकर कसने बनि कर्मलीन
सबकेर नियमन शासन कयने बढ़बैत चलह अप्पन क्षमता
तोँ स्वयं एकर निर्णायक छह हो कतौ विषमता वा समता
तोँ जड़ता केँ चैतन्य करह विज्ञान सहज साधन उपाय
ई अखिल लोकमे पसरि जाय।'

हँसि पड़ल गगन ओ शून्यलोक
जकरा मनमे बसि कय उजड़य जीवनकेर मरणशोक
कतबा अंतस मे मधुर मिलन ओ क्रंदन कयने बनि विरह लोक
लऽ लेल भार मनु कर्मक दृढ़ भए अपनहि ई विषम आइ

हँसि पड़ल उषा प्राची नभमे देखल सब क्यो निज कर्म जाइ
चलि पड़ली देखै ओ कौतुक चंचल मलयाचलकेर बाला
लखि लाली प्रकृतिक गाल बीच खसि रहल तरेगन मतवाला
उन्निद्र कमल काननमे एहि लागल रहलै अलि नोंक-झोंक
वसुधा बिसरल छल सकल शोक!

जीवन निशीथकेर अंधकार
भागि रहल क्षितिजक अंचलमे मुँह आवृत केने तोरा निहारि
तोँ इड़े उषा सन आइ एतय आयल छह बनि कतबा उदार
कलरब करैत छै जागि गेल हमर मनोभाव सूतल विहंग
हँसि रहल खुशी उत्कंठा बनि ओ किरनक से सुन्दर तरंग
अवलंब छोड़ि अनकर जखने हम बुद्धिवाद केँ अपनाओल
हम बढ़ल सहज, तऽ स्वतः बुद्धि केँ आइ एतय हम पाओल
हमर विकल्प संकल्प बनय जीवनमे हो कर्मक पुकार
सुख साधनकेर हो खुजल द्वार।

卐

स्वप्न

संध्या लाल जलज केसर धय अद्यावधि मन बहटारै छल,
कखन खसल मुरझायल सरसिज ताकि कहाँ ओ पावै छल।
क्षितिज भालकेर कुंकुम लोपित मलिन कालिमाकेर कर सँ,
कोकिलकेर काकली वृथा से कली बीच घुरिआबै छल।

कामायनी कुसुम वसुधा पर राजित, शेष ने छल मकरंद बचल,
एक चित्र धरि खाली रेखा ओहिमे आब रंग ने भल।
ओ प्रभातकेर क्षीण कला शशि किरण कहाँ से किरण सनक,
ओ संध्या छल, रवि शशि तरेगन नहि सायंमे देखा रहल।

जतय तामरस इन्दीवर वा सित शतदल सब मुरझायल,
अपन मृणाल पट, ओ पोखरि श्रद्धा जतय मधुप नहि आयल।
ओ जलधर जैमे चंचलता अथवा श्यामलता किछु नहि सन,
शिशिर कलाकेर क्षीण स्रोत ओ हिमतलमे जामल छल।

बनल मौन वेदना निर्जनक झींगुरकेर झनकार भरल,
जगतीकेर धुध्धुर अनदेखी बनल टीस साकार रहल।
हरित कुंजकेर छाया खाली वसुधा छल आलिंगन कयने,
ओ छोट सन विरह नदी छल जकर आब नहि पार रहल।

नील गगनमे उड़ितै-उड़ितै विहग बालिका सदृश किरण,
स्वप्नलोकमे चलल थकलसन निद्रा-शैया, राखि चरण।
मुदा विरहणीकेर जीवनमे पल कोनो विश्राम ने छल,
बिजुली सन स्मित चमकल तखने जखने तमकेर लागल घन।

संध्या नील सरोरुहमे जे श्याम पराग पसारै छल,
शैल गुफाकेर अंचल सब कें धीरे सँ भरि आबै छल।
नग रोमांचित छल तृण सब सँ सुनि रहल ओकर सब दुख गाथा,
श्रद्धाकेर सून साँस सँ मिलि जे स्वर सुन्दरता पूरि रहल।

जीवन मे बेसी सुख कि दुख, मंदाकिनी भला से की बजतै,
आकाश तरेगन बेसी वा सागरमे बुल्ला के गनितै?
प्रतिबिम्बित तारा छै तोरामे हो सिन्धु मिलन लय विदा जेना,
अथवा दुनू प्रतिबिंब एक सन बाजू रहस्य ई के खोलितै?

एहि अंतरिक्ष पर विम्ब जतेक बनि कऽ बिगड़ै छै ओ प्रतिपल,
ओहि सबमे कतवा रंग भरल जे इन्द्रधनुष पट सँ निकलल।
तैयो सबमे अणु पलमे गायब व्यापित नील शून्य सन,
जगतीक आवरण पीड़ाकेर धूमिल पट लागै बीनि रहल।

दग्ध साँस सँ आह ने आबय सजल अमाँमे आइ जहाँ!
कतवा स्नेह जरा कऽ जरलै कहू एहन लघु दीप कहाँ?
मिझा जाय ओ साँझ किरण सन दीप शिखा एहि कुटिया केर,
शलभ पासमे रहय ने बढ़िया, सुखी जरी असगर हाँ!

आइ सुनी चुप भऽ कऽ खाली कहय कोकिला मन हो जे,
किन्तु परागक चहल-पहल नहि कखनो पहिने छल ओ जे।
एहि पतझड़केर सून डारि आ साँझक बाट कठिन धरिले,
कामायनि! तों हृदय कड़ा कय धीरे-धीरे सब सहिले।

विरल डारि लागल निकुंज सब धेने दुखगर साँस रहल,
ओहि स्मृतिकेर पवन बहै छै मिलन कथा के आब कहब।
आइ विश्व अभिमानी जहिना रूसि रहल अपराध बिना,
कोन चरण कें कहू ओ धोयत, जे अश्रु पलकक पार बहल।

सुनू मधुर छै कष्टपूर्ण ओ जीवनकेर बीतल पल सन!
निस्संबल जखनहि भऽ क्यो जोड़ि रहल पसरल क्षण-क्षण।
सएह एकटा सत्य बनल छल चिर सुन्दरतामे अप्पन,
केतै नुकायल, कोना सरल हो ओझरायल सुख दुख जीवन।

बिसरि जाय ओ कथा बितल जे ओहिमे सम्प्रति सार कहाँ,
ओ जरैत छाती नहि रहलै ओहिमे शीतल प्यार कहाँ
सब अतीतमे बीति गेल आशा, सब मधु अभिलाषा–
प्रियकेर निष्ठुर विजय भेल, मुदा हमर ई हार कहाँ

जे आलिंगन लागल पाश छलै, स्मित चपला ओ आइ कहाँ?
आर मधुर विश्वास! बनल छल पागल मनकेर मोद जकाँ!
वंचित जीवन बनल समर्पण ई अभियान अकिंचनकेर,
कखनो हम दऽ देने रही किछु, लगै एहन अनुमान जकाँ!

विनिमय प्राणक ई कतबा भयसंकुल व्यापार कैहन!
देबालय जेतबा दऽ दहक तोँ, लेब उचित नहि काज तेहन!
परिवर्तनकेर तुच्छ प्रतीक्षा पूर्ण भेल नहि संभव ई,
संध्या रवि दऽ कऽ पाबै छै एम्हर-ओम्हर उडगन बहुसन।

ओ किछु दिन हँसिते जे आयल अंतरिक्ष अरुणाचल सँ,
रंगबिरंगी फूल खिलल छल कलरव स्वर कुहकै बल सँ।
पसरि गेल जखने स्मित माया किरन कलीकेर क्रीड़ा बनि,
चिर प्रवासमे विदा भेल ओ अयबा लय कहि कऽ छल सँ।

जखन शिरीषक मधुर गंध सँ मान भरल मधुऋतुक राति,
रूसल घूरि जाइत रक्तिम-मुँह सहने जागरणक संघात।
दिवस मधुर आलाप कथा सन कहिते पसरि जाइत नभमे,
जागै सपना तखन अपन ओ बनल तरेगन शोभित राति।

बनि बाला-निकुंज सब भरलै वेणुकेर मधु स्वर सँ,
घूरि गेल छल आबै वाला सुनि पुकार अप्पन घर सँ।
मुदा ने आयल ओ परदेशी बीति गेल युग बाट देखैत,
रातिक भीजल पलक बिन्दु बनि ओस झरल क्रम झर-झर सँ।

मानसकेर स्मृति शतदल खिलैत झर-झर बिन्दु मरंद सघन,
मोती कठिन आर-पार छवि एहिमे कतबा चित्र मिलन!
नोर तरल निर्झर विद्युत कण नयनालोक विरह तममे,
प्राण पथिक ई संबल लेने रचि रहल कल्पना जग क्षण क्षण।

अरुण जलजकेर शोण कोण छल नव तुषारकेर बिन्दु भरल,
मुकुर चूर्ण बनि रहल प्रतिच्छवि कतबा संग लेने पसरल।
ओ अनुराग हँसी दुलारक पाँति चलल सूतैलय तमसे,
बरखा विरह अमाँमे जरि-जरि स्मृतिकेर जुगनू डरल-डरल।

सूनसान गिरि पथमे गुंजित शृंगनादकेर ध्वनि गतिमान,
आकांक्षा लहरी दुख सरिता पुलिन अंकमे ढ़रल उतान।
जरल दीप नभकेर, अभिलाषा शलभ उड़ल चलल ओहि ओर,
भरल रहि गेलै अश्रु आँखिमे, मिझा सकल नहि आगिक वाण।

'माँ'-फेर एकटा किलोल दूरागत, गूंजि उठल ओ कुटिया सून,
माते उठि भगली भरल हृदयमे उत्कंठा लेने दू गून।
लटकेशक छल खुजल बाँहि धरि झिड़िआयल जे बान्हि लेल,
निशा तपस्वनिकेर जरबालय धधकि उठल सुनगैत अग्नि।

'कतय छलह तोँ चपल एखन धरि बनल भाग्य कहि शिशु हम्मर,
कहह बापकेर प्रतिनिधि देलह तोहूँ तऽ सुख-दुख घनगर।
चंचल बनि तोँ हरिन सदृश हो, कूदै छह, फानै छह,
हमरा भय अछि रूसि ने जा तोँ करी विरोध कोना तोहर।

हम रूसी माँ आर मना तोँ-कतबा सुन्दर गप्प कहल,
ले हम सूतै छी आब सुनह बेटा एतबे बाजल।
पाकल फल सँ पेट भरल छै निद्रा नहि टूटैवाली,
श्रद्धा चुम्बन लय प्रसन्न किछु, किछु विषाद मन राखल।

जरि जाइत अछि लघु जीवनकेर मधुर-मधुर फल ओ मानु,
मुक्त उदास गगनकेर उरमे फोका बनि झलकी जानु।
दिवा-श्रांत आलोक किरण सब नील गगनमे लुप्त कतौ,
करुण सयह स्वर फेर जीवनक बहल तिरोहित गलि जानु।

प्रणय किरणकेर कोमल बंधन मुक्ति बनल बढ़िते लागल,
दूर, मुदा कतबा प्रतिपल ओ हृदय समीप भेल आयल।
मधुर चंद्रिका सन तंद्रा जखने पसरल मूर्छित मन पर,
लागल तखने प्रीति निकटता जैमे चित्र अपन दर्शायल।

कामायनी मुँह सौंसे अप्पन स्वप्न बनल सन देखि रहल,
युग-युग सँ ओ विफल वंचित जे विलुप्त विधि लेख रहल।
जे कुसुम सभक कोमल दल सँ कखनो अंकित पवन बीच,
आइ पपीहाकेर पुकार बनि नभमे खींचै छल रेख पड़ल।

इड़ा अग्निज्वाला सन आगाँ जरै छली उल्लास भरल,
मनुकेर पथ आलोकित कयने ओ-विषद नदीमे बनल तरल।
उन्नतिकेर आरोहण महिमा शैल शृंग सन शांत ने छल,
तीव्र प्रेरणाकेर धारा सन बहि चललै उत्साह भरल।

ओ सुन्दर आलोक किरण सन हृदय भेदिनी दृष्टि लेने,
जेम्हर देखय खुजि जाइत अछि तम पथ जकरा बंद केने।
मनुकेर सतत सफलताकेर ओ उदय विजयनी तारा छल,
आश्रमकेर भूखल लोक वेद निज श्रमकेर प्रिय उपहार देने।

मनुकेर नगर बसल छै सुन्दर सहयोगी बनलै से सब,
मंदिरकेर दृढ़ प्राचीर मध्य द्वार झलकलै ओ सब ताब।
बरखा, रौद शिशिरमे छायाकेर साधन सब सम्पन्न भेल,
जोति रहल हर कृषक बाधमे भेल प्रसन्न घमायल सब।

ओम्हर गलाक धातु बनि रहल, आभूषण आ शस्त्र नया,
लऽ आनै छल कर्मवीर सब हिरनकेर उपहार नया।
पुष्प लोढ़ने बढ़लै मालिनि कुसुम कली वनकेर अंगना,
गंध चूर्ण छल लोध्र कुसुम रज, नव प्रसाधनक वर्ण नया।

एक दीस स्वर तेज सनक कहि घनक चोट छल रोष भरल,
दोसर कात मधुकंठ प्रवाहित स्वर बालाकेर प्रेम ढ़रल।
अपन-अपन टोलीमे सब क्यो काज कऽ रहल ओहि ठाम,
स्वर समवेत लगै छल सुन्दर नगरी शोभा अति निखरल।

देशकाल लाघव कयने सब क्रियाशील जग लागै छल,
सुख साधन एकत्रित कयने जे जिनकर संभव संबल।
बढ़ल ज्ञान व्यवसाय, परिश्रमकेर विस्तृत छायामे,
पाबि रहल नर सकल वस्तु जे वसुधा तलमे छलै पड़ल।

सृष्टि बीज अंकुरित प्रफुल्लित हरिअर सुन्दर फल लागल,
प्रलयो बीच सुरक्षित मनु सँ ओ पसरल उत्साह भरल।
आइ स्वचेतन प्राणी अपने कुशल कल्पना मन कयने,
स्वावलंबकेर दृढ़ धरणी पर ठाढ़ भेल निर्भय निश्छल।

श्रद्धा ओहि आश्चर्य लोकमे मलय बालिका सन डोलैत,
सिंह द्वारकेर अन्दर पहुँचलि द्वारपाल सँ आँखि छिपैत।
वलयीयुत स्तंभ ठाढ़ छल बनल रम्य प्रासाद ततय,
धूप-धूम महमह सुगंधि गृह, छल प्रकाशकेर ज्योति जरैत।

स्वर्ण कलश शोभित छल गृह सन लागल जे उद्यान सुमन,
सोझ स्वच्छ पथ बीच-बीचमे कतौ लताकेर कुंज सघन।
दम्पति जतय सहर्षित घूमत-देने प्रेमक ओ गलबाहीं,
गूँजि रहल छल मधुप सरस मदिरा, मोद, पराग मिलन।

देवदारुकेर नमहर शाखा ओझरायल ओहिमे वायु तरंग,
मुखरित आभूषण सँ कलरव छल करैत सब बाल विहंग।
आश्रय दैत वेणु वन लागल स्वर लहरी ध्वनि निकलि रहल,
नाग केसरक कोला रोचक सुमन खिलल सुन्दर बहुरंग।

नव मंडपमे सिंहासन आगां मंच बनल कतिपय अभिराम,
एक दीस राखल अछि सुन्दर चर्म सुसज्जित आसन श्याम।
आबि रहल शैलेय अगरुकेर धूम-गंध आमोद भरल,
श्रद्धा सोचि रहल सपनामे, कोना पहुँचलौं हम एहि ठाम।

आर आगुए देखल श्रद्धा निज दृढ करमे चषक लेने,
मनु, ओ अग्निहोत्र प्रिय! हुनकर मुँह साँझक लाली पीने।
मादक भाव समक्ष ठाढ़ छल चित्र मधुर कोनो एहि ठाँ-
जकरा देखै लय जीवन ई मरि-मरि कऽ छै जन्म लेने।

इड़ा ढारने गेल ओ आसव जकर जाइ छल प्यास कहाँ,
तृषित कंठ सँ पीने तैयो ओहिमे छल विश्वास कहाँ।
ओ वैश्वानरकेर ज्वाला सन, मंच वेदिका पर बैसल,
खुशी जेना शीतलता भरने, जड़ताकेर किछु भास कहाँ।

मनु पूछल, 'बाँचल अछि किछु शेष करै लय एतय कहू?
इड़ा कहल, 'सफल एतेकमे एखन काज की खास कहू।
'की सब साधन भऽ गेल स्ववश? नहि हम एखनहुँ रिक्त भेल,
देश बसेलहुँ पर उजड़ल छै–मनक सून ई देश कहू।

सुन्दर मुँहमे आँखिक आशा, तैयो ई ककर भेल कहिओ,
रूप प्रतिपदा वक्रचंद्रकेर, अनुपम टेढ़ बनल कहिओ।
किछु अनुरोध मान-मोचनकेर करय आँखिमे ओ संकेत,
कहह हमर तोँ चेतनते! तोँ छह किनकर ओ छै ककरो।

प्रजा अहाँकेर, अहाँ प्रजापति सबहक सयह सुनै छी हम,
ई संदेह केहन फेर लागल की प्रश्न नवीन देखै छी हम?
प्रजा अहाँ नहि, रानी हम्मर, नहि हमरा प्रिय भ्रमित करू,
मधुर हँसिनी! बाजह प्रिय, 'मोती प्रेमक आब चुनी हम।'

हमर भाग्यकेर नभ धूमिल सन प्राची तट सन तोँ ओहिमे,
अकस्मात आभा पसारने अपन इजोतक छवि यशमे।
हम अतृप्त आलोक भिखारी हे प्रकाशबाला तोँ कह,
डूब देत कखन तृषा हमर एहि मधुमय ठोरक रसमे।

ई सुख साधन आर रूप श्री रजनीकेर शीतल छाया,
स्वयं संचरित दशो दिशा सन मन उन्मद आर शिथिल काया।
प्रजा बनू नहि हे रानी प्रिय! नर पशु स्वयं हुंकार भरल,
ओम्हर पसरलै मदिर सनक अंधकारकेर घन माया।

आलिंगन! फेर भयकेर क्रंदन! वसुधा लागल काँपि उठल,
आ अतिचारी दुर्बल नारी परित्राण पथ पयर बढ़ल।
अंतरिक्षमे भेल रुद्र टंकार-भयानक हलचल कहि,
रे आत्मजा प्रजा! पापक परिभाषा बनि शाप उठल।

ओम्हर गगनमे क्षुब्ध भेल देव शक्ति सब क्रोध भरल,
रुद्र-नयन खुजि गेल अचक्कहि व्याकुल काँपल नगर सकल।
अतिचारी छल स्वयं प्रजापति, देव एखन शिव बनल छलाह,
नै, अहीं सँ चढ़लै शिवक शिंजनी, छला पिनाक प्रतिशोध भरल।

प्रकृति त्रस्त छल, भूतनाथकेर प्रलयंकारी नृत्य जकाँ,
ओम्हर उठेलनि पयर अपन ओ भयाक्रांत जग प्रलय जकाँ।
आश्रय पयबा लय सब आकुल स्वयं पाप सँ मनु संदिग्ध,
फेर हेतै किछु सैह लगै छल वसुधा कंपन क्रुद्ध जकाँ।

काँपै छल कहि प्रलय वेदना धेने सब आतंकित जन्तु,
अपन-अपन प्राणक चिन्ता छल टूटल स्नेहक कोमल तन्तु।
आइ कहाँ ओ शासन रहलै जे लेने छल रक्षाकेर भार,
इड़ा क्रोध-लज्जा सँ आवृत निकरि गेल बाहर ओ किन्तु।

देखल ओ, व्याकुल जन सब क्यो राज द्वार कें घेरि रहल,
प्रहरी दल छल माथ खसौने-भय अंतस्मे घोरि रहल।
नियमन निच्चा दीस दबल छल टूटै किंवा हो उठि ठाढ़,
महानील-लोहित ज्वालाकेर नृत्य भिन्न सब लागि रहल।

कोलाहलकेर बीच नुकायल मनु किछु सोच विचार करथि,
देखि द्वार के बंद प्रजा हत, कोना हृदयमे धैर्य धरथि।
शक्ति तरंग सबमे छल उमड़ल, रुद्ध क्रोध भीषणतम छल,
महानील-लोहित-ज्वालाकेर नृत्य उम्हर छल भिन्न कथित।

ओ विज्ञानमयी अभिलाषा पंख लगौने उड़ि जयबा लय,
जीवनकेर असीम आशा सब नहि निच्चा दिस अयबा लय।
अधिकारक संसार आर ओ हुनकर मोहमयी माया ई-
वर्ग भेदकेर खड्ढा पसरल नहि कखनहुँ से जुड़बा लय।

असफल मनु किछु क्षुब्ध भऽ गेला आकस्मिक बाधा की ई,
बूझि ने सकला कथी भेल छै लोक कथी मे लागल ई।
परित्राण स्तुति विह्वल देखल देव क्रोध सँ बनि विद्रोह,
ओतय इड़ा कें देखि स्पष्ट छल छै कुचक्र किछु जागल ई।

'बंद करह ई द्वार-नहि ककरो आबय दहक एतय,
प्रकृति आइ उत्पात कऽ रहल-हमरा सूतय दहक अभय।
तमसायल मनु क्रोधित प्रकटल अंतस्मे किछु भय धेने,
शयन कक्षमे विदा भेल, सोचल जीवनकेर लेन-देन सय।

श्रद्धा काँपि उठल सपनामे, सहसा ओकर आँखि खुजल,
ई की देखलहुँ हम? ओ कोना एतेक छलिया भऽ गेल?
स्वजन स्नेहमे भयकेर कतबा आशंका भय जाइत अछि,
होयत की आब, अही सोचमे व्याकुल, ओ रजनी बीतल।

卐

संघर्ष

श्रद्धाकेर छल स्वप्न मुदा ओ सत्य बनल छल,
इड़ा संकुचित ओम्हर प्रजामे क्षोभ प्रबल छल।
भौतिक विप्लव देखि विकल सब घबड़ायल,
राज्य शरणमे त्राण पबै लय सब आयल।

तैयो भेटल अपमान आर व्यवहार हेय छल,
मनस्ताप सभक अंतस्मे रोष भरल छल।
क्षुब्ध निहारैत देह इड़ाकेर पीअर-पीअर,
ओम्हर प्रकृति नहि शांत-रुकल नहि तांडव स्वर।

प्रांगणमे छल भीड़ बढ़ैत सब लग आयल,
द्वार बंद कयने प्रहरी सब ध्यान लगाओल।
रातिक पसरल तम बीच हेड़ायल ओ,
रहि-रहि मेघक ज्योति धरा पर आबै छल हो।

मनु चिंतित सन पड़ल शयन पर सोचि रहल,
क्रोध आर शंकाकेर श्वापद नोचि रहल।
'हम प्रजा बनौने कतबा तुष्ट भेल रही,
किन्तु कहि सकत के एहि पर रुष्ट भेल रही।

कतेक तीव्रता सँ हम शासन-चक्र चलौलहुँ,
भिन्न-भिन्न जे एक क़ेलौं उन्नत राज्य बनौलहुँ।
हम नियमन लय ज्ञान-ध्यान आयास केने,
एकत्रित कयने सबकेँ चललहुँ नियम बनौने।

किन्तु स्वयं की ओहिमे सब केँ हम मानि चली,
कनिको ने हम स्वच्छंद, सोन सन सतत गली।
हम नियमन लय ज्ञान-ध्यान, आयाम केने,
की अधिकार ने छै कखनो अविनत रही हम?

श्रद्धा केँ अधिकार समर्पण दय ने सकल हम,
छलौं सतत बढ़ि रहल कखन ओतय रुकल हम।
इड़ा नियम-परतंत्र बनाबय हमरा चाहै छै,
निर्वाधित अधिकार ने ओ कोनो मानै छै।

विश्व एकटा बंधन विहीन परिवर्तन छै,
एकर प्रगतिमे रवि-शशि आर तरेगन छै।
रूपक परिवर्तन धेने वसुधा सिन्धु बनै ई,
उदधि बनल मरुभूमि जलधिमे आगि जरै ई।

तरल आगि दौड़े छै लपलप सभकेर अन्दर,
हिम नग गलि भऽ नद धारा लीला रचनाकर।
ई स्फुलिंगकेर नृत्य आयु - क्षणिकता-
टिकबाकेर ककरो की भेटल एतय सुभीता?

कोटि-कोटि नक्षत्र शून्यकेर महा विवरमे,
लास-रास कऽ रहल लटकि कऽ बीच अधरमे।
उठि रहल पवन तहमे लहरि कतेक,
ई अनंत चीत्कार आर परवशता एतेक।

ई नर्तन उन्मुक्त विश्वकेर स्पंदन द्रुततर,
गतिमय भेल चलल जा रहल अपने लय पर।
कखनहुँ देखी हम तहिना पुनरावर्तन,
ओकरे मनने नियम, चलै छै जै सँ जीवन।

रुदन हास बनि किन्तु आँखि सँ खसल जा रहल,
शत-शत प्राण मुक्ति तकबाकेर ललक रहल।
जीवनमे अभिशाप शापमे ताप भरल छै,
एहि विनाशमे सृष्टि कुंज जीवंत सबल छै।

विश्व बन्हल छै एक नियम सँ आयल स्वर,
पसरि गेल छै सभक हृदयमे दृढ़ प्रचार घर।
नियम जाँचि सब फेर सुखक ई साधन जानल,
वशी नियामक रहय, एना हम नहि मानल।

हम चिर बंधनहीन मृत्यु सीमा उल्लंघन-
करैत चलब हम एहिना ई हमर दृढ़ प्रण।
महानाशकेर सृष्टि बीचमे जे क्षण हो अप्पन,
चेतनताकेर तुष्टि सएह शेष स्वप्न सन।

प्रगतिशील मन रुकल एक क्षण करोट लेने,
देखल अविचल ठाढ़ इड़ फेरो सब किछु देने!
कहने तैयो–'नियामक नियम ने मानय,
तखन फेर सब नष्ट भेल सन पक्का जानय।

ऐं! तोँ तैयो आइ कोना एतय चलि अयलह,
की किछु आर उपद्रवक कथा धरल छह।
मन मे, ई सब आइ भेल अछि एतबा,
की ने भेल छै तुष्टि? शेष आब बाचल कतबा?

'मनु शासन अधिकार तोहर सब सतत निबाहै,
तुष्ट चेतनाकेर क्षण नहि किछु दोसर चाहै।
आह प्रजापति ई ने भेल छै, पुनः ने होयत,
निर्बाधित अधिकार आइ धरि के कहि भोगत?

ई मनुष्य आकार चेतनाकेर विकसित बल,
एक विश्व अंतस्मे ओहिकेर रचल-बसल।
चित्त केन्द्रमे जे सब संघर्ष चलैत रहै छै,
द्वयतामूलक भाव सतत ई हृदय भरै छै।

ओ बिसरल पहिचान रहल जे एक-एक के,
भेल समीप सतत मिलावै ओ अनेक के।
स्पर्धामे जे उत्तम ठहरै आर रहै अछि,
जीवनकेर कल्याण करय शुभ मार्ग देखाबै अछि।

व्यक्ति चेतना अहीं लेल परतंत्र बनल सन,
रागपूर्ण तैयो, द्वेष पंकमे सतत सनल सन।
नियम मार्गमे पद-पद पर आघात खाइत,
अपने लक्ष्य समीप श्रांत भए चलल जाइत।

ई जीवन उपयोग, इएह अछि बुद्धि साधना,
अपन श्रेय निहित जैमे सएह सुखक होइ वंदना।
लोक सुखी भय सकय यदि ओहि छायामे,
प्राण सदृश बनि रहै राष्ट्रकेर एहि कायामे।

देश कल्पना काल परिधिमे लय होइत अछि,
काल तकैत महा चेतना निज क्षय पूरित जे अछि।
ओ अनंत चेतन नाचै छै उन्मद गतिमे,
नाचू अहूँ अपन द्वयतामे-विस्मृतमे।

क्षितिज पट्टिका उठा बढ़ह ब्रह्मांड विवरमे,
गुंजारित घननाद सुनह एहि विश्व कुहरमे।
धेने ताल बढ़ह आगां-लय टूटय नहि,
तोँ ने विवादी स्वर छोड़ह अनजान बनल एहि।

बेस जरूरी रहल ने ई तोरा आब बुझाओल,
तोँ कतबा प्रेरणामयी छऽ हम रहस्य ई पाओल।
तैयो आइ तुरत्ते घूरल तोँ फेर आयल छह,
कयल कोना साहस-ई बुद्धि कोना आयल कह?

आह प्रजापति होयबाकेर अधिकार इएह की?
स्पृहा हमर अपूर्णहि रहय सतत की?
हम सब केँ दैत रही सदिखन एहिना की?
किछु पयबाकेर ई प्रयास छै पाप, सहू की?

अहाँ केलौं प्रतिदान भला की बाजि सकै छी?
दय हमरा सब ज्ञान कहू की जीबि सकै छी!
हमर रहल स्पृहा जे मिलल नहि ओ अछि,
तखन घुराबह कथा व्यर्थ जे कहल अछि।

इड़े! चाही हमरा वस्तु सयह जे हम चाही,
हो अधिकार तोरा पर, प्रजापति व्यर्थ ने रही।
देखी तोरा आब टूटि रहल बंधन सब छै,
शासन वा अधिकार ने चाही, जे सब छै।

देखह एहि दुर्धर्ष प्रकृतिकेर एतबा कंपन!
हमर हृदयकेर आगाँ क्षुद्र एकर स्पंदन!
ई कठोर खेलने अछि हँसि प्रलयक खेला!
मुदा आइ कतबा कोमल ई शून्यक बेला?

तोँ कहैत छह विश्व एकटा लय छै, हम ओहिमे,
लीन भऽ चली? मुदा धरल छै की सुख एहिमे?
क्रंदनकेर निज आन कोनो आकाश बना ली,
ओहि रोदनमे अट्टहास हो-हम तोरा पाली।

फेर सँ जलनिधि कूदि बहय मर्यादा हत कय!
फेर झंझा भऽ जाय उग्र ओ आबय-जाबय!
फेर डगमग भऽ जाय नाव लहरि सँ ऊपर भागय!
शशि, रवि, तरेगन साकांक्ष भेल चौंकय जागय।

मुदा रहह तोँ निकट बालिके! तोँ हम्मर छह,
हम नहि कोनो खेल तेहन जे हमरा सँ खेलह?
आह ने बुझबह की हमर नींक सन कथ्य,
तोँ उत्तेजित भइयो नहि पाबै छह निज प्राप्तव्य।

प्रजा क्षुब्ध भऽ शरण मांगन उम्हर ठाढ़ छै,
प्रकृति प्रकंपित क्षण-क्षण डगमग भू पहाड़ छै।
सावधान! हम शुभाकांक्षिणी आर कही की?
जे छल कहबालय कहलौं-आब एतय रही की?

'मायाविनि! बस एतबेमे तोँ एहिना केने छुट्टी,
धिया पुताकेर खेल-खेलमे होइ जेना छै कुट्टी।
मूर्तिमती अभिशाप बनल सन आगाँ आयल,
तोँही तऽ संघर्ष भूमिका हमरा एना देखाओल।

रुधिर भरल वेदी भयकारी ओहिमे ज्वाला!
विनयनकेर उपचार तोरे सँ सीखल बाला।
चारि वर्ण बनि गेल बटल श्रम सभक अपन,
शस्त्र यंत्र बलि गेल, ने देखल जेहि सभक स्वप्न।

आइ शक्तिकेर खेल खेलबामे आतुर नर,
प्रकृति संग संघर्ष निरंतर आब केहन डर?
बाधा नियमन केँ कोनो नहि लग आबै दह,
एहि हताश जीवनमे क्षण सुख मिलि जाबै दह।

राष्ट्र स्वामिनी! धरिऔ ई सब वैभव अप्पन,
खाली सब उपाय सँ हम कहि ली तोरा अप्पन।
ई सारस्वत देश फेर सँ ध्वंस भेल सन,
जानह, तोँ छह आगि आर ई सब धुआँ सन?

हम जे कयलहुँ कहि ओकरा मनु एना ने बिसरू!
भेटल जे सब ओकरा सँ नहि एतेक सन गर्व करू!
प्रकृति संग संघर्ष तोरा हम स्वयं सिखाओल,
तोरहि केन्द्र बना कऽ हम अनहित कोनो ने पाओल।

एहि पसरल विभूतिकेर स्वामी हम तोरा बनेलहुँ,
सहज भेल सब अन्तर्माया बूझि रहस्य बुझेलहुँ।
मुदा आइ अपराध हमर ई पृथक् ठाढ़ छै,
हँमे हँ यदि हम ने मिलाबी अपराध गाढ़ छै।

मनु देखू ई भ्रांत निशा आब बीतैमे लागल,
प्राचीमे नव उषा तमस केँ जीतै चाहल।
एखन बेर अछि किछु हमरो तऽ विश्वास करू,
बनि जायत सब बात हृदयमे धैर्य भरू।

आर एक क्षण ओ प्रमादकेर फेर सँ आयल,
इम्हर इड़ा द्वार दीस निज पयर बढ़ाओल।
मुदा रोकल गेल छलै ओ-मनु भुज पाश बनल,
निस्सहाय भऽ दीन दृष्टि सँ ओ सब देखल।

ई सारस्वत देश तोहर तोँ छह रानी,
हमरा अप्पन अस्त्र बनेने करै छहक मनमानी।
ई कपट आर चलबामे पंगु भेल से जानह,
हमरो आब मुक्त जाल सँ अप्पन मानह।

शासनकेर ई प्रगति स्वत: अपने सँ रुकतै,
किएक दासता आरो हमरा सँ नहि भऽ सकतै।
हम शासक, चिर स्वतंत्र तोरो पर स्वामित्व हुअय,
हो अधिकार असीम, सफल जीवन हमर हुअय।

छिन्न-भिन्न भऽ जाइ अन्यथा पलमे,
सकल व्यवस्था डूबि सकै छै भूतलमे।
देखै छी वसुधाकेर अति भय सँ कंपन,
आर सुनै छी हम नभकेर ई निर्मम क्रंदन।

मुदा आइ तोँ बंदी छह हमर बाँहिमे,
हमर वक्षमे तोँ, डूमल साँस-साँसमे।
खसलै तखनहि सिंह द्वार सब अन्दर आयल,
'रानी हमर' ओ चिकरल-चिल्लायल।

दुर्बलतावश मनु तखन हाँफै रहथिन,
पतनक आशंकामे पयरक गति छल भिन्न।
सजग भेल मनु लऽ बज्रखचित राजदंड तखने,
आर कहल, सुनह कहै छी जे हम एखने।

तोरा तृप्तिकय सुखक साधन सकल बताओल,
हमहीं केने श्रम-विभाग पुनि वर्ग बनाओल।
अत्याचार प्रकृत कृत हम सब जे सहैत छी,
किछु करैत प्रतिकार ने आब हम चुप रहैत छी।

आइ ने छी पशु हम, वा गूंग कहि प्राणी वनचर,
ई उपकार बिसरि गेल की कहह आइ तोँ हम्मर।
ओ बजला शोकाकुल पीड़ा सँ तमासयल,
'देखू पाप स्वयं बाजल अछि अपने मुँहमे आयल।

अहाँ योग-क्षेम सँ बेसी संचय कर्म सिखाओल,
लोभ सिखा कऽ एहि विचार-संकट केँ लाओल।
हम संवेदनशील भऽ चलल इएह भेटलै सुख,
कष्टक अनुभव भेल बना कऽ निज कृत्रिम दुख।

प्रकृति शक्ति तोँ अस्त्र-शस्त्र सँ सबहक छीनल,
शोशित कयने सबहक जिनगी दुखमे सौंसे बीनल।
आर इड़ा पर ई अत्याचार कयल की?
अही लेल हमरा मादे एतय जिअल की?

आइ वंदिनी रानी हम्मर इड़ा एतय छै?
हे यायावर! आब तोहर विस्तार कतय छै?
'तऽ' हम आइ पुनः असगर छी जीवन रणमे,
प्रकृति आर ओकर प्रतिकृतिकेर एहि भीषणमे।

आइ शौर्यकेर पौरुष निजतन पर रखने,
राजदंड कें वज्र बना जे हम छी धयने।
से कहि मनु अपन भरिगर अस्त्र सम्हारल,
ओम्हर देवता आगि खसाओल भेलै हलचल।

छूटि चलल छल तीर धनुष सँ सब सत्वर,
धूमकेतु नभमे टूटै छल श्यामल-पीअर।
अंधड़ छल बढ़ि रहल प्रजा छल भयाक्रांत,
रण वर्षामे चमकि उठल बिजुली सन विक्रांत।

किन्तु क्रूर मनु केलनि निवारण वाणक ओहि,
बढ़ला ध्वस्त करैत खड्ग सँ प्रजा प्राण रहि रहि।
तांडवमे छल तीव्र प्रगति परमाणु विकल सन,
अस्त-व्यस्त छल नियति त्रास सँ व्याकुल जन।

मनु फेर अलात चक्र सन घूमि रहल घन तममे,
ओ रक्तक उन्माद नाचै छल कर निर्ममे।
उठल घोर रणनाद, भयानक भेल अवस्था,
बढ़ल मौन विपक्षी दलक छल पददलित व्यवस्था।

आहत भए हटला, धेने खाम्ह कें लागल मनु,
साँस लेल, टंकार कयल दुर्लक्ष्यी धनु!
बहि रहल विकराल विषम उन्चास बात,
मरण पर्व छल, नेता द्वय आकुलि आर किलात।

'ललकारल, 'बस आब ने एकरा जाय दहक',
किन्तु पहुँचला मनु करैत साकांक्ष सभक।
बजला, तों दुनू छऽ खाली उत्पात मचौने
आह! जकरा हम अपन बूझि रही अपन बनौने।

तखन आबि देखह कोना कऽ होइत छै बलि,
ई रण-यज्ञ पुरोहित, हे किलात हे आकुलि।
आर धराशायी भेल असुर पुरोहित ओहि क्षण,
इड़ा एम्हर छल बाजि उठल, बस रोकू रण।'

भीषण नर संहार स्वतः ई अपने होइत,
रे बतहा मानव, तों किए एना छऽ हत होइत।
किए एतेक आतंक बांटने गर्व करै छह,
जीबय दहक आन कें अपनो सुख सँ जीबह।

किन्तु सुनि रहल के! प्रज्वलित बेदी ज्वाला,
सामूहिक बलिकेर ई अद्‌भुत छल रणशाला।
रक्तोन्माद मनुकेर तैयो नहि हाथ रुकै छल,
प्रजा पक्षकेर धैर्य अडिग ओ कहाँ झुकै छल।

ओतहि उपेक्षित ठाढ़ इड़ा सारस्वत रानी,
ओ प्रतिशोध अधीर रक्त बहलै बनि पानी।
धूमकेतु सन चलल रुद्रकेर तीर भयंकर,
नांगड़िमे आगि लगेने अपन अति प्रलंयकर।

अंतरिक्षमे महाशक्ति हुँकार कऽ उठल,
सभक शस्त्रकेर धार भीषण वेग बनल।
आर गिरल से मनु पर, ओ मूर्च्छित ठाँमहि,
खूनक धार पसरलै लाली पीने भू-कहि।

卐

निर्वेद

ओ सारस्वत नगर पड़ल छल क्षुब्ध मलिन किछु मौन बनल,
जकरा ऊपर विगत कार्यकेर विष-विषाद आवरण तनल।
उल्काधारी प्रहरी सन ग्रह-तारा नभमे घूमि रहल,
वसुधा पर ई की होइत अछि अणु-अणु लागल डोलि रहल।

जीवनमे जागरण सत्य छै वा सुसुप्त टा सीमा छै,
आबै छै रहि-रहि पुकार सन 'ई भव रजनी भीमा छै।
निशिचारी भीषण विचारकेर पंख भरि रहल सर-सर सन,
सरस्वती चुपचाप बहै छल, नीरवता धय पसरल सन।

आहतकेर सिसकीमे एखनो जागि रहल छल मर्म व्यथा,
पुरलक्ष्मी खग केने बहन्ना कहल जेना किछु करुण कथा।
किछु प्रकाश धूमिल सन दीपक आसपासमे निकसि रहल,
पवन चलि रहल छल उदास सन, गतिमे किछु अवसाद भरल।

भयभीत मौन दर्शक बनि कऽ छल सतत सजग चुपचाप ठाढ़,
अंधाकारकेर नील आवरण दृश्य-जगत सँ पैघ प्रगाढ़।
मंडपकेर सोपान पड़ल छल, सूनसान सन आन ने क्यो,
स्वयं इड़ा ओहि पर बैसल छल अग्नि शिखा सन धधकै ओ।

राज्य चेन्ह सँ शून्य महल बनि ओ समाधि सन सूतल छल,
कारण ओत्तहि आहत काया मनुकेर शांत पड़ल छल।
इड़ा ग्लानि सँ भरल विचारल छलै करुण जे कथा विगत,
घृणा आर ममतामे सानल बीति गेल रजनी किछु गत।

नारीकेर ओ हृदय! हृदयमे सुधा सिन्धु लहरी जागल,
बाड़ब अग्नि ओहीमे जरि कऽ कंचन सन जरि रंगि आयल।
मधु पीअर ओहि तरल अग्निमे शीतलता जीवन रचने,
क्षमा आर प्रतिशोध आह! दुनूकेर मायामय नाच नचेने।

ओ हमरा सँ स्नेह केने छल हँ अनन्य ओ रहल कहाँ?
सहज लब्ध छल ओ अनन्यता पड़ल रहि सकै कतौ कहाँ?
बाधा सबकेर अतिक्रमण कय जे अबाध बनि दौड़ि रहल,
सएह स्नेह अपराध बनल जे सब सीमा कें तोड़ि रहल।

हँ अपराध किन्तु ओ कतबा एकाकी भऽ भीम बनल,
जीवनकेर कोना सँ उठि कऽ एतबा आइ असीम रहल।
आर प्रचुर उपकार बनल ओ, सहृदयताकेर सब माया,
सून-सून सन खाली ओहिमे खेलि रहल कण्टक छाया।

कतबा दुखी भेल परदेशी, ओहि दिन जे आयल छल,
जकरा निच्चा धरा कहाँ छल, शून्य चतुर्दिक लागल छल।
ओ शासनकेर सूत्रधार छल नियमनकेर आधार बनल,
अपने निर्मित नव विधान सँ स्वयं दंड साकार बनल।

सागरकेर तरंग सँ उठि-उठि शैल शृंग पर सहज चढ़ल,
अप्रतिहत गति, संस्थान छोड़ने आगू क्रमशः चलल बढ़ल।
आइ पड़ल छै ओ मुमूर्षु सन ओ अतीत सब सपना छल,
ओकरे सँ सब भेल आन सन जे सबहक अप्पन छल।

किन्तु सएह हमर अपराधी जकर ओ उपकारी छल,
प्रकट ओही सँ रोष भेल छै जे सब लय गुणकारी भल।
केहन सर्ग अंकुरकेर दुनू पल्लव ई सब नीक बेजाय,
एक दोसराकेर सीमा छै किए ने ओहि सँ अंक जुड़ाय?

अपन होय वा आनक सुख बढ़ल कि नहि दुख भेल,
कोन बिन्दु अछि रुकि जयबाकेर सएह कहाँ से जानल गेल।
प्राणी निज भविष्य चिंतामे वर्तमानकेर सुख छोड़ने,
भागि-दौड़ि ओ छीटि रहल छै मार्ग अपन रोड़ा धयने।

'दंड देबा लय हिनका बैसी-करी कहू वा रखवारी हम,
केहन विकट सन बनल पहेली-ओझराहटमे भारी हम?
निरा कल्पना मीठ बहुत ई एहि सँ की सुन्दर होयत,
हँ, कि वास्तविकता सँ बढ़ियाँ सत्य अही केँ वर ढ़ोयत।

चौंकि गेल ओ निज विचार सँ किछु दूरागत ध्वनि सुनि कऽ,
एहि निस्तब्ध निशामे केओ आबि रहल किछु किछु कहि कऽ-
'कने कहू हमरा ई कृपया कतय हमर परदेशी छै?
ओही बावरा सँ मिलबा लय लागि रहल ई फेरा छै।

रुसि गेल ओ अहंभावमे ओकरा नहि अपना सकलहुँ,
किन्तु छलै ओ हमर मात्र धरि किए आन ककरो मनितहुँ।
सएह चूक बनि शूल मनक आब सालै छै उरमे हमरा,
कोना कऽ भेटय ओ हमरा-कहि दिय आबि क्यो हमरा।

इड़ा उठल, राजपथ देखल धूमिल सन छाया अबैत,
वाणीमे छल करुण वेदना बनि पुकार ओ शब्द जरैत।
शिथिल शरीर वसन विशृंखल केश खुजल छल डोलि रहल,
छिन्न पत्र मकरंद हेड़ायल मुरझायल कलिका बोलि रहल।

नव कोमल अवलंब संगमे वय किशोर आंगुर धेने,
आबि रहल ओ मौन धैर्य सन अपन माय के ओ लेने।
थाकल छल दुखी बटोही-दुहू माय-बेटा पथ लागल
ताकि रहल बिसरल सब मनु कें आहत जे सूतल-जागल।

इड़ा आइ किछु द्रवित भेल छल देखल ओ सब पीड़ित कें,
लगमे पहुँचि पुछलकै बाजह 'बिसराओल तोरा के?
एहि निशीथमे कतय जेबह, बौआइत तों से बाजह,
बैसह आइ व्यग्र बहुत हम व्यथा-ग्रन्थि निज खोलह।

जीवनकेर सुदूर बाटमे हेड़ा गेल जे सब मिलि जायत,
जीवन छै तऽ मिलन सुनिश्चित बीति दुखक रजनी सुख आयत।
श्रद्धा रुकल कुमार श्रांत छल भेटै छल विश्राम एतय,
चलल इड़ाकेर संग भेल ओ अग्नि शिखा प्रज्वलित जतय।

सहसा धधकल वेदी ज्वाला मंडप कें आलोकित कयने,
कामायनी किछु देखल विशेष पहुँचल ओतय डेग भरने।
आर ओतहि मनु आहत सोचल की सत्ये ई स्वप्न रहल?
आह प्राण प्रिय! ई की? अहाँ एना! द्रवित हृदय बनि नीर बहल।

इड़ा चकित, श्रद्धा छल बैसल ओ मनु कें सोहरावै छल,
अनुलेपन सन मधुर स्पर्श छल पीड़ा व्यथा भगावै छल।
ओहि मूर्च्छित नीरवतामे किछु हल्लुक सन कंपन आयल,
आँखि खुजल नोरक पाँती जनि बून-बून झहरय लागल।

एम्हर बटुक सब देखि रहल मंदिर, मंडप वेदी कें,
ई सब की छै नूतन सुन्दर केहन रमनगर मन-धी कें।
माय कहल, आबह तोहूँ देखह तोहर पिता एतय पड़ल,
'बाबू! आबि गेलौं हैए, रोमांचित भऽ बटुक बढ़ल।

'माँ दे पानि, पियासल होयत-की बैसल कऽ रहल एतय,
मुखर भऽ गेलै सजीवता मंडप सूनहिं ओ छलय कतय?
आत्मीयता पसरि गेल गृह-छोट-छीन परिवार बनल,
पसरि गेल स्वर मधुर ओतय श्रद्धाकेर संगीत भरल।

सघन कोलाहल कलहमे हम हृदयकेर भाव रे मन,
भऽ विकल से नित्य चंचल कामना विश्रामकेर पल,
चेतना थाकल लगै छल, हम वलयकेर बात सन मन!

चिर विषाद विलीन मनकेर, एहि व्यथाकेर तिमिर वन मे,
हम उषा सन ज्योति रेखा, कुसुम विकसित प्रात रे मन!
जतय मरु ज्वाला जरै चातकी मन तृषित जल-कण,
तही जीवन गुफा सबके हम सरस छी वृष्टि रे मन।

पवनकेर प्राचीरमे रुकि, जरल जीवन जी रहल झुकि,
एहि जरैत विश्व दिनकेर, हम कुसुम ऋतु राति रे मन।
चिर निराशा नीरधर सँ प्रतिच्छायित अश्रु सरमे,
मधुप मुखर मरंद मुकुलित, हम सजल जलजात रे मन।

ओहि स्वर लहरीमे अक्षर सब संजीवन रसमे घोरल,
ओम्हर प्रभात भेल प्राचीमे मनु निज बंद नयन खोलल।
श्रद्धा केँ अवलंब भेटल फेर कृतज्ञता सँ हृदय भरल,
मनु उठि बैसल गदगद भय बजला किछु अनुराग धरल।

'श्रद्धा! आबि गेलह तोँ-मुदा की छलहुँ हम एतहि पड़ल!'
उएह भवन, ओ स्तब्ध वेदिका! चारू कात घृणा पसरल,
मूनि लेल दृग भरल क्षोभ सँ 'दूर-दूर लऽ चल हमरा',
एहन भयावह तममे तोरा हेड़ा ने दी-चिन्ता हमरा।

धरह हाथ, चलि सकैत हम-हँ एकरे बस अवलंब मिलय,
आ तोँ के! हटह दूर श्रद्धे! आर मनक ई कुसुम खिलय।
श्रद्धा शांत माथ सोहराबय नयन बीच विश्वास धेने,
कहल जेना, 'तोँ आब हमर छऽ किए व्यर्थ मन भय खेने?

पानि पीबि किछु स्वस्थ भेल मनु किछु धीरे सँ बजला,
लय चल हमरा एहि छाया सँ किए रही हम एतय भला।
मुक्त नील नभकेर नींचा अथवा बीच गुफा रहि लेब,
जीवन यापन भव सहि कयलहुँ जे आयत पुनः सेहो सहि लेब।

'ठहरि जाउ किछु बल आरो होइ लेने चलबै हम तुरते,
एतबा क्षण धरि, श्रद्धा बाजल–रहै देत की ई ने एतै?
इड़ा संकुचित ठाढ़ ओम्हर छल ई अधिकार ने छीनि सकल,
श्रद्धा अविचल, मनु बजला–स्वर हुनकर नहि छलै रुकल।

जखन हृदयमे साध भरल छल उच्छृंखल अनुरोध भरल,
अभिलाषा सन भरल दृष्टिमे निजताकेर छल बोध प्रबल।
हम छलहुँ, सुन्दर कुसमक ओ घनगर स्वर्णिम छाया छल,
मलयानिलकेर लहरि उठै छल हुलसित सब माया छल।

उषा अरुण मधु पात्र भरै छल सुरभित छायाकेर जहाँ,
यौवन हमर पीबै छल सुख मँ अलसायल सन नयन तहाँ।
नव मकरंद लेने चूबै छल शरद प्रातकेर हरसिंगार.
सुखद सरस वर्षा छल, साँझ भरल अलकक शृंगार।

उठलै सहसा तमक बिहाड़ि-नभ सँ धेने वेग प्रबल,
प्रलय देखि विक्षुब्ध विश्व उद्वेलित जन मानस छल।
व्यथित हृदय ओहि श्यामल नभमे छाया पथ सन खुजल तखन,
अपन मंगलमयी मधुर स्मित केलौं देवि! अहाँ ओ जखन।

दिव्य अहाँकेर अमर अमिट छवि खेलय लागल रंग सकल,
नवल हेम रेखा उगि आयल निकष हृदय पर हमर सरल।
अरुणाचल मन मंदिरकेर ओ मुग्ध माधुरी नव प्रतिमा,
सिखबय लागल स्नेहसिक्त सन सुन्दरताकेर मृदु महिमा।

ओहि दिन हमरा ज्ञात भेल छल सुन्दर ककरा लोक कहय,
चीन्हि सकल हम, ककरा हितमे एना लोक दुःख-सुख सहय।
जीवन बाजल छल यौवन सँ 'की देखल तोँ तथ्य भला,
यौवन बाजल साँस लेने चल धेने निज संबल-शाला।

हृदय बनल छल ई सितुआ सन बनलह तोँ स्वातिकेर बून,
मानस शतदल खिलल जखन तोँ बनलह मकरंद प्रसून।
भरलह कतबा तोँ हरीतिमा एहि मुरझायल पतझड़मे,
जानल हम मादकता ई तृप्ति बनल छल कण-कणमे।

विश्वक जै मे पीड़ाकेर चक्रवात सन लहरि उठै छल,
जैमे जीवन-मरण बुलबुला रहि-रहि ओ बनि फूटै छल।
सयह शांत उज्ज्वल मंगल सन दृश्य बनल विश्वास भरल,
बरखाकेर कदंब कानन सन सृष्टि विभव सब हरियर छल।

भगवति! ओ पावन मधु धारा! देखि अमृत सेहो आकृष्ट,
बहल रम्य सौन्दर्य शैल सँ धोआ गेल जीवन संतुष्ट।
संध्या आब लेने जाइत अछि तरेगनक सब अकथ कथा,
औंघी सहजहिं ओढ़ि लैत छल सौंसे श्रमकेर विकल व्यथा।

सकल कुतूहल आर कल्पना ओहि चरण बीच ओझरायल सन,
कुसुम खुशी सँ हँसैत पल जीवन धन्य-धन्य लागल सन।
मंद हास पूर्णेन्दु वसंतक छल हरसिंगार कानन फूलल,
गति मरंद-मन्थर मलयज सन वेणु कहाँ ओ संभव छल।

साँस पवन पर चढ़ल जेना दूरागत वंशी ध्वनि सन,
गूंजि गेल तोँ, विश्व कुहरमे दिव्य रागिनी भऽ नभ सन।
जीवन जलनिधि तल सँ जे मोती छल निकरि पड़ल,
जय मंगल संगीत तोहर ओ गाबि-गाबि रोमांच उठल।

आशाकेर आलोक किरण सँ किछु मानस सँ लऽ हमरा,
लघु जलधरकेर सृजन भेल छल घेरने शशि आभा जकरा।
ओहि पर बिजुरीकेर माल सन झूमि उठल तोँ प्रभा भरल,
आर जलद ओ रिमझिम बरखा हरिअर-हरिअर भूतल छल।

हँसि-हँसि तोँ हमरा बुझेलह विश्व खेल सन खेलि चलू,
तोँ हमरा मिलि इहो बताओल मिलिजुलि सबहक संग चलू।
इहो अपन विद्युत विभ्रम सँ लागल किछु संकेत देल,
मन अपने अछि, जखने चाहल एकरा दान तुरत कऽ देल।

तोँ अजस्र बरखा सुहागकेर आर स्नेहकेर मधु रजनी,
सतत अतृप्त प्राण यदि रहलै तोँ बनलह संतोषक अवनी।
कतबा छै उपकार तोहर आश्रित हमर प्रणय ई भेल,
कतबा छी आभारी हम, एतबा संवेद्य हृदय भऽ गेल।

किन्तु अधम हम जानि सकल नहि ओहि मंगल माया कें,
आर आइयो पकड़ि रहल छी हर्ष-शोक लागल छाया कें।
उपादान सँ क्रोध मोहकेर सब किछु तत्व गठित कयलहुँ,
एहने सन अनुभव होइत अछि किरण ज्ञान ओ नहि छूलहुँ।

शापित सन हम जीवनकेर कंकाल लेने ई भटकि रहल,
ओही शून्यतामे तकबालय जेना कि हम छी अटकि रहल।
अंध तमस छै किन्तु प्रकृतिकेर आकर्षण खींचय लग-पास,
सब पर, अपनहुँ पर हम सेहो खौंझायल बौआयल साँस।

पावि सकल हम नहि ओ जे तोँ चाहै छह देअबा लय,
क्षुद्र पात्र! तोँ ओहिमे लागल छऽ मधु धारा ढरबा लय।
बहरा जाइत अछि सब किछु स्वगत ने ओ हम कऽ सकलहुँ,
बुद्धि तर्कमे छिद्र भेल छल-हृदय अपन नहि भरि सकलहुँ।

ई कुमार हमर जीवनकेर उच्च अंश, कल्याण भरल,
कतेक पैघ प्रलोभन हम्मर हृदय स्नेह बनि जतय ढ़रल।
सुखी रहय, सब सुखी रहय बस छोड़ि हमर सन अपराधी कें,
श्रद्धा मनक भाव पढ़ै चुप देखै मनु-मन आन्ही कें।

दिन बीतल रजनी ओ आयल तंद्रा-निद्रा संग लेने,
इड़ा, कुमार समीप ठाढ़ भय मनकेर दबल उमंग धेने।
श्रद्धा सेहो खिन्न थाकल कहि गेडुआ हाथ बनौने सन,
पड़ल-पड़ल सोचल मनु चुप्पे अभिशाप जेना पीबै मन।

सोचि रहल छल, जीवन सुख छै विकट पहेली सन नहि ई,
भागि चलल मनु! इन्द्रजाल सँ की की व्यथा ने भोगल ही।
ई प्रभातकेर स्वर्ण किरण सन झिलमिल चंचल सन छाया,
श्रद्धा कें हम कोना देखाबी ई मुँह वा कलुषित काया।

आर शत्रु सब ओ कृतघ्न फेर ओकर की विश्वास करी,
प्रतिहिंसा, प्रतिशोध दबेने मनमे की चुपचाप भरी।
संभव से नहि श्रद्धा कें रहने ई सब हम नहि कय पायब,
मिलत शांति जहि ठाँ हमरा हम तकबै ओत्तहि जायब।

जागल सब जखने प्रभातमे देखल मनु ओतय छलाह,
'बाबू कहाँ, 'कहि ताकि रहल ओ, छल कुमार उद्विग्न जकाँ।
इड़ा आइ अपना कें सब सँ बेसी दोषी मानि रहल,
कामायनी मौन सन बैसल अपनेमे ओझरायल छल।

卐

दर्शन

ओ चन्द्रहीन सन राति कोनो, जै मे सूतल छल स्वच्छ प्रात,
उज्जर-उज्जर तारा झिलमिल, प्रतिबिम्बित सरिता वक्षस्थल।
धारा प्रवाह छल विम्ब अटल, खुजलै धीरे सँ पवन पटल,
चुपचाप ठाढ़ छल वृक्ष पंक्ति, सुनि रहल जेना किछु गुप्त बात।

धूमिल छाया सभ घूमै छल, छल लहरि पयर कें चूमि रहल,
माँ तो चलि आयल दूर एम्हर, ई साँझ केहन चलि गेल ओम्हर।
एहि निर्जनमे की आर सुघर, की देखै छऽ तों बस चल घर,
ओहि सँ उठैत अछि गंध धूम, श्रद्धा ओहि मुँह कें चूमि रहल।

माँ तों किएक छऽ एतेक उदास, की हम नहि छी तोहर पास,
तों दिन कतेक सँ एना चुप रहि, की सोचै छह? हमरो तऽ कहऽ।
ई केहन तोहर दुख दुस्सह, जे रहि-रहि बढ़ा रहल छै दाह,
लऽ रहल शिथिल सन मंद साँस, लागल ओ भीतर सँ हताश।

ओ बाजल 'नील गगन अपार, जैमे लटकल घन सजल भार
अबइत जाइत, सुख दुख, दिशि पल, शिशु सन आबै छल खेलि अनिल।
फेर झिलमिल सुन्दर तारक दल नभ रजनीकेर खद्योत सटल,
ई विश्व केहन कतबा उदार, छै गेह हमर उन्मुक्त द्वार।

ओ लोचन गोचर सकल लोक, जीवनकेर कल्पित हर्ष-शोक,
भावोदधि से किरनक कहि मग, स्वाती कण सँ बनि पूरित जग।
उत्थान पतनमय सतत सजग, झरझर झरना आलिंगन नग,
ओझराहट प्रियगर रोक टोक, ई सब ओकरे छै नोंक-झोंक।

जग जागै केने आँखि लाल, सूतै ओढ़ने तम नींन जाल,
सुरधनु सन रंग बदलि अप्पन, मृति संसृति नति उन्नतिकेर क्षण।
अपने सुषमामे ई झिलमिल, खिलि खिलि झरैत एहि पर उडुदल,
आकाश सरोवरकेर मराल, कतबा सुन्दर कतबा विशाल।

एकरा तहमे छै मौन शांति, शीतल अगाध छै ताप भ्रांति,
परिवर्तनमय ई चिर मंगल, हँगि रहल भाव एहि बीच सकल।
हँसि रहल एतय ओ कोलाहल, उल्लास भरल सन अन्तस्तल,
आवास हमर अति मधुर कांति, ई नीड़ भरल छै सुखद शांति।'

'माते फेर किए, एतबा विराग, हमरा सँ नहि किए सानुराग,
पाछाँ मुड़ि श्रद्धा देखै छल, ओ इड़ा मलिन छवि रेखा छल।
राहुग्रस्त जहिना शशिकेर लेखा, जेहि पर विषादकेर विष रेखा,
किछु ग्रहण करै छल दीन त्याग, सूतल छै जकर भाग्य जागि।

बाजल, 'तोरा सँ की विरक्ति, तोँ तऽ जीवनकेर तमानुरक्ति,
हमरा सन बिछुड़ल केँ अवलंबन दऽ जीवित रखलह ई जीवन।
तोँ आशामयि! चिर आकर्षण, तोँ मादकताकेर लटकल घन,
मनुकेर ललाटकेर चिर अतृप्ति, तोँ उत्तेजित चंचला शक्ति।

हम की दय सकब तोहर मोल, ई हृदय आर दू मधुर बोल,
हम हँसि हँसि मनमे कानै छी, हम हेड़बै छी हम आनै छी।
एकरा सँ लऽ ओकरा देइ छी, हम दुख कें सुखमे लाबै छी,
अनुराग भरल हम मधुर घोल, चिर विस्मृति सन अछि रहल डोलि।

ई तेजमयी मुँहकें निहारि, मनु हत चेतन मन गेल हारि,
नारी माया-ममताकेर बल, ओ शक्तिमयी छाया शीतल।
फेर क्षमा करय के बनि निश्छल, जै सँ ई धन्य होइ भूतल,
तों क्षमा करहऽ–'एतबे विचार' हम छोड़ी कोना साधिकार।

चुप रही आब हम संभव नहि के निरपराध छै कहि जग एहि?
सुख-दुख जीवनमे सब सहैत, तैयो सुख कें अप्पन कहैत,
अधिकार ने सीमामे रहतै, पावस निर्झर सन ओ बहतै,
रोकत के ककर सपरता कहि, ओ कहलनि–शत्रु नींक ने कहि।

बढ़ि रहल एतय मतभेद सतत, कृत्रिम सीमा सब लागल क्षत,
श्रम भाग वर्ग बनि गेल जकर, अपनहि बलकेर छै गर्व तकर।
नियमन निर्माण स्पृहा जिनकर, विप्लव करैत अे वृष्टि तकर,
संघ पीबि रहल निज चाह मत्त, आब टूटल धैर्य हमर सब हत।

हम जनपद-कल्याणी प्रसिद्ध, अवनति कारण सम्प्रति निषिद्ध,
भऽ रहल विभाजन हमर विषम, टूटैत नित्य, बनि रहल नियम।
नाना भू-भागमे जलधर सम, बरसै घेरने पाथर निभ्रम,
ई ज्वाला एतबा छै समिद्ध, आहुति बस चाहै छै समृद्धि।

तऽ की हम छलौं भ्रममे नितान्त, संहार-बध्य असहाय क्लान्त,
प्राणी विनाश मुँहमे अविरल, चुपचाप चलै भऽ कऽ निर्बल।
संघर्षकर्मकेर मिथ्या बल, ई शक्ति चेन्ह, ई यज्ञ विफल,
भयकेर उपासना प्रणति भ्रांत, अनुशासनकेर छाया अशान्त।

तै पर छीनल हम ओ सोहाग, हे देवि! तोहर ई दिव्य राग,
हम आइ अकिंचन पाबि रहल, हम अपनहि नींक ने लागि रहल।
हम जे कोनो स्वर गाबि रहल, ओ स्वयं ने हम सुनि पाबि रहल,
क्षमा करह, ने बाँटह निज विराग, सूतल चेतनता उठय जागि।

छै रुद्ररोष एखनहुँ अशांत, श्रद्धा बाजल बनि विषम ध्वान्त,
तोँ माथ चढ़ल, पाओल ने हृदय तोँ व्यर्थ कऽ रहल छह अभिनय।
अपनत्व बोध चेतन सुखमय, हेड़ा गेल, नै आलोक उदय,
सब चललै निज पथ पर सुश्रांत, बनि गेल विभाजन सभक भ्रांत।

जीवन धारा सुन्दर प्रवाह, सत सतत प्रकाश सुखद अथाह,
तोँ तर्कमयी तोँ गनह लहरि, प्रतिबिम्बित तारा पकड़ि, ठहरि।
तोँ रुकि-रुकि देखह आठ पहर, ओ जड़ता छै ई भ्रम नहि कर,
सुख दुखकेर मधुमय रौद छाँह–तोँ छोड़ि देल से पथ प्रवाह।

चेतनताकेर भौतिक विभाग कय, बाटि देल जगमे विराग,
ब्रह्म-स्वरूप अछि नित्य जगत, रूप किन्तु बदलै शत शत।
कण विरह मिलनमय नृत्य निरत, उल्लासपूर्ण आनन्द सतत,
तल्लीनपूर्ण छै एक राग, झंकृत कयने बस 'जाग-जाग।'

हम लोक-अग्निमे तपि नितान्त, आहुति प्रसन्न बाँटी प्रशान्त,
तोँ क्षमा ने कर किछु चाहि रहल, तोँ दाह हृदयकेर हमर रहल।
तोँ लहक सम्पदा जे लगमे, हमरा लय हमर मार्ग जग छल,
रह सौम्य! एतहि, हो सुखद प्रान्त, विनमित करहक सब कर्म कान्त।

तोँ दुनू देखह राष्ट्र नीति, शासन करहक बाटह ने भीति,
हम ताकै लय चललहुँ मनु कें मरुथल सरिता अथवा वन कें।
ओ सोझ लोक निश्छल मनके! भेटता निश्चित फेर जीवन कें,
देखबै तखने की चलल रीति, मानव, हो तोहर सुयश गीति!

बालक बाजल, ममता ने तोड़ माँ! सुत सँ एना मुँह ने मोड़,
आज्ञाक तोहर करैत पालन, ओ स्नेह सतत करैत लालन–
हम मरी कि जीबी छूटै ने प्रन, वरदान बनय हमर जीवन,
पुनि जँ हमरा तोँ चललह एना छोड़ि, हमरा भेटय पुनि इएह क्रोड़।

हे सौम्य, इड़ाकेर शुचि दुलार, हरि लेतैक तोहर व्यथा भार,
ई तर्कमयी तोँ श्रद्धामय, तोँ मननशील कर्ता निर्भय।
तोरा सँ सबहक शोक हटय, हो भाग्योदय सब खेद मिटय,
हो सरसताक सौंसे प्रचार, मम पुत्र सुनह माँ केर पुकार।

अति मधुर वचन विश्वास मूल, हमरा ने जाइ बिसरि भूल,
हे देवि अहाँकेर स्नेह प्रबल, बनि दिव्य श्रेय उद्गम अविरल।
आकर्षण घन सन भेटल जे, मिटि जाइ शोक संताप सकल,
कहि इड़ा प्रणत लय चरण धूलि, धेलक कुमार कर मृदुल फूल।

ओ तीनू तत्क्षण भेल मौन, विस्मृत भए हम के कतय मौन,
विच्छेद बाह्य छल आलिंगन, ओ हृदयकेर अति मधुर मिलन।
मिलि जाइत आहत भए जलकण, लहरिक समान परिणत जीवन,
दुनू चललै पुर दीस मौन, सोचल एक्कहि प्रभाग मम मन।

निस्तब्ध गगन छल दिशा शांत, ओ छल असीम सन दृश्य कांत,
किछु शून्य बिन्दु उरकेर ऊपर, व्यथिता रजनीकेर श्रम सीकर।
झलकै कब सँ तैयो ने झरल, भरिगर छाया भू पर पसरल,
सरिता तट तरुकेर क्षितिज प्रांत, खाली पसारने दीन ध्वांत।

शतशत तारा मंडित अनंत–फूलक समूह खिललै वसंत,
हँसि रहल क्षितिज के विश्व मधुर, हल्लुक प्रकाश सँ पूरित उर।
माया प्रवाह सरिता ऊपर, उठि रहल किरण चंचल सुन्दर,
निचला भू पर पसरल दुरंत, आबै चुप-चुप घूरल तुरंत।

सरिता केर ओ एकान्त कूल, पवन हिड़ोला बैसि झूलि,
धीरे-धीरे लहरिक ओ दल, तट सँ लड़ैत मिटि कऽ ओहि पल।
छप-छपकेर सुन्दर शब्द विरल, थर-थर काँपै छल दीप्ति तरल,
जीवन अपनामे विस्मृत छल, ओ गंधहीन फूलक शतदल।

तखने सरस्वति सन फेंकि साँस, श्रद्धा देखल लग आस-पास,
चमकै छल दुनू खुजल नयन, ओ नग्न शिला बिनु गढ़ल रतन।
ई की अन्हारमे कए सन-सन? धाराकेर लागल निस्वन,
नै, गुहा लतावृत संग पास, क्यो जीवित लागल लैत साँस।

ओ निर्जन तट छल एक चित्र, कतबा भावन कतबा पवित्र?
किछु उन्नत छल ओ शैल शिखर, तैयो श्रद्धा लागै उँचगर।
तपलै-गगलै ओ लोक निकट, ढरलै स्वर्णक प्रतिमा सुन्दर,
मनु देखल ई कतबा विचित्र! ओ मातृमूर्ति छल विश्व मित्र।

बजला 'रमणी तोँ छह ने आह! जकरा मनमे हो प्रबल चाह,
सर्वस्व हेड़ने तोँ अप्पन, वंचिते! कानि पयलह ओ धन।
हम भागल जेहि सँ प्राण लेने, ओकरो देने छी हम तब मन,
निर्दय मन की नहि उठल आह, अद्‌भुत छै मनकेर ई प्रवाह।

ई श्वापद सन हिंसक अधीर, कोमल शावक ओ बाल वीर,
सुनि रहल छलै वाणी शीतल, कतबा दुलार, कतबा निर्मल?
छै केहन कठोर तोहर हृद्‌तल? ओ इड़ा केलक तैयो तऽ छल,
एतबो पर तोँ छऽ बनल धीर, छुटि गेल मुदा ओ आब तीर।'

'प्रिय एखनहुँ धरि एतबा सशंक, देने किछु क्यो नहि होइ रंक,
ई विनिमय छै वा परिवर्तन, बनि रहल आब ऋण तोहर धन।
अपराध तोहर छल ओ बंधन, तोँ मुक्त भेल, छोड़ह आब स्वजन,
निर्वासित तोँ, लागल किए डंक? दी ली प्रसन्न, इ स्पष्ट अंक।'

हे देवि! आह कतबा उदार, ई मातृमूर्ति छै निर्विकार,
हे सर्वमंगले तो महान्, दुख सभक सहैमे रहल ध्यान।
कल्याणमयी वाणी सुजान, तोँ क्षमाशील अवनी समान,
हम बिसरि गेल तोरा निहारि, नारी समान, ओ लघु विचार।

हम एहि निर्जन तटमे भऽ अधीर, सहि क्षुधा व्यथा दुखगर समीर,
हँ भावचक्रमे पिसि-पिसि कय, चलि आबि रहल आगू बढ़ि कय।
एकरे विकार सन हम बनि कय, बनि गेल शून्यवत सुख तजि कय,
लघुता नहि देखह वक्ष चीरि, जेहिमे अनुशय बनि धसल तीर।

प्रियतम ई नत निस्तब्ध राति, स्मरण कराबै विगत बात,
ओ प्रलय शांति ओ कोलाहल, अर्पित कयने जीवन संबल।
हम भेल रही तोहर निश्छल, की बिसरि जाइ एतबा दुर्बल,
तैं चलू ओतय हो शांति प्रात, हम नित्य अहिंक ई सत्य बात।

एहि देव द्वन्द्वकेर ओ प्रतीक-मानव! कऽ लहक चूक सब ठीक,
ई विष जे पसरल महा विषम, नित कर्मोन्नति सँ कयने सम।
सब मुक्त होइ, संगहि निभ्रम, हुनकर रहस्य हो शुभ संयम,
खसि जायत ओ जे छै अलीक, चलने मिटैत अछि पड़ल तीक।

ओ शून्य असत वा अंधकार, अवकाश पटलकेर आर-पार,
बाहर-भीतर उन्मुक्त सघन, छल महा अचल श्यामल अंजन।
भूमिका बनल ओ स्निग्ध मलिन, ओ निर्निमेष मनुकेर नयन,
एतेक अनन्त छल शून्य सार, किछु दृश्य ने छल तम आर-पार।

सत्ता केर स्पंदन चलल डोलि, आवरण पटलकेर ग्रन्थि खोलि,
तम जलनिधिकेर बनि मधु मंथन, ज्योत्सना सरितकेर आलिंगन।
ओ रजत गौर, उज्ज्वल जीवन, आलोक पुरुष मंगल चेतन,
खाली प्रकाशकेर छल कलोल, मधु किरनक धेने लहरि लोल।

बनि गेल तमस छल केश जाल, सर्वांग ज्योतिमय छल विशाल,
अन्तर्निनाद ध्वनि सँ पूरित, छल शून्य भेदिनी सत्ता चित्।
शिव स्वयं छलाह नृत्य निरत, आलोक मुग्ध छल सारस्वत,
स्वर लय बनि कऽ दैत ताल, भऽ रहल लुप्त छल दिशाकाल।

लीलाकेर स्पन्दित आह्लाद, ओ प्रभापुंज चितिमय प्रसाद,
आनन्दपूर्ण तांडव सुन्दर, श्रम बिन्दु धार टप-टप उज्जर।
बनलै तारा, हिमकर दिनकर, भरि गेल धूलिकण सँ भूधर,
संहार सृजन सँ युगल पाद, गतिशील अनाहत भेल नाद।

पसरल असंख्य ब्रह्मांड गोल, युग त्याग ग्रहण कय रहल तौलि,
विद्युत कटाक्ष चलि गेल जेम्हर, कंपित जीवन बनलैक ओम्हर।
चेतन सहस्र अणु छितिर-बितिर, रहि रहि विलीन ओ बनि क्षणभर,
झूलै छल विश्वक महा दोल, परिवर्तन पट कें रहल खोलि।

ओहि शक्ति शरीरक ओ प्रकाश, सब शाप-पापकेर कय विनाश-
नर्तनमे निरत, प्रकृति गलिकय, ओहि कांति सिन्धुमे घुलि मिलकय।
लेलक स्वरूप धरती सुन्दर, कमनीय बनल छल ओ निर्भय,
हीरक गिरि पर विद्युत विलास, उल्लसित महा हिम धवल हास।

मनु देखल ओ नर्तित नटेश, भय तन्मय ओ बजला विशेष,
'ई की! श्रद्धे! तों बस लऽ चल, ओहि चरण पाद धरि दय संबल।
सब पाप-पुण्य जेहिमे जरि गलि, पावन बनि जायत ओ निर्मल,
मिटि रहल झूठ सन ज्ञान लेश, समरस अखंड, आनन्द बेश।

卐

रहस्य

ऊर्ध्व देश ओहि नील तमसमे शांत भऽ रहल अचल हिमानी,
थाकि-हारि पथलीन चतुर्दिक देखि रहल ओ गिरि अभिमानी।
कतेक देर सँ चलल पथिक दू ऊँच आर ओ ऊँच चढ़ैत,
श्रद्धा आगाँ पाछा मनु भय साहस संग उत्साह बढ़ैत।

पवन वेग प्रतिकूल ओम्हर छल बाजल 'घूरह अरे बटोही',
कोम्हर चलल तोँ भेदने हमरा? कियै बनल प्राणक निर्मोही?
छुअबा लय नभ के चाहै छल भेल सतत ओ ऊँच जेना,
विक्षत ओकरे अंग, दृश्य छल भीषण खाधि गहीर जेना।

रविकर हिमखंड पड़य रहि रहि हिमकर कतबा नव निर्मित कहि,
घिरनी बनि नाचि पवन सद्यः घूरय ओत्तहि ओ रहि रहि।
नींचा जलधर भागय लागल सुर धनु सुन्दर माला पहिरल,
कुंजर शिशु सब खेलि रहल चमकै गहना चपला प्रतिपल।

प्रवहमान छल निम्न भागमे शीतल शत-शत झरना एहिना,
महाश्वेत गजराज गण्ड सँ पसरै मधु धारा जेहिना।
आच्छादित हरिअरी भूमि पर चित्र पटी सन लागि रहल,
प्रकृतिक बाह्य रेख सन घिरि, नद प्रतिपल भागि रहल।

लघुतम ओ सब जे वसुधा पर ऊपर महाशून्य घेरने,
आर ऊँच चढ़ल नहि संभव मन प्रकाश हुनकर धरने।
कतय लेने चललौं हमरा श्रद्धे! थाकल आब लगै छी हम,
धैर्य हमर छूटल लागै छै बलहीन निराश लगै छी हम।

घूरि चलह, एहि वातचक्र सँ हम अबल आब ने लड़ि पायब,
साँस रुद्ध कऽ रहल पवन हिम आब ने आरो अड़ि पायब।
हमर छलै ओ सब जिनका सँ रूसि एतय चलि आयल हम,
सब छूटि गेल नींचा सुदूर नहि बिसरि सकब ओहि सब के हम।

ओ विश्वास भरल स्मिति निश्छल श्रद्धा-मुँह पर झलकि उठल,
कर-पल्लव सेवा लय आकुल ललक हृदय ओकरा जागल।
अवलंब देने व्याकुल संगी कें कामायनि बाजल मधु स्वर,
हम बढ़ि दूर निकरि आयल, ने आब विनोदक बेर-पहर।

दिशा विकंपित, पल असीम छै, ई अनन्त सन किछु ऊपर,
भान भऽ रहल से कहिओ, की पदतलमे सत्ये भूतल?
निराधार सब, किन्तु विवश हम, आइ एतहि विश्राम हमर,
नियति खेल देखी नहि, सुनू आब नहि युक्ति इतर।

लागै छै तम दृगमे, कहि रहल उठय लय आर ऊँच,
एहि प्रतिकूल पवन झोंका सँ साहस कय लड़िओ मन खींचि।
श्रांत पक्ष, कर नेत्र बंद कय विहग युगल सन आइ रही,
शून्य, पवन बनि पंख हमर आधार दिअय उत्साह सही।

घबराइ नहि, ई समतल छै, देखू कहाँ हम आबि गेलौं,
मनु देखल निज आँखि खोलि कऽ लागल जेना किछु त्राण पेलौं।
ऊष्माकेर अभिनव अनुभव छल ग्रह तारा नक्षत्र अस्त सन,
दिवा रात्रिकेर संधि काल एहि शांत पड़ल सब क्यो एहि क्षण।

ऋतु सबकर क्रम भेल तिरोहित भू-मंडल रेखा विलीन सन,
निराधार ओहि महादेशमे उदित चेतना छल नवीन सन।
त्रिदिक् विश्व, संग प्रभा बिन्दु तीनू लागि रहल भिन्नहि,
त्रिभुवनकेर प्रतिनिधि भिन्न सन लागै सब ओ साकांक्षहि।

मनु पूछल, के सब ई नव ग्रह छै, श्रद्धे हमरा कहिऔ?
कोन लोकमे आबि पहुँचलहुँ, एहि इन्द्रजाल सँ मुक्ति दिऔ,
एहि त्रिकोणकेर मध्य बिन्दु तोँ शक्ति विपुल क्षमता धारी ई,
एक-एक केँ थिर भए देखू इच्छा, ज्ञान, क्रिया धारी ई।

देखिऔ ओ जे रागारुण छै, ऊषाकेर कंदुक सन सुन्दर,
छायामय कमनीय आवरण, भावमयी प्रतिभाकेर मंदिर।
शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंधकेर पारदर्शिनी पलक सुघर,
चारू कात नृत्य करै छै रूप-रंग तितली सन प्रियगर।

एहि कुसुमाकरक कानन वनकेर अरुण पराग पटल छायामे,
नाचै, गाबै, सूतै, जागै भाव भरल ई निज मायामे।
ओ संगीतमयी ध्वनि एहिकेर मृदुल अंगेठी मोड़ लेने,
मादकताकेर लहरि उठा कऽ निज अंबर केँ तर कयने।

आलिंगन सन मधुर प्रेरणा छूबि बनै छै जे प्रिय कंपन,
लजबिज्जी संकोच खुजल कहि बंद होय छूने तत्क्षण।
ई जीवनकेर मध्य भूमि छै रस धारा सँ सिंचित होयत,
मधुर लालसाकेर लहरी सँ ई प्रवाहिका कंपित होयत।

जकर कूल पर विद्युतकण सन मनोहारिणी आकृति धयने
छायामय सुषमामे विह्वल मस्त मनोहर विचरण कयने।
सुमन संकुचित भूमि रन्ध्र सँ मधुर गंध रस उठल सरल,
बनल भाफ फुहार अनदेखल रसक बिन्दु बनि सूक्ष्म तरल।

घूमि रहल छै एतय चतुर्दिक चलचित्र सन जीवन-छाया,
जेहि आलोक बिन्दु केँ घेरने ओ बैसल हँसमुख माया।
भाव चक्र ई चला रहल छै इच्छाकेर रथ नाभि घुमैत,
नव रस भरल अरा काष्ठ सटि चक्रवाल केँ चकित करैत।

एतय मनोमय विश्व कऽ रहल राग-भाव चेतन पूजन,
माया राज्य! इएह परिपाटी पाश बिछा कऽ जीवक बंधन।
ई अशरीरी रूप, सुमन सन खाली वर्ण गंधमे फूलल,
एहि अप्सरा सभक तान झूमि रहल लागय झूलल।

भाव-भूमिका अही लोककेर जननी छै सब पुण्य-पापकेर,
सब ढ़ैरत, स्वभाव प्रतिकृति बनि गलि आगि सन मधुर तापकेर।
ओझराहटि लतिकाकेर नियमन भाव-विटप सँ आबि मिलब,
जीवन वनकेर बनल समस्या आशा नभ बहु कुसुम खिलब।

चिर वसंतकेर ई उद्गम छै, पतझड़ लागल दोसर कात,
अमृत-हलाहल एतय मिलल छै सुख-दुख बान्हल एक्कहि हाथ।
सुन्दर ई अहाँ देखाओल मुदा कोन ओ श्याम देश छै,
कामायनी! बाजू ओहिमे की रहस्य साटल विशेष छै।

'मनु ई श्यामल कर्म लोक छै किछु धूमिल किछु अन्हार सन,
सघन भऽ रहल अविज्ञात ई देश मलिन छै धूम धार सन।
कर्मचक्र सन घूमि रहल ई गोलक बनि कऽ नियति प्रेरणा,
सबहक पाछाँ लागल छै ई कोनो व्याकुल नवल एषणा।

श्रममय कोलाहल, पीड़ामय विकल प्रवर्तन महामंत्रकेर,
एक्को क्षण विश्राम कहाँ छै प्राण दास छै क्रिया तंत्रकेर।
भाव राज्यकेर सकल मनस्थिति सुख दुखमे कहि बदलि रहल,
हिंसा गर्वोन्नत मालामे दंभित अणु सब घूमि रहल।

ई भौतिक संदेह केने किछु जीवित एतय रहय चाहत,
भाव राष्ट्रकेर दंड विधान सँ निर्मित पीड़ित सब आहत।
कर्म करै छै तोष ने तैयो कशाघातकेर भय प्रेरित सन,
प्रतिक्षण भए रत डरल-डरल विवश लगै कंपित सन।

नियति चलाबय कर्म चक्र ई तृष्णाजन्य ममत्व वासना,
हाथ-पयर धय पंचभूतकेर एतय चलि रहल छै उपासना।
एतय सतत संघर्ष विफलता कोलाहलकेर राज्य एतय,
छै अन्हारमे दौड़ा-दौड़ी मतवाला संसार एतय।

स्थूल भऽ रहल रूप बनौने कर्मक भीषण परिणति छै,
अभिलाषाकेर तीव्र पिपासा ममताकेर ई निर्मम गति छै।
एतय शासनादेश घोषणा, विजयक जे हुंकार सुनाबय,
एतय क्षुधा सँ विकल दलित कें पयरक नींचा ओ गिरबाबय।

कर्म केर दायित्व हाथ धय उन्नति लय सब क्यो पागल,
जरि-जरि कऽ फोका फूटल सब बहल जा रहल ओ लागल।
एतय राशिकृत विपुल विभव सब मरीचिका सन लागल ओ,
भाग्य बनि क्षणिक भोग लय भऽ विलीन पुनि जागल हो।

तैघ लालसा एतय सुयशकेर कर्म-दोष स्वीकार केने,
अन्ध प्रेरणा सँ परिचालित कर्तामे गणना निज केने।
प्राण तत्वकेर सघन साधना जल, हिम, पाथर एतय बनै छै
भऽ अतृप्त जरि-जरि मानव ई पुनः जीव जंगम बनैत छै।

एतय नील लोहित ज्वाला किछु गला धातु ओ नित ढ़ारत,
चोट खाय ई रुकै कहाँ अछि, एकरा मृत्यु भला की मारत।
वर्षाकेर घननाद करै छै तीर तट संभाग सहज गिराओत,
प्लावित कयने वन कुंज कें लक्ष्य पावि सरिता बहि जायत।

'बस! आब नहि आर देखाबह ई अति भीषण कर्म जगत,
श्रद्धे उज्ज्वल केहन कहू ई पुंजीभूत जेना कि रजत।
प्रियतम! ई ज्ञान क्षेत्र अछि सुख-दुख सँ छै उदासीनता,
एतय न्याय निर्मम चलैत अछि बुद्धिचक्र जैमे ने दीनता।

अस्ति नास्तिकेर भेद निरंकुश ई करैत अणु तर्क युक्ति सँ,
ई निर्लिप्त, किन्तु करैत किछु जोड़ि लेत संबंध मुक्ति सँ।
एतय प्राप्य टा भेटब संभव तृप्ति ने केने भेद बटैत,
बुद्धि, विभूति सकल बालू सन तृषा भेल ओ शीत चटैत।

न्याय तपस ऐश्वर्य भरल ई प्राणी सब आलोकित लागय,
ग्रीष्मकालकेर मरुमे तट पर स्रोत सुखायल सन जागय।
मनोभाव ई काय-कर्मकेर सम-तोलनमे दत्तचित्त सँ,
ई निः स्पृह न्यायासन जिनकर चूकि सकत ओ कहाँ वित्त सँ।

अप्पन परिमित पत्र लेने ई बून-बून संचयमे लागल,
माँगि रहल जीवन रस बैसल जेना देह अमरत्व समायल।
एहन विभाजन धर्म तुलाकेर अधिकारक व्याख्यान करैत,
ई निरीह, बस किछुओ भेटने संतोषक ओ साँस भरैत।

उत्तमता हिनकर निजस्व छै अंबुज सन सर शीर्ष कहल,
जीवन मधु संचयमे लागल मधु सँ मधुकर संलिप्त बनल।
एतय शरदकेर धवल ज्योत्सना तममे निकसल आर खिलल,
ई अनवस्था, युगल मिलन सन सतत विकलता मध्य रहल।

देखू ओ सब सौम्य बनल छथि किन्तु सशंकित दोष-पाप सँ,
ई संकेत दंभवश मानू भ्रू चालन परितोष आप सँ।
एतय अछूत रहल जीवनरस बिनु छूने संचित होबय दय,
बस एतबे धरि तोहर भाग्य छै तृषा मृषा वंचित होबय दय।

सामंजस्य करय ई निकसल किन्तु विषमता बाटि रहल,
मूल तत्व किछु आर कहै छै अंतस् इच्छा झूठ बनल।
अपने व्यस्त किन्तु शांत बनि शस्त्र-शास्त्र रक्षा मे डूमल,
ई विज्ञान भरल अनुशासन क्षण-क्षण जे परिवर्तन देखल।

इएह त्रिपुर तोँ देखल जे अछि तीन बिन्दु ज्योतिर्मय एतबा,
अपने केन्द्र बनल सुख-दुखमे भिन्न भेल छै ई सब कतबा।
ज्ञान दूर किछु, क्रिया भिन्न सन किएक साध पूरय मनकेर,
एक दोसर सँ भेंट ने संभव ई विडंबना अछि जीवनकेर।

महाज्योति रेखा सन बनि कऽ श्रद्धाकेर स्मिति दौड़ल ओहिमे,
ओ सम्बद्ध भेल फेर सहसा जागि गेल छल ज्वाला जेहि मे।
नींचा ऊपर लचलच केने ओ विषय वायुमे धधकय लागल,
महाशून्यमे ज्वाल स्वर्णमय, सबकेँ कहने 'नै-नै' जागल।

शक्ति तरंग प्रलय पावककेर ओहि त्रिकोणमे धपधप उठलै,
शृंग आर डमरू निनाद बस सकल विश्वमे पसरय लगलै।
चितिमय चिता धधकलै अविरल महाकालकेर विषम नृत्य छल,
विश्व रंध्र ज्वाला सँ भरिकय जे अपनामे विषम कृत्य छल।

स्वप्न, सुषुप्ति, जागरण भस्म हो इच्छा क्रियाज्ञान मिलि लय सन,
दिव्य अनाहत ओहि निनादमे श्रद्धा-मनु रहला तन्मय सन।

卐

आनन्द

चलय रहय धीरे-धीरे ओ एकटा यात्री दल लागल,
सरिताकेर रम्य पुलिनमे गिरि पथ सँ लय निज संबल।
छल सोमलता सँ आवृत वृष धवल धर्मकेर प्रतिनिधि,
घंटी बजैत छल सुर धेने गर्दनिमे मंथर गतिविधि।

वृष रज्जु बाम केरमे छल दक्षिणमे त्रिशूल शोभित,
मानव छल संग जकर मुँहें पर छल तेज सुरम्य अपरिमित।
केहरि किशोर सँ अभिनव अवयव प्रस्फुटित भेल छल,
यौवन गंभीर बनल छल जैमे किछु भाव नवीन भरल सन।

संग बड़द के इड़ा सेहो गतिमान छली ओ शांत बनल,
गैरिक वसना संध्या सन गुमसुम कलरव जेहिकेर छल।
उल्लास छलै युवासबमे शिशुगणकेर छल मृदु कलकल,
महिला दल मंगल गान करैत मुखरित छल ओ यात्री दल।

चमर पीठ पर बोझ लदल-चलि रहल मिलल ओ अविरल,
किछुए ओहि पर बैसल शिशु स्वयं बनल छल कौतूहल।
माय-वृंद सब धिया-पुता धय गप्प करै छल मिलि प्रियगर,
'कतय चलि रहल छी हम' विधिवत कहैत कथा सुन्दर।

'कहिया सँ तों एतबे कहैत छऽ' शिशु एकटा छल बाजल,
पहुँचि गेलौं बस आगाँ देखह ओ समतल लग आयल।
तेंवो तऽ बढ़ि रहल पयर ई-रुकबाकेर नहि नाम कतौ अछि,
कहह तोहर ओ तीर्थ कहाँ छै जै लय हम सब भागि रहल छी।

'ओ अग्रिम सपाट भू जेहि पर छै देवदारुकेर कानन,
मेघ अपन बाटी भरैत अछि जकर पात सँ हिमकण।
बस एही ढलान कें जखनहि उतरि चलब हम सब निश्रम,
पुनः रहत ओ तीर्थ समक्षहिं अति उज्ज्वल पावनतम।

इड़ाकेर लग पहुँचि ओ बाजल ओकरा सँ रुकबा लय,
बच्चा छल मचलि गेल किछु आर कथा सुनबा लय।
ओ अपलक लोचन कें धेने पयर जेना ओ थीर करैत,
पथ प्रदर्शिका सन चलैत रुकि-रुकि ओ छल डेग भरैत।

बजली, 'हम जतय चलल छी ओ धरती अति पावन,
साधना भूमि ककरो छै ई शीतल शांत तपोवन।
'केहन? किए छै शांत भूमि ई सविस्तर किए ने कहलह'
बालक बाजल इड़ा सँ ओ कहली किछु संकोच छलह।

'सुनल कहै छी कोनो मनस्वी आएल छल कहियो ओहि लोक,
ओ जगतीकेर ताप सँ आकुल विकल बनल धयने छल शोक।
ओकर दाह भयावह एहने पसरि गेल जे ओहि गिरि मे,
दावानलक प्रखर लपटि सँ काँपि गेल घनगर वन से।

ओकरे छल पत्नी ओ नारी जे ओकरा खोजने छल आयल,
ई देखि दशा, करुणा-वर्षा निज दृगमे भरि आयल।
वरदान बनलफेर अश्रु ओकर ओ करइत जगकेर मंगल,
ताप सकल शमित भेल बनि गेल हरित वन सुख शीतल।

झरना गिरिकेर निर्झर चंचल हरिअरी पुनः परिवेश बनल,
सूखल तरुमे उल्लास नवल पल्लवमे ललगर रंग भरल।
ओ युगल आब ओत्तहि बैसल जीवन सेवामे भेल निरत,
तोष आर सुख बाँटि सभक दुख शांत शोक हरत।

ओत्तहि छै महासर निर्मल जे मनक तृषा कें शांत करय,
मानस ओकरा कहल गेल छै सुख पाबए जे लग पहुँचय।
'तखन किए एहि बड़द के खाली एहिना चला रहल छी?
किऐ ने एहि पर बैसि रहै छी-अपना कें थका रहल छी?

सारस्वत नगरक हम बासी आयल छी यात्रा हेतु एतय,
एहि व्यर्थ रिक्त जीवन घट कें पीयूष सलिल सँ एतय भरय।
एहि वृषभ धर्म प्रतिनिधि कें उत्सर्ग करब हम सब जाकऽ,
चिर मुक्त रहय ई निर्भय स्वछंद सतत सुख सब धय।

सब सम्हरल आगाँ छल ढलान निच्चा मुँह जे छल लागल,
जै समतल घाटीमे छल सब हरिअरी मनोहर ई साटल।
श्रम, ताप आर पथ पीड़ा सब क्षणभरिमे लागल हेड़ा गेल,
सम्मुख विराट धवल गिरि छल अपने आभा सँ दीप्त भेल।

पर्वतकेर निचला तल सुन्दर श्यामल तृण धेने लता मगन,
नव कुंज, गुहा गृह अनुपम सर छल पूरि रहल शोभा भावन।
काननकेर मञ्जरि अरुण-पीत सुषमा बाँटैमे सुप्रवीण,
प्रतिवर्ष सुमन सम्पूर्ण भरल सब डारिमे होइत जे विलीन।

यात्री दल रुकलै, देखलक मानसकेर ओ दृश्य विलक्षण,
खग मृग लय अति सुखदायक छोट दिव्य सन जग प्रकरण।
पन्नाकेर बेदीपर जहिना राखल हो हीराकेर पानी,
लघु सन मुकुर प्रकृतिकेर अथवा सूतल पूनम रानी।

चलि गेल मिहिर गिरि के पाछाँ चढ़ल आब हिमकर नभ,
कैलास प्रदोषक आभा बनि थिर बैसि गेल लागल सब प्रभ।
संध्या लग आयल छल सर कें मंडित सन ओ बल्कल वसना,
तारक अलक सुशोभित छल डड़कस कदंबकेर छल गहना।

खग कुल किलकारी मे लागल कलहंस भरै छल शब्द मधुर,
किन्नरी धेने प्रतिध्वनि मोहक नवतान भरै छल कंठ मदिर।
मनु ध्यानमग्न आसीन ततए निर्मल मानसकेर तटमे,
अजुरी भरने पुष्प ठाढ़ छल श्रद्धा मनुक निकटमे।

श्रद्धा सुमन खसाओल शत-शत भेल मधुप प्रिय गुंजन,
भरि गेल मनोहर नभमे मनु तन्मय बैसल किछु उन्मन।
चीन्हि गेलह सब क्यो ई सब कोना कहू ओ रुकै वला,
ओ देव द्वन्द्व द्युतिमय छल कहि कहाँ प्रणति ई झुकैवला।

सोमलता लदने वृष तावत घंटी ध्वनि करिते बढ़लै,
इड़ाक पाछाँ मानव संगहि डेग उठौने सब चललै।
हँ, आइ इड़ा बिसरल छल तैयो क्षमा ने चाहै छल,
इएह दृश्य देखबा लय निज दृग कें अपने देखै भल।

चिर मिश्रित प्रकृति सँ पुलाकित ओ चेतन पुरुष पुरातन,
निज शक्ति तरंगित छल सुन्दर आनन्द-अंबु निधि शोभन।
भरि लेल अंक श्रद्धाकेर मानव ओकरा अपनेने कहि,
छल इड़ा शीश पद पर; हर्षित आँखि भरल स्वर एहि।

ओ बजली हम धन्य भेलहुँ जे एतय बिसरि चलि आएल,
हे देवी! अहींक ममता मानू हमरा खींचि एतय लऽ लाएल।
भगवति! बोध भेल हमरा नहि ज्ञान हमर कोनो छल,
हम सब कें बिसरए लगलहुँ एतबे हिस्सक हम्मर छल।

हम एकटा परिवार बना कऽ यात्रा करबा लय छी आयल,
सुनि कऽ ई छै पैघ तपोवन जैमे सबटा पाप हेड़ाएल।
मनु बजला कछु मंद हासमे-देखिऔक ओ कैलास,
कहल पुनः 'अपन-आनकेर एतए धरू विश्वास।

आन ने क्यो हम छी कुटुंबवत एकमात्र हम एक बनल,
लोकवेद सब अवयव हम्मर नहि अशेष किछु एतय कहल।
एतय ने क्यो शापित, पापी छै एतए ने क्यो संतप्त सनक,
जीवन वसुधा ई समतल छै समरसता सुविचार सभक।

चेतन समुद्रमे जीवन ई बनल लहरि सन पसरल छै,
किछु छाप व्यक्तिगत ओ धेने आकार अपन लागल छै।
एहि इजोतकेर जलनिधिमे बुद्बुद् सन रूप बनौने,
देखा रहल मिश्रित तारा सब सुन्दर आभा निज चमकौने।

तहिना अभेद सागरमे प्राणक सृष्टि-क्रम लागल ई क्रम छै,
सबमे घुलि मिलि होयत रसमय भाव प्रबोध चरम छै।
अपनहि सुख-दुख सँ पुलकित ओ मूर्त विश्व चराचर,
एहि ब्रह्मक विराट काया छै मंगलयुत चिर सत्य सुघर।

सबहक सेवा नहि विषय आन ओ अपने सुख संसृति छै,
अपने अणु-अणु कण-कण द्वयता ई भाव कहल विस्मृत छै।
हम छी एकरे धरि चेतनता सबमे प्रभाव ई बाँटि रहल,
सब भिन्न परिस्थिति कें पीने मादक घोंट कें पीबि रहल।

उठि जाय भोर होइतहि प्राणी सूतल निशीथकेर पल धेने,
देखै सुन्दर ओ स्वप्न प्रियक ओझरायल कथा जेना लेने।
चेतनकेर साक्ष्य बनल मानव भय निर्विकार सुख पाबय,
मानसकेर मधुर मिलनमे क्रमशः ओ अंतसमे आबय।

सब भेद भाव बिसरने ओ सुख-दुखमे भऽ निर्विकार,
हे मानव कह! 'ई हम छी' ओ विश्व नीड़ सन बनि अपार।
श्रद्धाकेर मधु अधरक छल छोट-छोट सन ओ रेखा,
रागारुण किरण कला सन अंकित विकसित स्मिति लेखा।

ओ कामायनी जगतकेर कल्याणकारिणी एकमात्र
आलोकित छल मानस प्रसन्न तटकेर ओ बनि बेलि-पात।
ओ विश्व चेतना पुलकित छल पूर्ण कामकेर ओ प्रतिमा,
जहिना भरिगर महासर हो भरने वारि विमल महिमा।

जेहि मुरलीकेर मधु ध्वनि सँ ई शून्य रागमय छै होयत,
जखनहि कामायनी हास करै अग-जग मुखरित होयत।
पल भरमे विश्व कमल अणु-अणु रूप आर सुन्दर धेने,
पीअर पराग चंचल बनि कऽ आनन्दामृत रस बिन्दु लेने।

अति सुन्दर गंधग्राही समीर बहलै पराग कण संग लेने,
सुख स्पर्श कमल केसर आवृत रजकण संगहि मारुत धेने।
जहिना असंख्य कलिका कें ओ विकसित कऽ आयल छल,
ओ चूमि लेल अधराधर सब जे अगनित मधुरायल छल।

रहि-रहि चमकैत रहल जहिना लागल किछुओ छै बिसरि रहल,
नव कनक कुसुम रज सानल मकरंद जलद सन घुमड़ि रहल।
लागल वन लक्ष्मी हो पसारने कुंकुम रजकण अेहिठाँ,
किंवा हेमकूट हिमजलमे परछाहीं झलकल ओहिठाँ।

सृष्टिक मन मोहन मिलनकेर उच्छ्वास बनौने ओ निज दल,
चलि पड़ल गगन आँगनमे ओ किछु गबैत नूतन मंगल।
वल्लरी नृत्यमे निरत छलै पसरल सुगन्धिकेर मृदु लहरी,
फेर वेणु रंध्र सँ उठल मूर्छना बिसरि गेल ओ हम ठहरी।

गूंजै छल सुमधुर नूपुर स्वर मदमस्त भेल सौंसे मधुकर,
वाणीकेर वीणा ध्वनि लेने भरल शून्यमे ओ रसगर।
उन्मद वसंत, मलयानिलकेर भागल जेन। गिरैत-पड़ैत,
पुष्प गंध सँ नहा काकली चललै वर्षा पुष्प करैत।

लपटायल सन वसन केसरी विश्व सुन्दरीकेर तन पर,
अथवा मादक मृदुयुत कंपन पसरि गेल सम्पूर्ण सृजन पर।
सुख सहचर दु:ख विदूषक परिहास भरल अभिनव केने,
विस्मृति पटमे सभक छलै जे भागल भय निश्चिंत केने।

छल डारि-डारि मधुमयी भेल मृदु मुकुल बनल झालर सन,
रसभार प्रफुल्लित सुमन वृष्टि मकरंद विन्दु घटरज सन।
हिमखंड रश्मि मंडित पूरित मणि दीप प्रकाश देखाओल,
जैमे समीर सटि कऽ अति मधुर मृदंग बजाओल।

उठि रहल मधुर संगीत राग बाजल वंशी ध्वनि जीवनकेर,
संकेत कामना बता रहल आकुलता केहन मिलनकेर।
सब किरन अप्सरा सन नर्तन-अंतरिक्षमे छल लागल,
सुरभित पराग कण-कण धेने रचि रहल रंगशाला झल-झल।

मांसलता धेने आइ भेल छल हिमवती प्रकृति पाषाणी,
ओहि लास-रासमे विह्वल सन हँसि रहल जेना कल्याणी।
ओ चन्द्र किरीट रजत नग स्पन्दित सन पुरुष पुरातन,
देखै छल मान सरोवर गौरी लहरिक कोमल नर्तन।

प्रतिफलित भेल सबहक लोचन ओ प्रेमज्योति विमला सँ,
सब परिचित सन लागै छल अपने सन विश्व कला सँ।
समरस समान जड़ वा चेतन सुन्दर साकार बनल छल,
पसरि गेल चेतनता सौंसे आनन्द अखंड सघन मल।

卐

॥ इतिश्री ॥

विजयनाथ झा

मैथिली आ हिन्दी कविताक सशक्त हस्ताक्षर
आत्मज–पं. रतिनाथ झा, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राच्य दर्शन विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी।
वृत्ति–पत्रकारिता आ स्वतंत्र लेखन।
सेवा विवरण –पूर्व आर्यावर्तक सम्पादकीय विभाग आ कतिपय अन्य अखबार मे

–कृति–

मैथिली प्रभाग

1. अहींक लेल (गीत गजल संग्रह)।
2. कन्दर्प कानन (महाकाव्य)
3. मैथिली श्रृंगार शतक (प्रकाश्य)

अनूदित काज : कृष्ण जन्म, कीचक वध, रमेश्वरचरित मैथिली रामायण बाल काण्डक अनुवाद, यात्रीजीक चित्रानुवाद, पटना रेडियो लेल चन्दाझाक रेडियो नाटक लेखन, ऋतु-चक्र (विविध ऋतुक काव्य दर्शन, प्रकाश्य) आदि।

हिन्दी प्रभाग

1. आईनों के बीच (गीत गजल संग्रह),
2. सरसी से सागर (कविता संग्रह)
3. आत्मबोध (अध्यात्म दर्शन)
4. शब्द साधना (प्रकाश्य) बहुआयामी गजल संग्रह।
5. शिव भक्ति की निगूढ़ साधना (भक्ति गीतांजलि, प्रकाश्य)।

सम्मान–1. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्सँ 2009–10मे (अहींक लेल) मादे सम्मान।
2. भारतीय साहित्य संसद, समस्तीपुर द्वारा 2011 आ 2013 मे पोद्दार राम अवतार तरुण आ दुष्यंत कुमार सम्मान।
3. साहित्य सेवा लेल 2014मे बिहार गोल्ड स्टार एवार्ड।
4. उत्कृष्ट लेखनक मादे मैथिली पुनर्जागरण प्रकाशसँ 2018मे सम्मान।
5. प्रसार भारती, दिल्ली द्वारा सर्व भाषा कवि सम्मेलन (मैथिली लेल) 2020मे सम्मान प्रतीक आदि आदि।